ई-अभिव्यक्ति (हिन्दी) – दीपावली अंक – 2025

अंक – 4

ई-अभिव्यक्ति संपादक मण्डल

हेमन्त बावनकर, प्रधान संपादक

विवेक रंजन श्रीवास्तव, संपादक हिन्दी

कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, संपादक अँग्रेजी

डॉ. राधिका पवार बावनकर,संपादिका
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति

e-abhivyakti

www.e-abhivyakti.com

व्यक्ति विशेष – श्री संदीप राशिनकर

(चित्रकार और लेखक)

जन्म - 7 मई 1958 , इंदौर

शिक्षा - बी.ई.(सिविल)

जाने माने चित्रकार , लेखक और समीक्षक।

कई अखिल भारतीय कला प्रदर्शनियों में चित्रों का चयन और प्रदर्शन | लंदन ,मुंबई , गोवा ,इंदौर , नीमच आदि शहरों में एकल चित्र प्रदर्शनियों का आयोजन।

राष्ट्रीय स्तर की पत्र - पत्रिकाओं में हजारों चित्रों / रेखांकनों का प्रकाशन। भारतीय ज्ञानपीठ सहित अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशनों की पुस्तकों के सैकड़ों आवरण।

भित्ति चित्रों (म्यूरल्स) के क्षेत्र में अनेक स्थानों / प्रतिष्ठानों पर भव्य म्यूरल्स का सृजन एवं अभिनव प्रयोगों से इस शैली में प्रतिष्ठित कार्य।

स्वयं द्वारा नव अविष्कृत शैली ब्रास/ स्टील वेंचर में सृजित अनेक कलाकृतियाँ देश -विदेश के कला प्रेमियों के संग्रह में संग्रहित | "केनवास पर शब्द " और जीवन संगिनी श्रीति के साथ संयुक्त काव्य कृति "कुछ मेरी कुछ तुम्हारी " प्रकाशित होकर देश भर में चर्चित व पुरस्कृत। कविताओं के अलावा निरंतर कला -संस्कृति विषयों और समीक्षाओं का लेखन / प्रकाशन।

"जीवन गौरव " के अलावा देश भर में कई प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित।

संपर्क:-: ११-बी , मेन रोड , राजेंद्रनगर , इंदौर -४५२०१२ (म.प्र.)

मो. ९४२५३ १४४२२ / ८०८५३ ५९७७० email :rashinkar_sandip@yahoo.com

Web Site. http://www.sandiprashinkar.com

व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे

(चित्रकार, लेखिका आणि कवयित्री)

शैक्षणिक अर्हता : M.Com, CAIIB, Ph.D.(from Irvine (USA) Sub: “Art History of Rangavali & Dry Frescos of Rangavali as Neo-Antiques”.)

Proprietor : TAO ARTS, Pune **Creative Director :** TAO Communications, Pune

संस्थापक : भारती माटे फाईन आर्ट्स अँड रिसर्च सेंटर, पुणे. आर्ट वेलफेअर, पुणे.

भारती माटे जी के व्यक्तित्व के दो पहलू हैं जिन्हें अद्वितीय कहा जा सकता है... एक यह है कि उनके समकालीनों में कुछ ही कलाकार हैं जिन्हें वास्तव में "आत्मशिक्षित " कलाकार कहा जा सकता है और दुसरी बात यह है कि वे एक "चित्रकार कवि" हैं।

उनकी रचनात्मक प्रतिभा, कविता और चित्रकला दोनों क्षेत्रों में अद्वितीय है और उन्हें इन दोनों क्षेत्रों में कई पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी अनोखी और खूबसूरत रंगोली पेंटिंग बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

मो. : +91 9890722120 Email : bharati.taoarts@gmail.com

Web Site : www.bharatimate.com Blog : https://bharatimate-painter.blogspot.com/

संपादकीय

प्रिय पाठको,

समय के साथ ही घडी की सूइयां आगे बढती रहती हैं और साथ ही एक-एक दिन पीछे छूटता चला जाता है. फिर पता ही नहीं चलता और पूरे एक वर्ष पश्चात पुनः दीपावली पर्व हमारे द्वार पर आकर अपनी उपस्थिति दे देता है.

'दीपावली' शब्द सुनते ही बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी के मन में उत्साह की लहर दौड़ जाती है। नेत्रों के समक्ष दीप मालाएँ झिलमिलाने लगती हैं, सुखद वातावरण उमंग से भर उठता है। नए वस्त्रों के रंग मन को मोह लेते हैं, और स्नायु में व्यंजन की मनमोहक सुगंध भर जाती है। सच में, दीपावली का त्योहार कुछ क्षणों के लिए ही सही, दुखों को भुलाकर आनंद में बह जाने का पर्व है—समृद्धि और सकारात्मकता को आत्मसात करने का पर्व।

अमावस्या की रात्रि को असंख्य दीपों से जगमगाने वाला यह उत्सव, हम सभी को एक-दूसरे से मिलने-जुलने का अवसर प्रदान करता है। ऐसे उल्लासपूर्ण वातावरण में भी भाईदूज और पाडवा जैसे दिन हमें रिश्तों की गहराई और बंधनों की याद दिलाते हैं। वे हमें वास्तविकता का बोध कराते हैं।

परंपरा और आधुनिकता का संगम साधते हुए जब हम आगे बढ़ते हैं, तब यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे पारिवारिक जीवन के साथ-साथ हमारा सामाजिक दायित्व भी हमारे साथ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की शिक्षा देने वाली संतों की भूमि में हम जन्मे हैं, यह भावना सदा जीवित रहना चाहिए। लोकतांत्रिक देश में राजनीति और समाजसेवा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। सामाजिक माध्यमों का उपयोग सजगता और जिम्मेदारी के साथ करना, सामाजिक स्वास्थ्य को बिगड़ने से बचाना — यह हमारा कर्तव्य है। तभी हर दीपावली मन से और सच्चे आनंद के साथ मनाई जा सकेगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विज्ञान और तकनीक — ये सब मानवीय विकास के साधन हैं, विनाश के नहीं। इस चेतना का सदा ध्यान रहना आवश्यक है।

प्राकृतिक आपदाओं से जूझने वालों की सहायता करना, आतंकवाद का एकजुट विरोध करना, अफवाहें न फैलाना, सामाजिक शांति बनाए रखना — ये सभी बातें हमारी जीवनशैली का हिस्सा रहनी चाहिए।

जीवन के सुख-दुःख का मिश्रित यथार्थ हमें यही सिखाता है कि यदि चेतना जाग्रत रहे, तो भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा।

आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यशृंखला ।

यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पंगुवत् ॥

— यह एक सुंदर सूक्ति है। मनुष्य आशा पर ही जीता है। स्वप्न देखना और उन्हें पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहना मनुष्य का स्वभाव है। यही प्रयत्नशीलता हमारे जीवन में प्राण भरती है। परंतु स्वप्न केवल अपने लिए नहीं, समाज और राष्ट्र की समृद्धि के लिए भी देखने चाहिए — यह भावना दीपावली के इस शुभ अवसर पर हर किसी के हृदय में जागृत रहनी चाहिए।

हमारी संस्कृति के गौरवपूर्ण वैभव को सँजोने और बढ़ाने में दीपावली अंक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जैसे दीपावली के पकवानों के बिना हमारी दीपावली अधूरी है, वैसे ही दीपावली अंक के बौद्धिक आहार भी अधूरा है।

इस वर्ष गुरुवर डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र', प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' और प्रिय मित्र जय प्रकाश पाण्डेय जैसे वरिष्ठ साहित्यकार, विचारक और लेखक हाल ही में हमारे बीच से चले गए हैं। 'ई-अभिव्यक्ति' परिवार की ओर से उन्हें सादर और विनम्र श्रद्धांजलि! 💐 🙏

इस वर्ष का 'ई-अभिव्यक्ति' दीपावली अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। अपनी रचनाएँ भेजकर इस अंक को समृद्ध करने वाले सभी लेखकों और आकर्षक मुखपृष्ठ देने वाली डॉ. भारती माटे जी एवं लेखक/चित्रकार श्री संदीप राशिनकर जी का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

'ई-अभिव्यक्ति परिवार' की ओर से आप सभी को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ।

… 🪔 🪔 🪔 🪔 🪔

आपका ही

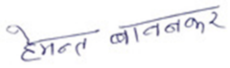

प्रधान संपादक

आप अपनी प्रतिक्रियाएँ निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित कर सकते हैं 💐 🙏

adm.eabhivyakti@gmail.com, apniabhivyakti@gmail.com, psraghuvanshi@gmail.com

अनुक्रमणिका

व्यक्ति विशेष – श्री संदीप राशिनकर 2

व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे 2

कविता - छूते ही हो गयी देह कंचन पाषाणों की - आचार्य भगवत दुबे 8

कहानी - दुलहन का बाप - डॉ कुंदन सिंह परिहार 9

कहानी- चौराहे का दीया - श्री कमलेश भारतीय 14

कहानी – तीन गद्य क्षणिकाएं – श्री रामदेव धुरंधर 15

कविता - रामकथा – स्व. प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' 16

लेख - वैश्विक संदर्भ में विजयादशमी – श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 17

कविता - दीपावली – श्री राजेश कुमार सिंह ‘श्रेयस’ 20

कविता - रोशनी का पर्व – सुश्री छाया सक्सेना ‘प्रभु’ 22

व्यंग्य - लक्ष्मी तेरे रूप अनेक – श्री प्रभाशंकर उपाध्याय 23

कहानी - कौन अपना कौन पराया – सुश्री नमिता सिंह 'आराधना' 25

लेख - प्रकाश - विनोद कुमार जैन “चेतन” 27

कहानी - जिंदा इतिहास – डॉ हंसा दीप 29

कविता – नहीं बजा करती अब साँकल… – श्री राघवेन्द्र तिवारी 34

कविता - चलो एक दीप जलाएं… – श्री सुरेश तन्मय 35

व्यंग्य - श्रद्वेय उल्लू जी – श्री वीरेन्द्र ‘सरल‘ 36

लेख - हिंदू उत्सव शिरोमणि दीपावली - श्री सुरेश पटवा 39

कहानी – दीपपर्व – पाँच लघुकथाएँ… – श्री संजय भारद्वाज 41

लेख - मनन, अनुसरण, अनुभव – डॉ मुक्ता 45

लेख - सीताहरण के अंतरभेद प्रो. (डा) राजेश श्रीवास्तव 47

व्यंग्य - 'एनजीओ' का नेटवर्क – श्री आशीष दशोत्तर 50

कविता - ।।मुक्तक।। दीपावली ।। रोशनी का अलौकिक पर्व ।। - श्री एस के कपूर 51

लेख - तब और अब – श्री प्रदीप शर्मा 52

लेख - दीपोत्सव : महत्व तथा सरोकार - श्री प्रखर दीक्षित 54

कविता – दीप भरोसे का – सुश्री सीमा देवेन्द्र 57

कविता – संवेदना – सुश्री मनवीन कौर पाहवा 58

संस्मरण – लंबे सफेद बादलों की भूमि में दीपावली – श्री जगत सिंह बिष्ट 59

व्यंग्य - दिवाली का दिवालियापन – डॉ मुकेश असीमित 61

कहानी – चंदोवा - लेखक: योगेश जोषी - भावानुवाद डॉ. रजनीकान्त एस. शाह 63

कविता – सीता की व्यथा.. – श्री राजेंद्र तिवारी 69

कहानी – लघुकथा - सवाल - डॉ. अखिलेश पालरिया 70

कविता – ॥गीत॥ - किसे अपनी व्यथा सुनाएँ - डॉ. रामेश्वरम तिवारी 71

कविता – दिवाली - श्री गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द' 72

लेख - शिवसागर- अद्भुत असम की सांस्कृतिक विरासत - डॉक्टर मीना श्रीवास्तव 73

कहानी – यात्रा - श्री सदानंद आंबेकर 75

लेख - रामलीला मंचन का इतिहास और उसका वैश्विक परिप्रेक्ष्य – श्री सुरेश चौधरी ‘इंदु’ 76

कविता - एक बुंदेली पूर्णिका - नेह प्रेम की जोत जरइये - श्रीमती तरुणा खरे 'तनु' 79

व्यंग्य – यदा यदा हि धर्मस्य... - श्री शारदा दयाल श्रीवास्तव 80

लेख – नए भारत की बदलती तस्वीर – श्री प्रियदर्शी खैरा 82

लेख - मौजी – मातृत्व का अमर कश्मीरी लोकगीत डॉ. नवनीत धगट 85

कविता - विष्णु - प्रिया के पर्व पर मंगलकामनाएं – श्री प्रतुल श्रीवास्तव 89

कहानी - और जुन्हाई शर्मा गई – डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी 90

कहानी – दिवारी – डॉ. सत्येंद्र सिंह 95

कहानी – अनन्या का दीप – कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, एन एम् 96

व्यंग्य - सब अपने में मस्त हैं - डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' 98

लेख - तमसो मा ज्योतिर्गमय - सुश्री सिद्धेश्वरी सराफ़ ‘शीलू’ 100

व्यंग्य – जहाँ फुटपाथ, वहीं बाज़ार; जहाँ बाज़ार, वहीं जीवन, वहीं सभ्यता – श्री शांतिलाल जैन 103

कविता - चलो एक दीपक जलाएं – श्री श्याम खापर्डे 105

कहानी – मुक्ति – श्री घनश्याम अग्रवाल 106

कविता – मिट्टी वाले दिये जलाओ… – श्री संतोष नेमा “संतोष” 107

कविता - जीवन धूप- छांव… – श्री शेर सिंह 108

व्यंग्य - परसाई जन्मशती में एक व्यंग्यकार की टांग का टूटना - श्री रमाकांत ताम्रकार 109

लेख - हाथी की मूर्ति: वास्तु और वैज्ञानिक महत्व - डॉ. अनिल कुमार वर्मा 110

कहानी – बाल-लघुकथा - सच्ची पूजा - श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' 112

कविता – बाल गीत - दीवाली पर दीप जलाएँ – डॉ राकेश ‘चक्र’ 113

कहानी – लघुकथा - "हैप्पी दिवाली" - डॉ. भावना शुक्ल 114

कहानी - दादी की मार्केटिंग – सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा 115

लेख - धनतेरस कब, क्यों और कैसे?… – श्री संजीव वर्मा ‘सलिल’ 119

लेख - दीये की सौंदर्यशाला में दीवाली – सुश्री इन्दिरा किसलय 121

कविता - दीपावली पर दोहे – श्री मनोज शुक्ल ‘मनोज’ 123

कविता – दीवाली सुश्री मीना भट्ट ‘सिद्धार्थ’ 124

कहानी - रिश्ते की तलाश – (भावानुवाद-डॉ. सुशीला दुबे) - सौ. उज्ज्वला केळकर 125

कहानी - पड़ोसी – मूल लेखिका गिरिमा घारेखान – भावानुवाद श्री राजेन्द्र निगम.................................. 130

कविता - चराग़ रखा है साथ जलाते रहना – श्री हेमंत तारे... 136

कविता - जब जलाया दीप मैंने – श्री अरुण कुमार दुबे 137

लेख - बेलपत्र का महत्व और पूजा विधि - ज्योतिषाचार्य पं अनिल कुमार पाण्डेय 138

कहानी – लघुकथा - दिया बाती और तेल - श्री हेमन्त बावनकर... 142

लेख - कौन सी दीपावली ? - श्री राकेश कुमार... 143

कहानी - हौसला – सुश्री उमा मिश्रा 'प्रीति'.. 144

(इस अंक के विभिन्न लेखों में व्यक्त विचारों और राय से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

कविता - छूते ही हो गयी देह कंचन पाषाणों की - आचार्य भगवत दुबे

छूते ही हो गयी देह कंचन पाषाणों की
है कृतज्ञ धड़कनें हमारे पुलकित प्राणों की

खंजन नयनों के नूपुर जब तुमने खनकाए
तभी मदन के सुप्त पखेरू ने पर फैलाए
कामनाओं में होड़ लगी फिर उच्चफ उड़ानों की
है कृतज्ञ धड़कनें हमारे पुलकित प्राणों की

यौवन की फिर उमड़ घुमड़ कर बरसीं घनी घटा
संकोचों के सभी आवरण हमने दिए हटा
स्वोत: सरकनें लगी यवनिका मदन मचानों की
है कृतज्ञ धड़कनें हमारे पुलकित प्राणों की

अधरों से अंगों पर तुमने अगणित छंद लिखे
गीत एक-दो नहीं केलिके कई प्रबन्धन लिखे
हुई निनादित मूक ॠचाएँ प्रणय-पुरोणों की
है कृतज्ञ धड़कनें हमारे पुलकित प्राणों की

कभी मत्स्यगंधा ने पायी थी सुरभित काया
रोमंचक अध्याय वही फिर तुमने दुहराया
परिमलवती हुईं कलियाँ उजड़े उद्यानों की
है कृतज्ञ धड़कनें हमारे पुलकित प्राणों की

आचार्य भगवत दुबे, 82, पी एन्ड टी कॉलोनी, जसूजा सिटी, पोस्ट गढ़ा, जबलपुर, मध्य प्रदेश

कहानी - दुलहन का बाप - डॉ कुंदन सिंह परिहार

मदन और त्रिवेणी का खून एक है, लेकिन तबियत में फर्क है। मदन बड़ा है और त्रिवेणी छोटा। दोनों भाई अधेड़ हुए, बेटे बेटियां जवान हो गये। गांव में दोनों के मकान आजू-बाजू हैं। दोनों दर्जी का काम करते हैं।

वैसे दोनों भाई सीधे-सादे हैं, लेकिन मदन अपने बेटों के सिखाने-पढ़ाने से कुछ दुनियादार हो गया है। त्रिवेणी बिल्कुल फक्कड़ है। शाम तक दूकान में किसी तरह बैठता है, फिर उसका मन फड़फड़ाने लगता है। कभी इधर भजन- कीर्तन में जा बैठेगा, कभी उधर। उसका मन न काम में लगता है न कमाई में। जितना मिल गया उतना बहुत है। उसके बेटे भी उसी जैसे संतोषी और महत्वाकांक्षाहीन हैं।

दोनों भाइयों की बेटियां सयानी, विवाह योग्य है। शादी की बात चलती रहती है लेकिन अभी कुछ जमा नहीं है। दोनों भाइयों को ज़्यादा चिन्ता नहीं है। मदन निश्चिन्त है क्योंकि उसके पास साधन हैं, त्रिवेणी निश्चिन्त है क्योंकि उसे चिन्ता करने की आदत नहीं है। बड़ी चिन्ताओं को भगवान पर छोड़कर वह भजन-कीर्तन में मगन रहता है।

दोनों भाइयों का बहनोई चुन्नीलाल लखनऊ में रहता है। जब तब ससुराल का चक्कर लगता रहता है। शौकीन आदमी है। बालों में पटिये निकालने और मूंछ की नोक संवारने में काफी समय देता है। बिना सेंट छिड़के कमरे से बाहर कदम नहीं रखता। काया दुबली-पतली है, इसलिए जब लहराता हुआ चलता है तो लगता है मूंछों के भार से गिर जाएगा। ससुराल में उसने अपने लिए कई अड्डे बना लिये हैं, इसलिए लखनऊ में थोड़ा सा मन उचटते ही ससुराल का रुख करता है।

चुन्नीलाल सालों से कहता है, 'लड़कियों की शादी कोई प्रॉब्लम नहीं है। रोकड़ा तैयार रखो। शादी का जिम्मा हमारा।'

चुन्नीलाल चन्ट आदमी है। दस तरह के धंधे करता है, इसलिए उसका परिचय-संसार काफी फैला है। उसके दावे झूठ नहीं होते।

जल्दी ही उसने झांसी में दो लड़कों की जानकारी दी। दोनों सगे भाई थे। लड़के धंधे से लगे थे। चुन्नीलाल ने सूचना दी कि जल्दी शादी पक्की की जाए, देर करने से लड़के हाथ से निकल जाएंगे। फिर हमसे न कहना।

दोनों भाई चुन्नीलाल को साथ लेकर झांसी गए और शादी पक्की कर आये। तीन महीने बाद की तारीख निकली। लड़के देखने के बाद चुन्नीलाल ने सालों को बताया, 'लेन-देन की कोई बात नहीं है, लेकिन शादी अच्छी होनी चाहिए। जरूरत की सब चीज-बस्त होना चाहिए। कुछ लड़कियों का भाग्य है और कुछ मेरा रसूख, नहीं तो ऐसे लड़के लाख रुपया देने पर भी नहीं मिलते।'

दोनों भाई संतुष्ट होकर घर लौटे। मदन के लिए कोई समस्या नहीं थी। शर्त के अनुसार अच्छी शादी करने की सामर्थ्य उसमें थी। त्रिवेणी के लिए लाख पचास-हजार का इन्तज़ाम भी मुश्किल था, लेकिन भविष्य की बात को लेकर अभी से परेशान क्यों हुआ जाए? जैसे अभी तक मामला सुलझा है शायद उसी तरह आगे भी कोई चमत्कार हो जाए। वह सिर झटक कर भविष्य की आशंका को परे कर देता है।

शादी पक्की करने के बाद चुन्नीलाल और भी ठप्पे से, आंखों पर काला चश्मा चढ़ाये, दोनों आखिरी उंगलियों के बीच फंसी सिगरेट पर सुट्टे लगाता, ससुराल के गांव में घूमता है। गांव में उसकी इज्जत काफी बढ़ गयी है। जमाई राजा ने खूब शादी जमायी। गांव के लोग उसकी तारीफ करते हैं तो चुन्नीलाल निहाल होकर काले दांत चमका देता है।

मदन के घर शादी की तैयारियां शुरू हो गयीं। नाते-रिश्ते वालों को सूचना जानी शुरू हो गयी। कपड़ों-लत्तों का इन्तज़ाम शुरू हो गया। उधर त्रिवेणी रूपयों के जुगाड़ में रिश्तेदारों और परिचितों के चक्कर लगा रहा था। मदन से कोई उम्मीद नहीं थी क्योंकि उसके बेटे कुछ ज़्यादा चौकस और चतुर थे। रिश्तेदार भी उसे सिलबिल्ला समझते थे। जानते थे कि उसे पैसे देने का मतलब 'नेकी कर, दरया में डाल' जैसा था। पैसा लौटने की कोई संभावना नहीं थी।

त्रिवेणी दौड़-भाग करके थक जाता तो घर आकर दोनों हाथों की उंगलियों को फंसा कर सिर को टेका देकर अधलेटा हो जाता और देर तक शून्य में ताकता रहता। फिर सिर झटक कर कहीं लोगों के बीच बैठने या मन्दिर की तरफ चल देता। पत्नी चिन्तित स्वर में पूछती तो कहता, 'सब इन्तजाम हो जाएगा। फिकर मत करो।' लेकिन उसके दिलासा देने से पत्नी को चैन नहीं आता। पैसे के अभाव में सारे इन्तजाम रुके पड़े थे। पैसा आये तो गाड़ी कुछ गति पकड़े।

पत्नी के पास अपने जतन से जोड़े हुए पचास साठ हजार रुपये थे। वे पति से छिपाये हुए थे क्योंकि त्रिवेणी को जानकारी हो जाती तो वे भी किसी न किसी खर्च की भेंट हो जाते। इन पैसों से उसकी पत्नी ने कुछ गल्ला और ज़रूरी कपड़े-लत्ते खरीदे, लेकिन ब्याह के महायज्ञ में इतनी सी आहुति से क्या बनने वाला था?

शादी का दिन पास आ रहा था। मदन के घर में उत्साह, खुशी और उत्सव की गहमागहमी थी। त्रिवेणी के घर में घबराहट, परेशानी और किंकर्तव्यविमूढ़ता थी। उसकी पत्नी की नींद हराम थी और बेटी अपने भविष्य के प्रति चिन्तित एक कोने में बैठी रहती थी। उसके भाइयों की समझ में भी नहीं आता था कि वे क्या करें। वे अपने बूते कुछ करने लायक नहीं थे। उधर गांव वाले दिन भर सवाल पूछ पूछ कर और नसीहतें दे देकर उनका जीना मुश्किल किये हुए थे।

चुन्नीलाल भी त्रिवेणी की तैयारी की स्थिति देखकर परेशान था। बार-बार कहता, 'उठो, कुछ करो। ऐसे हाथ पर हाथ धरे रहने से कैसे चलेगा? लगता है मेरी नाक कटवाओगे।' लेकिन त्रिवेणी को आगे बढ़ने के लिए कोई राह नहीं दिखती थी। वह बहनोई के उलाहने सुनता अपनी परिचित मुद्रा में पलंग पर लेटा शून्य में ताकता रहता।

शादी का दिन आने के साथ-साथ मदन के घर की तैयारियां तेज़ हो गयीं। घर में दरवाज़े पर बन्दनवार और सामने आठ दस कुर्सियां दिखायी पड़ने लगीं। घर के भीतर से ढोलक की धमक और स्त्रियों के कंठ से गाये गीत सुनायी देने लगे। घर के लोग व्यस्तता से आते जाते, इन्तज़ाम करते दिखते थे। बगल में त्रिवेणी के घर में सन्नाटा और गाढ़ा होता जाता था।

मदन को शामियाना, कुर्सियां जुटाने में कोई परेशानी नहीं हुई। आजकल गांव में सब कुछ मुहैया हो जाता है। शहर जाने की ज़रूरत ख़त्म हो गयी है। वैश्वीकरण और उदारीकरण का असर साफ-साफ देखना हो तो भारत के गांवों को देखिए। गांवों में उद्यमशीलता का खासा विस्फोट हुआ है। गांव के लड़के टीवी भी आराम से सुधार लेते हैं।

जब बारात आने के तीन-चार दिन रह गये तब गांव के कुछ सयाने और सम्मानित लोग मदन के घर पहुंचे। उसे समझाया, 'कुछ भाई के बारे में भी सोचो। उसके घर में कुछ नहीं हो रहा है। पैसों का इंतजाम नहीं है। कुछ उसकी मदद करो।'

मदन कुछ बोल पाता उससे पहले उसके बड़े बेटे ने जवाब दिया, 'हम क्या करें? उनकी जिम्मेदारी है, वे पूरी करें। आखिर हम अपनी लड़की की जिम्मेदारी पूरी कर रहे हैं या नहीं?'

सयानों ने कहा, 'वह सब ठीक है, लेकिन त्रिवेणी के स्वभाव को तो तुम जानते हो। तुम नहीं सोचोगे तो कौन सोचेगा? बारात आने पर फजीहत हो इससे क्या फायदा? त्रिवेणी की बदनामी के साथ तुम्हारी बदनामी भी जुड़ी है।'

लड़का हाथ हिला कर बोला, 'हमारी कोई बदनामी नहीं है। कक्का ने जिन्दगी भर कुछ नहीं किया तो उनके पीछे हम अपना घर थोड़इ लुटा देंगे। जैसा किया है वैसा भोगें।'

सयाने लौट गये।

नियत दिन पर बारात गांव में पहुंच गयी। तय यह था कि पहले दिन मदन के घर टीका होगा, दूसरे दिन त्रिवेणी के घर, और तीसरे दिन दोनों वधुओं के साथ बारात लौट जाएगी। यह भी तय था कि बारात के स्वागत-सत्कार में जो साझा खर्च होगा वह मदन और त्रिवेणी बातचीत करके बांट लेंगे। लेकिन पिछले दस पन्द्रह दिन से त्रिवेणी इन सब बातों का फैसला करने से बच रहा था। मदन के बेटे उसे बैठकर बातचीत करने के लिए कहते और वह हर बार कोई बहाना बनाकर टाल देता।

बारात के पहुंचने के साथ त्रिवेणी अपने घर से ग़ायब हो गया। बड़ी देर तक ढूंढ-खोज चली, फिर लोग समझ गये कि समस्या का कोई हल न पाकर वह पलायन कर गया। घर में मातम छा गया। शादी का घर देखते ही देखते श्मशान जैसा मनहूस हो गया।

घबराये हुए त्रिवेणी के बेटों ने मदन को सूचित किया। मदन और उसके बेटे जानकारी पाकर खास विचलित नहीं दिखे। वे पूर्ववत बारात के स्वागत के इन्तज़ाम में व्यस्त रहे।

मदन का बड़ा बेटा बोला, 'हमें पता था कि यह होगा। हमें पहले ही लग रहा था कि वे सारी जिम्मेदारी हमारे सिर पर पटक कर गायब हो जाएंगे।'

त्रिवेणी का बेटा कातर स्वर में बोला, 'हम क्या करें?'

जवाब मिला, 'उनको ढूंढो। और क्या करोगे? हमसे अपना काम ही नहीं संभल रहा है। तुम्हें क्या बतायें।'

गांव के लोग भी चिन्तित होकर मदन के दरवाज़े पहुंचे। कहा, 'भाई, कुछ करो। बारात बिना लड़की को ब्याहे लौट जाएगी तो क्या होगा? लड़की का क्या कसूर है? न हो तो अपने घर से दोनों की शादी निपटा दो। तुम लड़की के चाचा हो। तुम नहीं करोगे तो कौन करेगा?'

मदन के बेटों ने अपने हाथ उठा दिये, कहा, 'हम मूरख नहीं हैं। हम जानते हैं कि कक्का इसीलिए भागे हैं कि सारी जिम्मेदारी हमारे ऊपर आ जाए। हम कुछ नहीं करने वाले।'

गांव वाले परेशान होकर बोले, 'तो क्या बारात ऐसे ही लौट जाएगी?'

मदन का बड़ा बेटा बोला, 'लौट जाए तो लौट जाए। हमसे क्या पूछते हैं? बारातियों से पूछिए।'

गांव वालों ने पूछा, 'तुम्हें इस बात का रंज नहीं होगा?'

मदन का बेटा बोला, 'धेला भर नहीं। जो जैसा करेगा वैसा भोगेगा।'

गांव वालों के बीच जो नौजवान थे वे उत्तेजित हुए। कहा, 'तुम्हें शर्म नहीं लगेगी? तुम कैसे भाई-चाचा हो?'

मदन का बेटा तमक कर बोला, 'तुम्हें बड़ी तकलीफ हो रही है तो तुम अपने सिर पर पगड़ी बांध लो। निपटा दो शादी। हमसे क्या ऐंठ रहे हो? हमने क्या सारे रिश्तेदारों का ठेका ले रखा है?'

नौजवान बोले, 'ठीक है। तुम बैठे रहो, अब शादी हम करेंगे।'

और गांव ने निर्णय ले लिया। सामान और पैसा इकट्ठा करने का काम शुरू हो गया। गांवों में क्रय-शक्ति शहरों जैसी नहीं है, लेकिन अभी भावुकता और सह-अस्तित्व की भावना बाकी है। गाड़ी धीरे-धीरे चल पड़ी। दो-तीन सयाने बारातियों के पास गये और उन्हें समझाया कि शादी की तैयारियों में कोई कमी नहीं है। वे किसी अफवाह से भ्रमित न हों।

इसके बाद तीन-चार सयाने त्रिवेणी के दरवाज़े पर कुर्सी डालकर बैठ गये और फिर पूरा गांव त्रिवेणी के घर टूट पड़ा। फटाफट शामियाना लगा, कुर्सियां इकट्ठी हुईं और बर्तनों की टन-टन सुनायी पड़ने लगी। गांव की स्त्रियां इकट्ठी हुईं और ढोलक पर थाप पड़ने लगी। स्त्री- कंठों से निकले मधुर गीतों ने वायुमंडल में तारी विषाद को ढकेलना शुरू किया। घर में पड़े निराश, निढाल जिस्म जैसे संजीवनी पाकर सीधे होने लगे।

अब तक चुन्नीलाल परेशान घूमता था क्योंकि उसे अपनी इज़्ज़त डूबती दिख रही थी। अब गांव वालों का रुख देखकर वह भी खुश होकर इन्तज़ाम में सक्रिय हो गया।

सबसे ज़्यादा राहत दी गांव के किराना-व्यापारी गोवर्धन ने। उन्होंने अपनी बेटी की शादी की तैयारी बड़े मन से करीब डेढ़ साल पहले की थी, लेकिन शादी के दो माह पहले तीन दिन के बुखार के बाद बेटी उन्हें

छोड़कर परलोक चली गयी। गोवर्धन सहेज कर रखे उसके कपड़े-ज़ेवरों को त्रिवेणी के घर में छोड़ गये। कह गये, 'लो इन्हें संभाल लो। मैं आज हल्का हो गया।'

फिर सारा काम तेज़ी से चल पड़ा। मदन और उसके बेटे ठगे से उनके बगल में हो रहे इस इन्तज़ाम को देखते थे। अब वे बगल में व्यस्त गांव वालों से बड़े मीठे स्वर में बात करते थे, लेकिन उनकी बात सुनने की फुरसत किसी को नहीं थी।

पहले दिन मदन की बेटी की शादी हुई। वह ठीक-ठाक निपट गयी। दूसरे दिन त्रिवेणी की बेटी की शादी के लिए पूरा गांव इकट्ठा हो गया। छोटे से घर में खड़े होने की जगह ढूंढ पाना मुश्किल हो गया। हर काम के लिए पचास हाथ बढ़ते थे। इस घटना ने गांव वालों के मन में बैठी स्वार्थ की पर्तों को छांट दिया। परमार्थ और स्नेह उबलकर ऊपर आ गया। अपने-पराये का भेद मिट गया। सबका मन निर्मल हो गया। वधू की मां और भाई इस भीड़ में गुम हो गये।

रात भर सारा गांव इस स्नेह-सरिता में गोते लगाता रहा। सबेरे विदा हुई। बाराती कार लेकर आये थे। उसी पर दोनों बहुओं को बैठा कर बारात के डेरे तक ले गये। कार के पीछे स्त्री पुरुषों का विशाल समूह था। जब तक बेटी दृष्टि से ओझल न हो जाए तब तक ज़िम्मेदारी ख़त्म नहीं होती।

अचानक भीड़ से शोर उठा--- 'मिल गया! मिल गया!' फिर प्रश्न उठे, 'कौन है? कौन मिल गया?' जवाब मिला, 'त्रिवेणी। त्रिवेणी मिल गया।'

सब ने देखा, दो-तीन लोग त्रिवेणी के गले में हाथ डाले उसे जल्दी-जल्दी चलाते हुए ला रहे हैं। उसका हुलिया अस्तव्यस्त था। पता चला दो दिन से ऊपर पहाड़ी पर बनी पुरानी गढ़ी में छिपा था। आज जब मन नहीं माना तो खुद ही बाहर आ गया।

लोगों ने आगे ढकेल कर बाप को बेटी के पास पहुंचा दिया। अब भगोड़ा बाप बेटी को कंधे से चिपका कर रो रहा था और गांव वाले आंसू पोंछते हुए हंस रहे थे। बाराती असमंजस में यह दृश्य देख रहे थे।

थोड़ी देर में बारात अपनी गाड़ियों में बैठकर विदा हो गयी और गांव वाले त्रिवेणी को साथ लिये, उससे ठिठोली करते, लौट पड़े।

डॉ. कुन्दन सिंह परिहार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

कहानी- चौराहे का दीया - श्री कमलेश भारतीय

दंगों से भरा अखबार मेरे हाथ में है पर नज़रें खबरों से कहीं दूर अतीत में खोई हुई हैं।

इधर मुंह से लार टपकती उधर दादी मां के आदेश जान खाए रहते। दीवाली के दिन सुबह से घर में लाए गये मिठाई के डिब्बे और फलों के टोकरे मानों हमें चिढ़ा रहे होते। शाम तक उनकी महक हमें तड़पा डालती। पर दादी मां हमारा उत्साह सोख डालतीं, यह कहते हुए कि पूजा से पहले कुछ नहीं मिलेगा। चाहे रोओ, चाहे हंसो।

हम जीभ पर ताले लगाए पूजा का इंतजार करते पर पूजा खत्म होते ही दादी मां एक थाली में मिट्टी के कई दीयों में सरसों का तेल डालकर जब हमें समझाने लगती – यह दीया मंदिर में जलाना है, यह दीया गुरुद्वारे में और एक दीया चौराहे पर, , , , ,

और हम ऊब जाते। ठीक है, ठीक है कहकर जाने की जल्दबाजी मचाने लगते। हमें लौट कर आने वाले फल, मिठाइयां लुभा-ललचा रहे होते। तिस पर दादी मां की व्याख्याएं खत्म होने का नाम न लेतीं। वे किसी जिद्दी, प्रश्न सनकी अध्यापिका की तरह हमसे प्रश्न पर प्रश्न करतीं कहने लगतीं – सिर्फ दीये जलाने से क्या होगा? समझ में भी आया कुछ?

हम नालायक बच्चों की तरह हार मान लेते। और आग्रह करते – दादी मां। आप ही बताइए।

–ये दीये इसलिए जलाए जाते हैं ताकि मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे से एक सी रोशनी, एक सा ज्ञान हासिल कर सको। सभी धर्मों में विश्वास रखो।

–और चौराहे का दीया किसलिए, दादी मां?

हम खीज कर पूछ लेते। उस दीये को जलाना हमें बेकार का सिरदर्द लगता। जरा सी हवा के झोंके से ही तो बुझ जाएगा। कोई ठोकर मार कर तोड़ डालेगा।

दादी मां जरा विचलित न होतीं। मुस्कुराती हुई समझाती

–मेरे प्यारे बच्चो। चौराहे का दीया सबसे ज्यादा जरूरी है। इससे भटकने वाले मुसाफिरों को मंजिल मिल सकती है। मंदिर गुरुद्वारे को जोड़ने वाली एक ही ज्योति की पहचान भी।

तब हमे बच्चे थे और उन अर्थों को ग्रहण करने में असमर्थ। मगर आज हमें उसी चौराहे के दीये की खोजकर रहे हैं, जो हमें इस घोर अंधकार में भी रास्ता दिखा दे।

श्री कमलेश भारतीय, पूर्व उपाध्यक्ष हरियाणा ग्रंथ अकादमी, 1034-बी, अर्बन एस्टेट-।।, हिसार-125005 (हरियाणा) मो. 94160-47075

कहानी – तीन गद्य क्षणिकाएं – श्री रामदेव धुरंधर

मैं अस्सी से कम शब्दों में रचित गद्य क्षणिका के जनक की तीन अप्रतिम गद्य क्षणिकाएं.

सीता

सीता चौदह वर्ष वनवास के बाद अयोध्या लौटी थी। अब राम की ओर से त्यक्त होने पर दूसरे वनवास में समय सीमा न हो कर पूरे जीवन का इसमें तर्पण था। धोबी ने जब से लांछन लगाया सीता की अनुभूति बनती थी पूरी अयोध्या उसके प्रति यही मंतव्य रखती है। यह तो सीता के आँसू हुए वह वन जा रही थी। पर इससे अधिक विशाल उसका आंतरिक संतोष था वह अयोध्या से मुक्त हो गयी थी।

16 – 12 – 2024

गरीब का घर

मैं अस्सी से कम शब्दों में एक अद्भुत घटना को बांध रहा हूँ। एक गरीब आदमी ने अपनी मृत्यु के समय अपनी पत्नी से कहा, "वहाँ थोड़ा पैसा है। मैंने बचा रखा है। सोचता था संकट आये तो तुमसे कहूँगा घबराना मत, पैसा है।" उसकी पत्नी उसके प्राण के लिए रोते -- रोते उसी के प्रवाह में बोली, "मैंने भी थोड़ा पैसा बचा रखा है। सोचती थी संकट आये तो तुमसे कहूँगी घबराना मत, पैसा है।" ***

07 – 12 – 2024

तुलसी तेरे द्वारे

एक बार मैं गोस्वामी तुलसीदास के युग में चला गया था। मन में दुर्भावनाएँ होने से मैंने पास में बहती हुई गंगा में स्नान किया था। वहाँ से मैं कार से होटल आ गया था। बाद में नक्शे के आधार पर मैंने जाना था मानस के महाकवि तुलसी का आश्रम तो उसी रास्ते में पड़ता था। तुलसी मिल जाते तो मेरा सौभाग्य। पर अब तो मैं मॉरिशस आ गया था। शताब्दियाँ बीतीं। बस एक पश्चाताप मन में ढोता हूँ।

25 – 11 -- 2024

श्री रामदेव धुरंधर, रायल रोड, कारोलीन बेल एर, रिविएर सेचे, मोरिशस फोन : +230 5753 7057 ईमेल: rdhoorundhur@gmail.com

कविता - रामकथा – स्व. प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'

करूणासनी कल्याणदायी है कथा श्री राम की
कर्तव्य के अनुराग की, परित्याग की धन-धाम की।
माता-पिता के मान की, संसार के अज्ञान की-
भ्रातत्व के उत्कर्ष की, विश्वास के सम्मान की।।
है यह कथा संसार की भी नहीं केवल राम की।। 1।।

है लोभ मोह विमोचनी, सद्भाव स्नेह प्रसारिणी
सद्बुद्धिदायिनी, हृदय द्रावक, सबों की हितकारिणी।
सुख-शांतिप्रद, मोहक, मधुर, मानव मनोविज्ञान की
निस्वार्थ, समता, प्रेम के व्यवहार, पावन ज्ञान की।।
है दुखी जन की विकलता हर, दो घड़ी विश्राम की।। 2।।

संघर्षमय संसार में निर्दोष पथ की दर्शिका
उलझावों में उलझे जनों की सुखद प्रिय संरक्षिका।
चिंताग्रसित संतप्त मन की वेदना अनुमान की
और दुराचारी दुष्टों के दुर्भाव की अभिमान की।।
है सरल भावुक पाठकों के लिये अनुपम काम की।। 3।।

यह भक्त साधक श्रावकों में श्रद्धाभाव उभारती
आध्यात्मिक ज्योति जगा करती है प्रभु की आरती।
है यह कथा नित आत्म-जागृति की ओर अनुसंधान की
श्रीराम-सीता-भरत-लक्ष्मण की तथा हनुमान की।।
सत असत रूपी राम-रावण के सतत संग्राम की।। 4।।

स्व. प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'
साभार - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम्र', ए २३३ , ओल्ड मीनाल रेजीडेंसी भोपाल ४६२०२३ मो. 9425484452 vivek1959@yahoo.co.in

लेख - वैश्विक संदर्भ में विजयादशमी – श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय छवि भारतीय त्योहार तथा उत्सवों में प्रतिबिंबित होती है।

विजयादशमी या दशहरा मात्र एक धार्मिक त्योहार नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा का वैश्विक प्रसारक है। आज जब भारतीय प्रवासी समुदाय विश्व के कोने कोने में फैला हुआ है, तब दशहरा उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गया है। रावण पर राम की विजय का यह पर्व केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के मूल्यों, परंपराओं और दर्शन को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम भी बन गया है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय प्रवासी समुदाय द्वारा विजयादशमी का उत्सव भव्यता से मनाया जाता है। न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, शिकागो, सैन फ्रांसिस्को, वाशिंगटन, लॉस एंजिल्स, फिलाडेल्फिया, डलास, बोस्टन और सिएटल जैसे प्रमुख शहरों में हजारों भारतीय इस त्योहार को मनाते हैं। इन सभी स्थानों में न्यू जर्सी को सबसे भव्य दशहरा उत्सव के लिए जाना जाता है। यहां के भारतीय समुदाय द्वारा आयोजित रामलीला और रावण दहन के कार्यक्रमों में अमेरिकी मूल के नागरिक भी बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्र संघों द्वारा रामायण के आधुनिक प्रस्तुतिकरण किए जाते हैं, जहां अंग्रेजी भाषा में रामकथा का मंचन होता है। सिलिकॉन वैली में तकनीकी क्षेत्र के भारतीय पेशेवरों ने डिजिटल रामलीला की शुरुआत की है, जिससे वर्चुअल माध्यम से भी संस्कृति का प्रसार हो रहा है।

कनाडा में भारतीय प्रवासियों की बढ़ती संख्या के साथ ब्रैम्पटन में दशहरा उत्सव का भव्य आयोजन होता है। यहां दस हजार से अधिक भारतीय मूल के लोग इस उत्सव में भाग लेते हैं। टोरंटो, वैंकूवर और कैलगरी में हिंदू सभा मंदिरों के माध्यम से रामलीला का मंचन किया जाता है। कनाडा की बहुसांस्कृतिक नीति के कारण यहां भारतीय त्योहारों को सरकारी संरक्षण प्राप्त है। कनाडाई स्कूलों में भी दशहरा के अवसर पर भारतीय संस्कृति की जानकारी दी जाती है, जिससे स्थानीय बच्चे भी रामायण की कहानी से परिचित होते हैं।

यूनाइटेड किंगडम में लंदन, बर्मिंघम, लीसेस्टर और मैनचेस्टर जैसे शहरों में दशहरा उत्सव ब्रिटिश समाज का अभिन्न अंग बन गया है। लंदन के साउथ हाल में आयोजित दशहरा मेला यूरोप का सबसे बड़ा भारतीय त्योहार माना जाता है। यहां ब्रिटिश-भारतीय कलाकारों द्वारा रामायण का मंचन अंग्रेजी भाषा में किया जाता है, जिसमें शेक्सपियरीयन शैली का प्रभाव दिखाई देता है। ब्रिटिश संसद और स्थानीय नगर निगमों के प्रतिनिधि भी इन आयोजनों में भाग लेते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में सिडनी, मेलबर्न, पर्थ और एडिलेड में भारतीय समुदाय द्वारा विजयादशमी के व्यापक समारोह होते हैं। सिडनी ओपेरा हाउस के निकट आयोजित दशहरा उत्सव में स्थानीय एबोरिजिनल कलाकार भी भाग लेते हैं। यहां रामायण की कहानी को ऑस्ट्रेलियाई संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे स्थानीय

संस्कृति के साथ भारतीय परंपरा का अद्भुत मेल देखने को मिलता है। मेलबर्न विश्वविद्यालय में भारतीय छात्रों द्वारा आयोजित रामलीला को अकादमिक मान्यता भी प्राप्त है।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय की उपस्थिति महात्मा गांधी के काल से है, और डरबन तथा जोहान्सबर्ग में दशहरा उत्सव की परंपरा शताब्दी पुरानी है। यहां के दशहरा समारोह में अफ्रीकी संस्कृति के तत्व भी सम्मिलित होते हैं। दक्षिण अफ्रीका में रामायण का मंचन विभिन्न स्थानीय भाषाओं में किया जाता है, जिसमें जुलु और अफ्रीकान्स भाषाएं भी शामिल हैं।

खाड़ी देशों में विशेषकर संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत और सऊदी अरब में काम करने वाले भारतीय पेशेवर भी धार्मिक सौहार्द्र के साथ विजयादशमी मनाते हैं। दुबई और अबू धाबी में आयोजित दशहरा समारोह में हजारों भारतीय भाग लेते हैं। यहां की विशेषता यह है कि स्थानीय अरब समुदाय भी इन कार्यक्रमों में रुचि दिखाता है। दुबई में रामायण के कुछ अंशों का अरबी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है, जो सांस्कृतिक सेतु का काम करता है।

दक्षिण पूर्व एशिया में सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैंड में रामायण की गहरी जड़ें हैं। सिंगापुर के लिटल इंडिया में दशहरा उत्सव अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। मलेशिया में सरकारी मान्यता प्राप्त दशहरा उत्सव में कुआलालंपुर में भव्य रावण दहन होता है। थाईलैंड में अंतर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव का आयोजन होता है, जहां विभिन्न देशों की रामायण परंपराओं का प्रदर्शन किया जाता है।

फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, गुयाना जैसे द्वीपीय राष्ट्रों में भारतीय मूल के लोगों की बड़ी आबादी है। फिजी में दशहरा राष्ट्रीय त्योहार का दर्जा रखता है, और यहां के प्रधानमंत्री भी इस अवसर पर संदेश देते हैं। मॉरीशस में रामायण का मंचन क्रियोल और फ्रेंच भाषाओं में भी होता है। त्रिनिदाद में भारतीय संस्कृति मंत्रालय दशहरा उत्सव को राष्ट्रीय उत्सव का दर्जा देता है।

नेपाल में दशहरा को दशैं के नाम से मनाया जाता है और यह वहां राष्ट्रीय त्योहार है। श्रीलंका में भी रामायण से जुड़े स्थानों पर विशेष आयोजन होते हैं। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय द्वारा दुर्गा पूजा के साथ दशहरा मनाया जाता है।

यूरोप के अन्य देशों में जर्मनी, फ्रांस, इटली और नीदरलैंड में भारतीय दूतावासों के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। जर्मनी के फ्रैंकफर्ट और बर्लिन में रामलीला का मंचन जर्मन भाषा में भी किया जाता है।

वैश्विक स्तर पर रामायण के मंचन की परंपरा व्यापक है। अमेरिका में हार्वर्ड, येल जैसे विश्वविद्यालयों में रामायण पर अकादमिक कार्यशालाएं होती हैं। यूके में भारतीय उच्चायोग द्वारा प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव का आयोजन किया जाता है। कनाडा में मल्टी कल्चरल सोसायटी रामायण प्रदर्शन किया करती है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय रामायण मेला विभिन्न देशों में रामायण की विविधता को प्रदर्शित करता है। इसमें कंबोडिया, इंडोनेशिया, म्यांमार जैसे देशों की रामायण परंपराओं को भी स्थान मिलता है।

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया, यूट्यूब और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से विजयादशमी का प्रभाव वैश्विक हो गया है। विश्व के किसी भी कोने में बैठे लोग लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से भारत या अन्य देशों में आयोजित दशहरा समारोह देख सकते हैं।

वैश्विक संदर्भ में विजयादशमी भारतीय संस्कृति की सॉफ्ट वसुधैव कुटुंबकम् पावर का प्रतिनिधित्व करती है। यह त्योहार न केवल भारतीय प्रवासियों को अपनी जड़ों से जोड़ता है, बल्कि स्थानीय समुदायों को भारतीय दर्शन, न्याय, सत्य और पारिवारिक मूल्यों से परिचित कराता है। विजयादशमी केवल एक त्योहार नहीं रह गया है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की वैश्विक पहचान का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है, जो विश्व भर में मानवीय मूल्यों और सद्भावना का संदेश पहुंचा रहा है।

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम्र', ए २३३ , ओल्ड मीनाल रेजीडेंसी भोपाल ४६२०२३ मो.

9425484452 vivek1959@yahoo.co.in

Bharatiya Sanskriti Bamberg e.V.

Bridging Indian heritage and the Bamberg Community

Bharatiya Sanskriti Bamberg e.V. is established to celebrate and promote the rich cultural heritage of India within the Bamberg community, Germany. Our mission is to foster cross-cultural understanding and unity by organizing events, workshops, and festivals that showcase Indian traditions, arts, and values. Through these initiatives, we aim to create a vibrant platform where individuals from diverse backgrounds can come together to appreciate and experience the essence of Indian culture.

Dr. Radhika Pawar Bawankar

Editor (International Literature & Culture)

कविता - दीपावली – श्री राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस'

आज के ही दिन मेरे राम अयोध्या आये थे..
शहर की बड़ी बड़ी ईमारतों पर,
चमकते, रंग बिरंगी,
झालरों को देखकर,
मन, स्वयं से पूछ उठा ,
बताओ यह नगर क्यों जगमग है ।
गांव, गली, चौबारों में ,
कैसी सुन्दर यह रौनक है ।।

मंदिरों के द्वार पर,
बन्दनवार लटक रहे हैं ।
ये मिट्टी के दीए, माँ सरयू के आँचल में,
मोती की माला बनकर चमक रहे हैं ।।

मेरे अवध का कोना कोना,
जगमगा रहा है ।
दीप माल से स्वयं को सजा रहा है ।।
मानस माधुर्य - स्वर से संगम कर,
देखो कैसा
मधुर गीत गा रहा है ।।

अरे! आज मेरी अयोध्या,
दुल्हन की तरह,सज गई है ।
असंख्य दीपों से पट गई है ।।
जन मानस के दिल में
आस्था का भाव लेकर
मन का विश्वास,
संस्कृति के निकट गयी है ।।

फिर भी मेरा दिल,
मुझसे एक प्रश्न पूछता है,।
स्वयं से जूझता है ।
कि ये राम का नगर,
प्रत्येक दीवाली में क्यों सजता है ?
आखिर इस दिन स्वर्ग,
अवध की धरा पर ,
क्यों उतरता है ??

मेरे प्रश्न का उत्तर था..
कि आज से हजारों बर्ष पहले,
एक तपश्वी, वन से आया था ।
जिसने भारत के जनमानस में,
एक विशेष स्थान बनाया था ।।
मर्यादा का अर्थ, क्या होता है ।
इस रहस्य को समझाया था ।।

फिर मैंने मर्यादा से ही पूछ लिया
अरे ! बताओ वह कौन था ?
जिसके भय से अधर्म काँपता था,
अनीति हाँफता था,
प्रकाश का सामराज्य था,
और तिमिर मौन था ।
बताओ वह कौन था ?

मर्यादा ने कहा ,
सुनो !...

जिसने विनम्र भाव से झुक कर,
ऊंचाईयों को छूने का,
कीर्तिमान बनाया है ।
आदर्श जीवन जीने का ढंग बतलाया है ।।
वह ईश्वर का अंश, साक्षात परामेश्वर,
राजा दशरथ का पुत्र,
रानी कौशल्या का जाया है ।।

इतना सुनकर,

राजभवन के कंगूरे पर जल रहा,
दीपक बोल उठा,
अपना का मुँख खोल उठा,
अरे ! अरे...अरे
वे तो मेरे तपस्वी राम है।
भारत के जनमानस के,
अभिराम है।
जीवन के हर कोण पर विराजे,
श्रीराम है॥

शब्दों, ने मन के भाव से पूछा,
कि तपस्वी राजा कैसा होता है।
उसका तप क्यों निखरता है।
उसका दिव्य प्रकाश कैसे विखरता है।

मन के भाव ने कहा,
उसका स्वभाव निर्मल होता है।
वह राजा होकर भी आभाव में जी लेता है॥
इसका तन -मन - धन,
स्वयं का नही प्रजा का होता है।

यह अद्भुत भक्ति का गायन होता है।
महर्षि वाल्मीकि का सम्पूर्ण रामायन होता है।
जीवन का मधुर रस,
तुलसी का राम रसायन होता है॥

उसके नाम की महिमा अपरंपार है।,
जिसका ब्रह्माण्ड से भी वृहद् आकर है।
जो सरकारों का भी सरकार है॥
इनके नाम की महिमा को,
कवि श्रेष्ठ, महर्षि बाल्मीकि ने गाया है।
तुलसी ने जिन्हें मानस में बसाया है।
भक्तों की भक्ति ने
ना जाने कितने रस में गुनगुनाया है।

मेरे राम अद्भुत है,
अंतर्मन के दिव्य प्रकाश है।
ये स्वयं, पाताल, भूलोक, और आकाश है।
ये पापों का नाश,
और भक्तों के निवास हैं।

मेरे राम, नानक की,
गुरु वाणी और कीर्तन हैं।
भक्त रैदास का भजन हैं,
संत कबीर का चिंतन है॥
जी हाँ, और
कृष्ण की दीवानी,
मीरा के राम रतन है॥

ये मेरी इस रचना के
सुन्दर भाव हैं।
राम मेरे भारत के ,
स्वभाव हैं॥
इनसे ही होली,दीवाली
और दशहरा है।
भारत और राम का सम्बंध,
बड़ा गहरा है॥

मेरे राम ¡ आत्मज्ञान और विवेक है,
चराचर में विराजमान,अनेकों में एक है।
कण कण में बसी शक्ति है।
शबरी की नवधा भक्ति है,
सुरसरि की कल कल है।
दुष्टों के दिल की हलचल है॥
मेरे राम,
मेरी कविता के स्वर है।
साकार स्वरूप में, अवतरित,
ब्रह्म अंश ईश्वर है॥

श्री राजेश कुमार सिंह “श्रेयस”, कवि, लेखक, समीक्षक, लखनऊ, उप्र, (भारत)

कविता - रोशनी का पर्व – सुश्री छाया सक्सेना 'प्रभु'

दीप ज्योतित हुए, फैला उजियारा जग।
रात तारों भरी, चाँदनीमय सुभग।।

कार्तिक की अमावस्या दीपावली
लक्ष्मी जी मनाते कमल की कली
खील संग हो बताशे मिठाई लगे
भाग्य सौभाग्य पूजे मिले उसको नग
दीप ज्योतित हुए फैला उजियारा जग...

रोशनी की लड़ी जब घरों में सजी
गूँज मंगल ध्वनि मानो लगने बजी
दिव्यता का अनोखा असर सा हुआ
रक्त चंदन बनाते, लगन शुभता पग
दीप ज्योतित हुए, फैला उजियारा जग...

दीप माटी स्वदेशी हुयी भावना
द्वार सजती रंगोली हुयी पावना
प्रेम बढ़ता परस्पर दिनों दिन यहाँ
आम्र पत्तों से वन्दनवारे सजग
दीप ज्योतित हुए, फैला उजियारा जग....

सुश्री छाया सक्सेना प्रभु, माँ नर्मदे नगर, म.न. -12, फेज- 1, बिलहरी, जबलपुर (म. प्र.) 482020
मो. 7024285788, chhayasaxena2508@gmail.com

व्यंग्य - लक्ष्मी तेरे रूप अनेक – श्री प्रभाशंकर उपाध्याय

'दुनिया में दो ही बड़े दामोदर और दाम। दामोदर बैठे रहें, दाम करे सब काम।' दाम यानी लक्ष्मी मैया। दो बड़े की तर्ज पर पहले लक्ष्मीजी के दो रूप प्रचलित थे- 'महालक्ष्मी' तथा 'दरिद्र लक्ष्मी' का। लोक कथन है कि दरिद्र लक्ष्मी, 'महालक्ष्मी' की बड़ी बहन हैं। एक अवधारणा और कि कूड़ा-करकट दरिद्रलक्ष्मी है तो झाड़ू महालक्ष्मी। वह बुहारती है अर्थात् गृहलक्ष्मी के हाथों में विराजित होकर दरिद्रता का लोप कर देती है। किन्तु अब, लक्ष्मी मैया के रूपों में 'श्याम लक्ष्मी', 'साइबर लक्ष्मी' तथा 'बिट लक्ष्मी' का समावेश भी हो गया है। 'पैसा खुदा नहीं, मगर खुदा से कम नहीं'। धनपतियों की पूछ आज ही नहीं वरन प्राचीनकाल से ही होती है क्योंकि ये खुदा से कम नहीं। इसके श्रेष्ठ उदाहरण यक्षपति कुबेर हैं। उनके पास अकूत धन, अतुल संपत्ति थी। वे सुवर्णी लंका के अधिपति थे और पुष्पक विमान भी उनके पास था। जब, यह वैभव था तो वे धन के अधिष्ठाता देव के तौर पर पूज्य थे। शुभ कार्यों में सर्वप्रथम उनका आव्हान होता था पर बाद में स्थिति परिवर्तित हो गयी। धनपत्नियों का स्वभाव वैभव प्रदर्शन रहा है। कुबेर पत्नी भी अपवाद नहीं थी।

अतः कुबेर ने पत्नी हारीति के कहने पर, एक भव्य भोज का आयोजन किया और उसमें ऐश्वर्य के प्रदर्शन हेतु अपनी संपूर्ण संपदा रख दी। उस भोज में समस्त देवगणों को आमंत्रित किया गया ताकि कुबेर के वैभव को देख सभी की आंखें चुंधिया जाएं और धनपति के रूप में कुबेर का वर्चस्व कायम रहे लेकिन महादेव कुबेर का अहंकार भांप गए और उन्होंने आने की असमर्थता जताते हुए अपने पुत्र गणेश को साथ कर दिया। भोजन स्थल पर आकर बाल गणेश की भूख भोज्य पदार्थों की महक से भड़क उठी। उन्होंने कुबेर से शीघ्र ही भोजन करवाने का अनुरोध किया। गर्वोन्मत कुबेर ने सेवकों को भोजन परोसने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन करते हुए सेवकों ने आनन फानन भोजन परोस दिया। अब, लंबोदर ने भोजन करना आरंभ किया तो रूकने का नाम न लिया। भांति भांति के सुस्वादु व्यंजन, कुछ ही देर में समाप्त हो गये थे। बाल गणेश की भूख अभी शांत नहीं हुई थी और वे अभी भी और लाने की मांग कर रहे थे। खाना पकने में थोड़ा समय लगना स्वाभाविक है। कुबेर चकित थे कि यह निराला बालक तैंतीस करोड देव-देवियों हेतु निर्मित नाना विध व्यंजनों को अकेला ही उदरस्थ कर गया और अभी भी मांग रहा है। भोजन पकने तक रूके रहें? गजानन को इतना धैर्य नहीं था। वे व्याकुल होकर रसोई घर में जा घुसे और वहां रखी कच्ची और अधपकी खाद्य सामग्री भी गड़प कर गए। गणेश अभी भी भूखे थे।

जब उन्हें खाने को कुछ भी नजर न आया तो वे प्रदर्शन हेतु रखे मणि-माणिकों और सोने चांदी के आभूषणों को खाने लगे। कुबेर के लाख टोकने के बाद भी गणेश नहीं रूके और कुछ ही देर में कुबेर का अकूत खजाना भी खाली हो गया। आमंत्रित अतिथियों को खिलाने को उनके पास कुछ भी नहीं था। उनसे सोने की लंका और भव्य पुष्पक विमान भी छिन गये। गणपति का मान बढा तथा अपने बुद्धि कौशल से भविष्य में वे प्रथम पूज्य भी हुए। जन सामान्य का ध्यान भी कुबेर से हटकर, लावण्यवती, सिन्धुसुता देवी लक्ष्मी

की ओर आकर्षित हुआ। वे भी परम ऐश्वर्यवान भी थीं। शनैः शनैः वे धन की अधिष्ठार्थी देवी के रूप में मान्य हो गयीं।

जग की यह रीत है कि उगते सूर्य को सब सलाम करते हैं। गणपति और लक्ष्मी उगते सूर्य थे। चिरंतन है, यह अवधारणा। कुबेर अस्ताचल को ढरक रहे थे। वर्तमान परिवेश में देखें कि समाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों में पद, पावर तथा पैसे वालों की उपस्थिति से मेजबान गौरवान्वित होते हैं। मंत्री, नेता, अभिनेता, उद्योगपति, उच्चाधिकारी या डॉन अर्थात् कोई भी दमदार अतिथि चाहिए, कार्यक्रम में चार चांद लगाने हेतु। चर्चित होने की ललक भी यह सब करा लेती है। ऐसे माहौल में सरस्वती साधकों की क्या पूछ? पर आदमी सरस्वती को भी लुभाए रखना चाहता है सो लक्ष्मी और गणेश के साथ सरस्वती का औपचारिक पूजन अवश्य कर लेता है।

धनपतियों की लल्लो-चप्पो करने में माहिर मानव अत्यंत खुदगर्ज है। इसने देवों को भी नहीं बख्शा। कुरूप किन्तु वैभवशाली कुबेर को पूजता रहा और जब कुबेर का हश्र हुआ तो वह, रूपमती लक्ष्मीजी की ओर आकर्षित हो गया। लक्ष्मी का सम्मोहन इतना विकट है कि विष्णुजी ने प्राकट्य होते ही उनका वरण कर लिया। देवी लक्ष्मी अपने स्वर्ण कलशों से स्वर्ण मुद्राओं को उलेड़ रही हैं। ऐसी आस्था भी है कि वे देती हैं तो छप्पर फाड़कर। लक्ष्मी की महत्ता तो देखिए कि गज उनका अभिनंदन कर रहे हैं और गजानन उनके बाजू में विराजमान हैं। गजवदन ऋद्धि-सिद्धि के दाता हैं। एक अवधारणा तो ये हुई लक्ष्मी संग गणेश पूजने में कि कुबेर का विराट धन उनके दीर्घ उदर में है और दीगर बात यह कि एक साथ पूजने से लक्ष्मी और गणेश दोनों ही प्रसन्न होते हैं। यह तो एक के साथ एक फ्री वाली बात ही हुई। सोना और सुहागा, यह भी कि साथ ही सरस्वतीजी भी प्रसन्न हो गयीं तो पांचों अंगुलियां घी में होना सुनिचित है।

अमावस की काली रात में उजली लक्ष्मी के साधक पूजनोपरांत, उलूकवाही लक्ष्मी मैया के आगमन हेतु, अपने आवास के खिड़की दरवाजे खुला रखते हैं। अतः दूसरी अवधारणा ये कि गणेशजी महाराज के पास हाथी का मुख है, जिस पर शक्तिशाली सूंड है जो अच्छों अच्छों को पटखनी देने में सक्षम है। गणपति के हाथ में गदा तो है ही उनके आधीन बलशाली गणादि भी हैं। अतः, उस रात चोरों की भी हिम्मत नहीं होती कि घरों में प्रवेश करे और लक्ष्मी को हाथ लगा दे। उसी स्याह रात्रि में काली लक्ष्मी के साधक द्यूत क्रीड़ा में रत रहकर हजारों के वारे-न्यारे कर लेते हैं। साइबर लक्ष्मी के आकांक्षी घर की सारी खिड़कियां और दरवाजे बंद कर अपने कम्प्यूटर की विंडो खोल देते हैं वे उसे अपलक तकते रहते हैं कि कब मार्केट मेहरबान हो जाए और हॉट सीट पर विराजों की कामना होती है कि कदाचित साइबर लक्ष्मी उन पर कृपा बरसा दे।

श्री प्रभाशंकर उपाध्याय, 193, महाराणा प्रताप कॉलोनी, सवाईमाधोपुर (राज) 322001, मो -9414045857

कहानी - कौन अपना कौन पराया – सुश्री नमिता सिंह 'आराधना'

आज दीवाली का त्योहार है। नैना घर में बिल्कुल अकेली है। ना बेटा-बहू आए थे ना हीं बेटे ने माँ को त्यौहार पर बुलाया था, क्योंकि उसकी पत्नी नहीं चाहती थी। शाम हो चली थी। भारी मन से वो खिड़की के पास चली गई और बच्चों को पटाखे चलाते देखने लगी। देखते-देखते वह ख्यालों में डूब गई। जब मनु छोटा था, माँ से बहुत लगाव था मनु का। खेलते-खेलते भी कई बार आकर माँ से लिपट जाता। नैना की जिंदगी बहुत खुशहाल नहीं थी। पति के दुर्व्यवहार ने उसे अंदर तक तोड़ दिया था। लेकिन बेटे की तरफ़ जिम्मेदारी को देखते हुए उसके पास इस जीवन से समझौता करने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। जीवन के झंझावातों से जब वह तंग आ जाती और आँखों में आँसू आ जाते तो मनु उससे लिपट कर कहता, " माँ जब आप रोती हो ना तो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा ना, तब आप मेरे साथ रहना। मैं आपका बहुत ख्याल रखूँगा। " भले ही वह बहुत छोटा था लेकिन उसकी बातों से नैना को बहुत सहारा मिलता और जीने की हिम्मत भी मिलती।

समय गुजरता गया। मनु ने प्रेम विवाह किया। उसका मानना था कि उसकी पत्नी भी नैना का उतना ही ख्याल रखेगी, उतना ही प्यार करेगी जितना वह करता है। उन दोनों के एक साथ बीमार पड़ने पर नैना उनकी देखभाल के लिए उनके पास गई। विचार तो यही था कि अब वह उनके साथ ही रहेगी। बेटा भी यही चाहता था। लेकिन बहू की आँखों में नैना खटक रही थी। बीमारी से उभरते ही नैना को वापस भेजने के लिए वह उसके साथ बुरा बर्ताव करने लगी। वैसे तो घर के अधिकतर काम नैना ही करती लेकिन जब बहू चाय या खाना बनाती तो कभी भी स्वयं, न नैना को परोसती न डाइनिंग टेबल तक आने के लिए आवाज देती बल्कि बेटे से कहलवाती। पत्नी के दवाब में आकर मनु भी बदलने लगा था। सब देख-सुनकर भी चुप रहता। उल्टा कई बार अपनी पत्नी का ही पक्ष लेता और नैना को ही दोषी ठहराता। कितने प्यार से बीमारी में वह उन दोनों की सेवा करने गई थी, उसका ये सिला? उनके व्यवहार से क्षुब्ध होकर नैना अपने घर वापस लौट आई। बेटा एक-दो दिन के अंतराल पर उससे बातें कर लिया करता था।

अचानक फोन की घंटी बजने से नैना का ध्यान टूटा। फोन बेटे का ही था। हैप्पी दीपावली कह रहा था।

"माँ क्या कर रही हो आज? " बेटे ने पूछा।

नैना क्या कहती। अकेली क्या करेगी। मनु पूछ रहा था, "कुछ बनाया नहीं है तो बाहर से मँगा दूँ? " नैना बस इतना ही कह पाई, "मन नहीं है कुछ खाने को। खा लूँगी कुछ भी। वैसे भी इस उम्र में बाहर का खाना हजम ही कहाँ होता है। " और फोन रख दिया। सोचने लगी क्या फोन पर इतना हाल-चाल पूछ लेना ही काफी है?

माना पत्नी जीवन साथी है पर माँ ने भी तो बड़े कष्टों से पाल-पोस कर, पढ़ा- लिखा कर उसे इस लायक बनाया कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके और कोई लड़की उसके जीवन में आ सके। बढ़ती उम्र में माँ-

बाप को सुख - सुविधा और पैसों से ज्यादा बच्चों के साथ और उनके प्यार की जरूरत होती है। पत्नी के आ जाने से माता-पिता के प्रति संवेदना कहाँ लुप्त हो जाती है? क्या माता-पिता के प्रति कोई फ़र्ज़ नहीं होता? नैना अपने विचारों के उधेड़बुन में उलझी हुई थी कि तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। नैना ने दरवाजा खोला तो पड़ोस के अभिषेक और उसकी पत्नी दरवाजे पर खड़े थे। अभिषेक, मनु की उम्र का ही था। नैना ने उन्हें प्यार से अंदर बुलाया। अंदर आकर उन्होंने नैना के पैर छुए और कहा, "आंटी, आज त्योहार के दिन तो हम किसी भी कीमत पर आपको अकेले घर में नहीं रहने देंगे। आप हमारे साथ हमारे घर चलिए और हमारे साथ ही खाना खाइए। " सुनकर नैना भाव विभोर हो गई। काफी ना-नुकुर की लेकिन वे दोनों मानने को तैयार नहीं थे। वैसे भी वे दोनों नैना की छोटी-बड़ी हर जरूरत का ध्यान रखते थे। दोनों पति-पत्नी ने मिलकर नैना के घर में दीप जलाए। घर जगमगा उठा। लेकिन उनका अपना दीप तो कोसों दूर बैठा था, अपना अलग आशियाना बनाकर। फौरन ही उन्होंने इन विचारों को अपने मस्तिष्क से झटक दिया। अभिषेक का हाथ थामे वह उसके घर की ओर चल दी और आँखों के कोरों पर आए आँसुओं को पीने की कोशिश करने लगी।

नमिता सिंह 'आराधना', बी. 401, सानिध्य रॉयल, 100 फीट त्रागड़ रोड, न्यू चांदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात पिन 382470, मोबाइल 9724756948

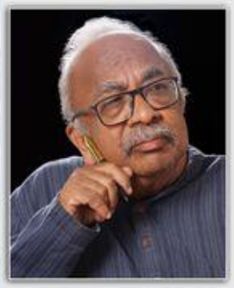

लेख - प्रकाश - विनोद कुमार जैन "चेतन"

अंधकार के अभाव में प्रकाश भी उपयोगी नहीं। काले सफ़ेद बिन्दुओं से मिलकर चित्र बनते हैं, जिससे वस्तु देखी जा सकती है। (सफ़ेद के स्थान पर इंद्रधनुष के रंगों के समूह भी कह सकते हैं।)

अंधकार प्रकाश को अपने आवास में जगह देता है, और उसके अस्तित्व को सुरक्षा देता है। प्रकाश अंधकार को स्वयम में लील लेता है। पर प्रकाश के निस्तेज होते ही अंधकार अपने मूलरूप में निर्दोष प्रकट होता है। शाश्वत अंधकार चंचल सूरज के समक्ष कभी हारा नहीं, बस एक पर्दे के पीछे छुपकर सारा नजारा देखता है| बादल आए और सूरज को जो अब अपनी दशा और दिशा नहीं बदल सकता को एहसास दिलाया, कि अंधकार कभी मिटा ही नहीं | (निराशा बादल है, अंधकार चेतना है, उम्मीद सूरज है|)

आंधियों की कोशिश ने बादलों को बिखरने को मजबूर कर दिया| समय के रथ पर सवार सूरज बदस्तूर चलता रहा| प्रकाश के सहयोग से देखा जा सकता है, किन्तु प्रकाश को कैसे देख सकते हैं? प्रकाश के माध्यम से देखा जाता है, भला प्रकाश को किसने देखा है? प्रकाश को अपने अस्तित्व के लिए, किसी के सहारे की आवश्यकता होती है, जो स्वयं को जला सके, और अंधकार से युद्ध के लिए कटिबद्ध हो। किन्तु अंधकार न तो एक छोटी सी चिंगारी का प्रतिरोध करता है, और न ही सबसे बड़े तारे का। प्रकाश का जीवन काल है, किन्तु अंधकार जीवन और मृत्यु की परिभाषा और सीमाओं से परे शाश्वत है।

ह्रदय का धड़कना अपने आप है, बुद्धि का होना स्वयमेव है| समस्त ज्ञात आध्यात्म प्रकारांतर से भौतिक है। प्रकाश में वही ज्ञान आ सकता है, जो इंद्रिय गोचर होता है, या बुद्धि के सीमा क्षेत्र में है। संवेदनाएं भी शारीरिक रासायनिक परिवर्तनों से ही बोधगम्य हो पाती है। आध्यात्म प्रकाश की चर्चा बौद्धिक उत्तेजना की शरण स्थली है। देवासुर संग्राम में देवता और असुर दोनों उसी एक ही शक्ति से संचालित होते हैं|

न ब्रह्मा, न विष्णु, न शिव गतिशील है। अतः उनका प्रतीक है स्थिर दशा में होना। जबकि शक्ति, लक्ष्मी, एवम सरस्वती गति के कारण है। वाहन भी उसी प्रकार सिंह, ऊल्लु, और हंस दिखाये गये हैं। पौराणिक आख्यानों के रहस्य का यदि सार्थक विश्लेषण व उसमें गुंफित सांकेतिक भाषा का अर्थ यदि प्रकाश में नहीं लाया गया, तो शीघ्र ही भ्रामक अर्थ के प्रचार से उनके अस्तित्व व उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

धर्म का कोई अतीत नहीं और अतीत का कोई धर्म नहीं होता| परिभाषा, विश्वास और विशेषण धर्म की सीमाएं नहीं हो सकते, हाँ उसके प्रकाश के समक्ष आए अवरोधों की परछाई हो सकते हैं| अवक्तव्य होने के बावजूद वह अव्यक्त नहीं| वह खोजा नहीं गया, पर जाना गया| पाने जैसी कोई संभावना उसमें थी ही नहीं, क्योंकि वह भिन्न नहीं हुआ कभी किसी से और कभी भी|

अपने सभी विचारों को पवित्र अग्नि को सौंप दो, ताकि वह ज्ञान के प्रकाश में समाहित हो सके और पवित्र समझ जाग सके| सहस्त्र कानों को सुनाने के बजाय, सिर्फ एक कान को सुनाओ, जो कि वह है| तब तुम वह

कहोगे जो तुम्हें कहना है| दूसरों के द्वारा प्राप्त जानकारी के प्रकाश में, सिर्फ तुम अपनी परछाई से मिलोगे| स्वयं के ज्ञान के प्रकाश में परछाई से नहीं टकराओगे|

बुद्धि ने कहा असम्भव है, अंधेरों से मिलना। उजालों ने कहा, हम भी अंधेरों की ही संतान हैं, किंतु कभी मिले नहीं। कहते हैं, हम अंधेरों की कोख में ही पले बढे हैं, किंतु कभी ऐसा अवसर नहीं आया, कि उनसे मिलते। बुद्धि ने फिर समझाया कि जब तक तुम उससे अलग नहीं होते, उससे कैसे मिल सकते हो? उजालों की समस्या यह, कि यदि हम अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोजते हैं, तो हमें अंधेरों से दूर होना होगा? यदि अँधेरा मिट गया, तो हम भी मिट जाएंगे। आज उजालों ने मिलने की जिद छोड़ दी और मिटने का भय भी त्याग दिया। उन्होंने देखा जितने वे अपने अहम से दूर जाते, उतना अँधेरा पास दिखता। जहां अहम का प्रकाश जीर्ण हो गया वहां अंधकार से जीवन रस प्रवाहित हो रहा था।

लहरों पर झिलमिलाते चाँद के अक्स को पकड़ना, सत्य को पाना है| जिसने सत्य को जाना वह उतना ही कह पाया, कि वह जानने योग्य है|

तुम अपने दीपक खुद बनो, और कोई उपाय नहीं| पकड़ते ही सत्य भ्रांति में बदल जाता है| सार्वभौमिक सार्वकालिक सत्य शब्द के आवरण में प्रकट नहीं होता, और मौन की गहनता में प्रकाशित होता है| तथ्य प्रकाश में आते हैं, सत्य तो स्वयं प्रकाश है| प्रकाश किसने देखा| जो प्रकाश में बाधा पहुंचाए वह दिखता है| और वह प्रकाश और अंधकार का समुच्चय है|

कहां था सौंदर्य? शब्दों के स्पर्श मात्र से कुम्हला जाता। ऊषा की रश्मियों में थिरकना चाहता और इच्छा का बोझ भी नहीं उठा पाता। कितना असहाय और विवश है, कि उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व भी नहीं। कितना क्षण भंगुर कि समय की आहट पर चौंक जाता। कौन गढ़ता उसे कल्पना के तंतुओं से और प्रशंसा की हल्की सी चोट से बिखर जाता। सब उसे अपने साथ लेकर चलते और वह अपनी गुफा में अकेला थरथराता। ओह आज ध्वनि और प्रकाश उसका सानिध्य पाने अतिथि बन प्रवेश करेंगे। वह स्वागत करेगा अपने चिर साथियों का, किन्तु समय की दीवार में कैसे खोजेगा वह द्वार, जिस के पीछे खड़ा वह झिरी से झांकेगा।

विचारों के सिंहासन पर बैठकर शब्दों ने आदेश जारी किए। लो सिंहासन डोलने लगा और बेचारे शब्द फिसलने लगे। सतह की परछाई को देखकर वस्तु या विचार को नाम देने की कोशिश कर रहे थे शब्द। झिलमिलाते प्रकाश में वे फिर एक दूसरे से गड्डमड्ड हो गए।

विनोद कुमार जैन "चेतन", भोपाल

कहानी - जिंदा इतिहास – डॉ हंसा दीप

यूँ तो परी ने कई पुरस्कार जीते थे, लेकिन छोटे-छोटे। ऐसा मौका पहली बार मिला था। वह इसमें जी-जान लगा देना चाहती थी। आज की डाक में आर्ट गैलेरी ऑफ ओंटेरियो से एक विज्ञप्ति आई थी। बारह से सोलह वर्ष की आयु के बच्चों के लिए अंतरराष्ट्रीय चित्र प्रतियोगिता का आयोजन था। प्रविष्टि भेजने की अंतिम तारीख में एक माह शेष था। एक हज़ार डॉलर का पुरस्कार इसकी सबसे बड़ी खासियत थी।

तब से परी बेचैन थी। लगातार कुछ सोच रही थी। उसकी सारी कलाकृतियाँ एक के बाद एक आँखों के सामने उपस्थिति दर्ज कराती रहीं। इनमें से किसी एक को चुनकर भेजे, या फिर नया कुछ बनाए! ऐसा 'पीस ऑफ आर्ट' जो बरबस सबका ध्यान खींच ले। वह जानती थी कि इतने दिनों में कुछ अच्छा बना सकती है। दुविधा यह थी कि कौन-सा नया विषय लिया जाए! ऐसा विषय जिस पर हर किसी की आँखें ठहर जाएँ।

कई अच्छे चित्र तैयार थे जिन्हें बनाने के लिए उसने बहुत मेहनत की थी। शीर्षक चुनने के लिए कई शब्द काटे-पीटे, तब कही जाकर संतोष हुआ था- पर्वतों के सीने, नदियों के दिल, शैतान हवाएँ, जलते जंगल, धरती की गोलाई, गगन खुद में मगन, रेतीला दिल... और भी बहुत सारे!

लंबी सूची थी। कैनेडा के सबसे मशहूर स्थान सी एन टावर, थाउज़ेंड आइलैंड, लेक ओंटेरियो; ऐसे कई सारे विषय इस समय उसे आकर्षित नहीं कर रहे थे। चित्रकारों की पहली पसंद नहीं बल्कि आखिरी पसंद पर ध्यान देना चाहती थी परी। ऐसा विषय जिसके बारे में कोई सोच भी न पाए।

'परी कला बैंक', पापा ने परी के कमरे के बाहर यह नेम प्लेट लगवा दी थी। इस कमरे में परी के बनाए चित्रों का खजाना था। यूँ तो वह हर चीज से कोई शो-पीस बना लेती थी लेकिन चित्रकला में उसकी खास रुचि थी। बारह साल की उम्र तक पहुँचते उसके हाथ खूब सध गए थे। कई ऐसे चित्र बनाए थे कि उन्हें देखकर मम्मी-पापा भी विस्मित रह जाते। अपने अनगढ़ हाथों को देखते हुए आश्चर्य करते, क्या यह सचमुच उनकी अपनी कृति, परी की कृति है!

बचपन से उसकी इस रुचि को देखकर पापा ने घर का सबसे बड़ा कमरा परी को दिया था ताकि उसे अपना शौक पूरा करने के लिए ज्यादा जगह मिले। इस कमरे की दीवारें, फर्श और यहाँ तक कि सीलिंग को भी परी ने अपनी खास पहचान दी थी। कमरे में चारों ओर कहीं कैनवास, कहीं लाल-पीले-नीले रंग-ब्रश से भरी ट्रे दिखती। कहीं रंगीले पेंसिल क्रेयान्स होते, तो कहीं कागजों पर अधखिंची लकीरें।

कैनवास और कागजों पर बनाई गई कई कलाकृतियाँ तस्वीरों में मढ़े जाने के लिए प्रतीक्षारत रहतीं। मेज पर स्कूल की किताबें पसर जातीं। यत्र-तत्र बिखरी ये चीजें सहज ही परी का परिचय दे देतीं। यही उसका अपना संसार था। छोटा-सा, जिसमें चारों ओर से बड़े-बड़े सपने झाँकते नजर आते।

कमरे की चार में से तीन दीवारों पर उसके ऐसे खास चित्र थे जो उसकी तीखी नजरों और सधी तूलिका की कहानी कह देते थे। चौथी दीवार पूरी की पूरी उसके रंगों की दुनिया थी। इस दीवार पर उसने जी-भरकर हाथ आजमाया था। एक दूसरे से जुड़े कई अलग-अलग आकार थे। गहरे-शोख, हल्के-फुल्के, अलग-अलग रंगों का सामंजस्य। इन सभी आकारों को सफेद सीमा-रेखाओं से बाँधा गया था।

सिर्फ सफेद ही एक रंग था जो सब आकारों में समान रूप से नजर आता था।

घर में मेहमान आते और परी के कमरे में कदम रखते तो उनकी विस्फारित आँखें नन्हीं बच्ची की दूरदृष्टि सराहते नहीं थकतीं। इस भव्य कोलाज़ को परी ने इस कदर करीने से सजाया-सँवारा था कि देखने वालों के मुँह से तारीफों की बरसात होती- "क्या बात है परी!"

"गजब!"

"अद्भुत!"

चाहे मेहमान हों, चाहे घरवाले, परी की अनुपस्थिति में इस कमरे में कोई नहीं जा सकता था। छोटा भाई, निक जिसे सब छोटू कहते थे, वह तो बिल्कुल भी नहीं। अपने लिए परी के बनाए इस नियम का पालन करते हुए छोटू ने भी परी के लिए कड़ा नियम बनाया था, बराबरी का नियम।

"परी, तुम भी मेरे कमरे में नहीं जा सकतीं।"

इस सख्ती का पालन दोनों भाई-बहन करते। अपनी-अपनी निजता का सम्मान। अगर कभी किसी की कोई चीज गुम जाती तो संदेह की धूरी एक दूसरे की ओर जरूर घूमती। आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला देर तक चलता। आखिरकार वह गुम हुई चीज मिल जाती और दोनों एक दूसरे से सॉरी कहते। साथ ही ताकीद भी करते- "मैं रहूँ, तभी मेरे कमरे में आना वरना इधर देखना भी मत।"

वैसे इस घर में अकेले परी नहीं, हर सदस्य के चरित्र में कोई न कोई खास बात थी। पापा के पास घड़ियों का बड़ा संग्रह था। कई पुरानी, एंटिक घड़ियों के साथ रोलेक्स जैसी नैम ब्रांड, महँगी घड़ियाँ भी थीं, जो इस संग्रह को बेशकीमती बनाती थीं। उन विशिष्ट घड़ियों से संबंधित ब्रोशर, पत्रिकाएँ पापा के कमरे के बुक शेल्फ में थे। इन घड़ियों की सुरक्षा के लिए घर में ही एक छोटा-सा लॉकर था जो कई नंबरों के डालने के बाद पापा से ही खुल सकता था।

पापा अपना खाली वक्त इसी कमरे में घड़ियों के साथ गुजारते। दीवारों पर उनके हाथों में पहनी अलग-अलग घड़ियों की तस्वीरें थीं। केवल पापा का बायाँ हाथ और कलाई पर सजी घड़ी। अपनी हर घड़ी के जन्म से लेकर बाजार के सफर तक की कहानी पापा को मुँह जबानी याद थी।

दस वर्षीय छोटू का कमरा, उसके पसंदीदा खिलौने, लेगो के विभिन्न आकारों से भरा था। एफिल टावर, स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी से लेकर न जाने कितने खास आकार और उनके साथ छोटू के अपने नए-नए प्रयोग। स्कूल के बाद के समय में वह रोज एक नया मॉडल बनाकर शाम तक तैयार कर देता। डिनर के बाद परिवार के सामने अपने नए प्रयोग की प्रस्तुति देता।

ऐसा लगता जैसे कोई बड़ा वास्तुविद सामने खड़ा हो! लेगो से बने बड़े-बड़े घर, उनके भीतर के सीक्रेट रास्ते और वहाँ तक पहुँचने के कोड। किसी हमले का सामना करते अंदर से निकलते रोबोट। धड़-धड़ मिसाइल दागते। छोटू के अगला बटन दबाते ही वापस अंदर चले जाते। ऐसे कई तरह के प्रयोग छोटू की दिनचर्या का हिस्सा थे।

मम्मी किसी बड़ी कंपनी में काम करती थीं। पूरे दिन काम करने के बावजूद अपने कुकिंग के शौक से घरवालों को बढ़िया खाना खिलातीं। स्वादिष्ट खाने से पेट पूजा करके सभी अपने-अपने कामों में लग जाते।

और फिर घर में नब्बे साल की दादी भी तो थीं। दादी की उम्र ही अपने-आप में एक म्यूज़ियम थी। न जाने क्या-क्या भरा था उनके अनुभवी दिमाग में! कहते हैं कि बूढा होने पर आदमी भूलने लगता है। दादी के साथ उलटा था। उन्हें सब कुछ तेजी से याद आता था। फलां वर्ष में, फलां दिन क्या हुआ था। राजनीति से लेकर परिवार और समाज का हर पहलू।

उनकी अथक बातें सुनते-सुनते परी कहती- “दादी इन्सायक्लोपीडिया है। ”

बैठक में रखी आराम कुर्सी उनका सिंहासन था। उससे नीचे उतरतीं तो बच्चों को अपने कमरे में देखकर ठुक-ठुक चलते, वहाँ पहुँच जातीं। उनके नए-नए प्रयोगों को सराहतीं, स्कूल-होमवर्क के बारे में पूछकर लौट जातीं। बच्चों को छेड़ना उनका प्रिय शगल था।

परी से कहतीं- “तुम्हारे पापा ने देर से शादी की वरना अभी तक मैं तुम्हारे बच्चे भी देख लेती। परी की परी को देखना कितना सुखद होता! ” कहते हुए जोर से ठहाका लगातीं।

दादी हँसती बहुत थीं। हमेशा खुश रहने वाले बुजुर्गों की सूची में दादी का नाम सबसे ऊपर हो शायद! कुछ भी पूछो, बता देतीं। सबका कच्चा चिट्ठा उनकी जबान पर होता। जब कभी पापा के बचपन की बातें सुनातीं तो परी और छोटू को बहुत मजा आता। तब पापा खिसिया जाते। दोनों बच्चे जी-भरकर पापा को चिढ़ाते।

एक अनजानी जीत की खुशी दोनों के चेहरों पर दमकती।

दो-तीन साल पहले तक परी को दादी बहुत अच्छी लगती थीं। उन्हीं की गोद में खेलकर बड़ी हुई वह। लेकिन अब वह दादी से दूर-दूर रहती है। उनके लगातार हिलते हाथ-पैर देखकर उसे कुछ ज्यादा ही चिढ़ आती थी। मुँह में एक भी दाँत नहीं बचा था। बोलतीं तो मुँह से हवा निकलती। गिनती के सफेद बाल बचे थे सिर में। ठठाकर हँसते हुए उनके चेहरे के न जाने कितने रिंकल्स, झुंड के झुंड उभर कर सामने आ जाते।

परी दादी से कहती- “ये चेहरे की लकीरें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। ”

दादी का जवाब मस्ती से भरा होता- “अच्छी तो मुझे भी नहीं लगतीं बेटा, इसीलिए मैं आईना नहीं देखती। ऐसा करो परी, इन सिलवटों पर एक बार इस्तरी मार दो। ”

“सिली दादी। ”

परी के मुँह से ये सुनकर दादी की बाँछें खिल जातीं। एक दिन उसने दादी के पास बैठकर उनके चेहरे की झुर्रियों को गिनने की कोशिश भी की थी। यह कहते हुए कि दादी की उम्र नब्बे है तो ये भी नब्बे का आँकड़ा पार करेंगी।

दादी ने कहा- "ये नब्बे से कई गुना ज्यादा होंगी। एक में अनेक। और हर एक में छुपी हुई यादें। कई कहानियाँ भी– खुशियों की, मुश्किलों की। तुम्हारे दादाजी के प्रेम की। तुम्हारे पापा के बचपन की, पढ़ाई की, शादी की। तुम्हारे और छोटू के जन्म की। जब तुम पैदा हुई थीं, मेरा सबसे बड़ा सपना पूरा हुआ था। अपनी पोती को गोद में उठाने का चाव। मूलधन से ब्याज मिलने का बड़ा सुख!"

दादी अनवरत बोलती रहतीं और परी अपना पीछा छुड़ाकर वहाँ से भाग जाती।

पहले सोते समय परी और छोटू, दोनों बच्चे दादी से कहानियाँ सुनते थे। अब अरसा हो गया। वो सब कब का बंद हो गया। पिछले कुछ दिनों से दादी के पास जाते ही अजीब-सी गंध आने लगी थी। शायद डायपर में पी करती होंगी। चलती-फिरती तो हैं, बाथरूम तक क्यों नहीं जा सकतीं?

परी शिकायत करती तो दादी सफाई देतीं- "जब भी जोर से खाँसी आती है तो उसी में पेशाब निकल जाती है।"

दादी के इस तर्क पर परी नाक-भौं सिकोड़ती। उसे लगता दादी आलसी हो गईं।

दादी परी के मन की बात समझ जाती। कहतीं- "तुम भी डायपर में पी करती थीं, लेकिन मैं तुम्हारे पास ही सोती थी। हाँ, वह बाल गंध थी, ताज़ी बयार जैसी। यह बूढ़ी गंध, पककर सड़ते फल जैसी। जमाने का उसूल बड़ा जालिम है, बच्चे के आने की प्रतीक्षा और बूढ़े के जाने की!"

दादी की ऐसी बातें परी के सिर के ऊपर से निकल जातीं।

एक सप्ताह तक लगातार प्रतियोगिता के बारे में सोचते हुए उसने अपनी नोटबुक में कई नए आइडियाज़ लिख लिए थे। अपने बनाए हुए चित्रों को कमरे के चारों ओर लगाकर हर कोण से देखा था। लेकिन अभी तक वह पल नहीं आया था, जब यह लगता कि बस यही है वह।

मम्मी ने कई सुझाव दिए। कभी गगनचुम्बी इमारतों के, तो कभी घने जंगलों के। प्रकृति में छुपे खजाने को एक गहरी नजर भर की देर थी। पापा ने जास्पर और बैम्फ में देखे गए दृश्यों के बारे में याद दिलाया। नीले पानी की तलछट, पहाड़ों में जीवन, जैसे विषय भी सुझाए। हँसते हुए अपनी घड़ियों के अनमोल संग्रह का कोलाज बनाने की सिफारिश भी की।

छोटू ने कहा- "मेरे बनाए लेगो के चित्र बना, परी। ऐसा आकार तुझे कहीं नहीं मिलेगा। मैं इसका विशेषज्ञ हूँ।" नन्हे विश्वास का आकार विशाल था।

जवाब में परी ने सिर्फ "हूँ" कहा तो छोटू ने चट से अपनी शर्त रख दी- "हाँ, एक बात पक्की कर ले, अगर तू जीते तो आधे पैसे मेरे।"

"तू पूरे पैसे ले लेना छोटू, मुझे जीतने तो दे।"

और कोई समय होता तो एक भी पैसा न देने के लिए बहस में उलझ जाती परी। परन्तु इस समय उसकी सोच नया विषय तलाशने की जिद में एक ही दिशा में सोच रही थी। हर दिन स्कूल आते-जाते यही सोचती कि कैसे मैं एक अनूठा चित्र बनाऊँ। कलाकार की भूख थी, जब तक संतुष्टि न हो, कुछ न कुछ चुभता ही रहता। एक नन्हे काँटे की चुभन जैसा।

नींद के दौरान भी ये खयाल परी का पीछा न छोड़ते। आखिरकार, आज स्कूल से आकर तय किया कि अब बहुत हो गया। निर्णय ले ही लिया जाए। उसकी अपनी पसंद के पंद्रह चित्रों का चयन किया। इन सबको कतारबद्ध करके “इनी-मीनी-माइनी-मो-एक”, “इनी-मीनी-माइनी-मो-दो” से लेकर दस तक जाकर खत्म करना था। जहाँ भी हाथ रुकता उस चित्र को भेज देना था।

परी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी और हौले-हौले गिनती शुरू की। दस बार वही क्रम दोहराने के बाद आखिर गिनती थम गई। जैसे ही उँगलियाँ टिकाकर उसने छुआ, वह कागज नहीं, किसी का हाथ था। उसने जल्दी से आँखों पर बँधी पट्टी हटाई। वह दादी का हाथ था जो सामने खड़ी मुस्कुरा रही थीं।

गुस्से से परी का चेहरा लाल हो गया। तमतमाते बोली- “दादी! आप बीच में क्यों आ गयीं! ये मेरा चित्र चुनने का आखिरी वक्त था। ”

दादी के चेहरे पर शरारत भरी मुस्कान थी- “तुमने चुन लिया। मेरे हाथ पर तुम रुकीं। ”

परी ने नजरें उठायीं। दादी ने बगैर बाँहों वाली घुटनों तक की लाल रंग की सुंदर ड्रेस पहनी थी। होंठों पर हल्की-सी लिपस्टिक भी थी। पूरी आस्तीन के लंबे गाउन में रहने वाली दादी के हाथ-पैर सब आज खुले दिखाई दे रहे थे।

असंख्य सिलवटें। हाथों में, पैरों में, गले में। स्तब्ध-सी परी ने आँखें झपझपायीं।

“है न परी, लिविंग हिस्ट्री! जिंदा इतिहास! ” खुलकर हँसते हुए दादी सामने रखी कुर्सी पर बैठ गईं।

“जिंदा इतिहास”, न जाने ये शब्द थे या टनटनाती घंटी। तूलिका चल पड़ी थी।

शरीर की लकीरों को कागज पर लकीरों में बदलते हुए परी की आँखें दादी की जीवंत हँसी को कैद कर रही थीं।

तमाम झुर्रियों में हँसी थी, लेकिन हँसी में कोई झुर्री नहीं थी।

****

डॉ हंसा दीप, 22 Farrell Avenue, North York, Toronto, ON – M2R1C8, Canada Ph. 001 647 213 1817 hansadeep8@gmail. com

कविता – नहीं बजा करती अब साँकल… – श्री राघवेन्द्र तिवारी

टिका दी गई कोने में
वह छड़ी और चश्मा
जिसे टेक कर चला किये
थी इसघर की अम्मा

सोचा करती भ्रमणहीन
वह फटी हुई छतरी
जो अम्मा के बिना पौर में
ऐसे ही पसरी

आले में रोया करता है
कलईदार लोटा
जो बिसूरता लगता है
अब बिर्रा का रोटा

कहीं कैरिया पड़ी
साथ में चूने की डिब्बी
तैरतैर जाती आँखों में
जैसे पनडुब्बी

वहीं तख्त पर रखा पवित्तर
रामायण गुटका
जिसके नीचे सन्दुकिया में
अलीगढ़ी लटका

कुल सम्पदा रही संचित
अम्माकी थी जिसमें
जिसे देख गृहवधू सोचती
कब हों सब रस्में

रिश्तेदारों की आमद पर
रोती घूँघट में
अम्माजैसी सास नहीं देखी
जीवन घट में

मुरझा गया गुलाब रोप
अम्मा जिसको गुजरी
मन की फुलबगिया सब
लगती हो जैसे उजरी

श्यामा अपनी थान खड़ी
है भूली पगुराना
घरकी ही खपरैल चुकाती
घरका हरजाना

गौरैया चुपचाप घोंसले में
बैठी स्थिर
वह मुंडेर का कौआ भी
भूला है अपना स्वर

नहीं बजा करती अब साँकल
घर की चौखट पर
सारी दरजें खिन्नमना हैं
दिखतीं फाटक पर

अब पड़ौस सुनने को व्याकुल
लाठी की ठकठक
और मोहल्ले की सुहागिने
देखरहीं एकटक

लेकिन अम्मा दूर गगन में
बनकरके चिड़िया
उड़कर गई वहाँ उनको घर
जो भी क बढ़िया

श्री राघवेन्द्र तिवारी, ई.एम. – 33, इंडस टाउन, राष्ट्रीय राजमार्ग-12, भोपाल- 462047, मो. 9424482812

कविता - चलो एक दीप जलाएं... – श्री सुरेश तन्मय

चलो! एक दीप जलाएं, कि दिवाली आई
और मीठे स्वयं हो जाएं, दिवाली आई।

जो हमें कल तलक पसंद नहीं थे, उनको
देख कर आज मुस्कुराएं, दिवाली आई।

किसी गरीब के, घर में जला आएं दीपक
किसी रोगी को दें दवाएं, दिवाली आई।

दूध से भर दें कटोरी, अनाथ शिशुओं की
जो हैं निर्धन उन्हें पढ़ायें, दिवाली आई।

भ्रष्ट, बेईमान, घूस खोर, चापलूसों को
सीख सब को सही सिखाएं, दिवाली आई।

जो कर रहे हैं मिलावट, सबक उन्हें यूं दें
साथ रावण के जलाएं, कि दिवाली आई।

ये जो आतंकी हैं, पनाह उनको जिनकी है
सब को बारूद से, उड़ाएं दीवाली आई।

अपने वेतन जो बढ़ा लें, स्वयं ही संसद में
उन्हें सड़कों पे फिर से लाएं, दिवाली आई।

पड़ोसियों की खुशी, लगने लगे जब अच्छी
तभी सचमुच हमारे घर में, दिवाली आई।

हो के तन्मय जो मन को साधने में होंगे सफल
पाएं संतोष धन तो, सच में दिवाली आई।

श्री सुरेश तन्मय, अलीगढ़/भोपाल, मो 9893266014

व्यंग्य - श्रद्धेय उल्लू जी – श्री वीरेन्द्र 'सरल'

पीठ पर भारी बोझ लादे गधा चुपचाप आगे बढ़ रहा था तभी सड़क के किनारे के पेड़ पर बैठा उल्लू उस पर तंज कसते हुए बोला-''गधा कहीं का?'' गधे ने ध्यान नहीं दिया पर उल्लू ने फिर जोर से चिल्लाकर कहा-''गधा कहीं का?'' और जोरदार ठहाका लगया।

अब गधे से रहा नहीं गया। वह सिर उठाकर उल्लू की ओर देखा और बोला-''उड़ा ले बेटा! जितना जी चाहे मजाक उड़ा ले अब जमाना उल्लुओं का है। यदि पहले वाला जमाना होता जब लोग कहते थे कि अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान तो तुझे खींचकर ऐसा तमाचा जड़ता कि तेरी नानी याद आ जाती पर अब तो लक्ष्मी मेहरबान तो उल्लू बुद्धिमान का युग आ गया है। पहले परिश्रमशीलता और विद्वता की पूजा होती थी। आज चालाकी और धूर्तता की पूजा होने लगी है। ''

उल्लू गधे की बात का उपहास करते हुए शान से सिर उठाया जैसे कह रहा हो हमसे बढ़कर कौन?

तभी गधे की नजर उल्लू के माथे पर पड़ी। उल्लू के मस्तक पर गुलाल का टीका लगा हुआ था। गधे का दिमाग चकराया पर मामला कुछ भी समझ में नहीं आया तो उसने पूछा-''अबे कहीं से अपना सम्मान कराके बैठा है या बाबागिरी के धंधे पर उतर आया है? तेरे माथे पर गुलाल का टीका? पहले जिस गुलाल टीका को देखकर श्रद्धा उमड़ती थी उसे देखकर आजकल संदेह उपजने लगा है। सच-सच बता, आखिर मामला क्या है। ''

उल्लू फिर जोरदार ठहाका लगाया और बोला-''अरे वाह रे गधे! भारी बोझ लादे जिन्दगी की बोझ ढो रहा है। इतनी मेहनत करने के बाद भी तुझे पेट भर दो जून की रोटी भी नसीब नहीं हो रही है और ज्ञान ऐसा बघार रहा है जैसे विद्वता का ठेका ले रखा है। तुझे तो इतना भी पता नहीं कि दीवाली नजदीक आ गई है अब माता लक्ष्मी यहां भ्रमण पर आने वाली है। उसी की तैयारी देखने यहां आया हूँ। लक्ष्मी भक्तों की भारी भीड़ ने मेरा खूब स्वागत-सत्कार किया है। बहुत से लोगों ने अपने घर में लक्ष्मी जी को लाने के लिए बकायदा एडवांस में मुझे पत्रम-पुष्पम प्रदान किया है। आजकल मेरी सिफारिश के बिना लक्ष्मी जी की कृपा किसी पर बरसने वाली नहीं हैं। समझा, गधा कहीं का। ''

गधा घृणा से जमीन पर थूकते हुए कहा-''अरे तू लक्ष्मी जी का वाहन है या कलिमल बाबा का एजेन्ट? जो घूस खाकर किसी पर लक्ष्मी जी की कृपा बरसवायेगा, नमकहराम। ''

उल्लू चिढ़कर बोला-''चल-चल अपना रास्ता नाप। बड़ा आया मुझे सिखाने वाला। नमक हलाली से तुझे पीठ पर डंडे की मार के सिवा और क्या मिला अब तक? ज्यादा होशियारी मत दिखा। ''

सचमुच अब गधे के पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा। वह चुपचाप सिर झुकाये आगे बढ़ गया। उल्लू एक बार फिर जोरदार ठहाका लगाया और लक्ष्मी निवास की ओर उड़ चला।

धीरे-धीरे दीवाली की रात भी आ गई। लक्ष्मी जी अपने भक्तों के घर आने के लिए तैयार हो गई। उल्लू मंद-मंद मुस्करा रहा था। क्योंकि रूट चार्ट वह स्वयं बनाया था। लक्ष्मी जी को किसके घर ले जाना है और किसके घर नहीं वह पहले से तय कर रख था।

अन्ततः लक्ष्मी जी उस पर सवार हुई और उल्लू उसे अपनी पीठ पर बिठाकर धरती पर उतरने लगा। धरती के नजदीक आते ही एक जोरदार धमाका हुआ। उल्लू का सन्तुलन बिगड़ गया। लक्ष्मी जी गिरते-गिरते बची। धूल और धुएं के गुबार से लक्ष्मी जी की आँखे कसकने लगी और धमाके के कारण उनका रक्तचाप बढ़ गया। दिल की धड़कने बढ़ गई। लक्ष्मी जी ने कहा- ''अरे उल्लू तू कहीं रास्ता तो नहीं भटक गया। मैंने तो तुझे अपने भक्तों के घर ले जाने के लिए कहा था पर लगता है तू मुझे किसी देश की सीमा पर ले आया। यहां तो युद्ध छिड़ गया है तभी तो यहां फायरिग हो रही है और बम विस्फोट हो रहे है। ''

उल्लू बोला-''नहीं मैम! यहां युद्ध नहीं छिड़ा है। ये धमाके तो आपके स्वागत में हो रहे हैं। आप शायद भूल गई हैं, यहां दीवली में आपके स्वागत-सत्कार की ऐसी ही परम्परा है। ''

लक्ष्मी जी ने व्यंग्य से कहा-''अच्छा तो यहां मुझे इक्कीस तोपों की सलामी दी जा रही है, है ना?"

उल्लू कंधे उचकाकर बोला-''ऐसा ही समझ लीजिए मैम। ''

बातचीत करते हुए अब लक्ष्मी जी धरती के बिल्कुल निकट आ गई थी। तभी उन्हें एक नौजवान एटम बम फोड़ते दिखा। आग लगाते समय असावधानी के कारण एटम बम पहले ही फट गया और वह नौजवान घायल हो गया। लक्ष्मी जी ने उल्लू से वहां थोड़ा रूकने के लिए कहा मगर उल्लू ने जवाब दिया-''माता जी यहां सब बापू की बातों को आत्मसात करके जीने वाले लोग हैं। आपको तो पता ही है कि बापू ने अपने तीन बंदरो के माध्यम से संदेश दिया था- " बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो और बुरा मत कहो। " ये युवक अपने आप को इस सिद्धांत में जीने लायक बना रहा है। धमाके के कारण इसकी श्रवण शक्ति कम होगी तो ये बुरा तो क्या अच्छा भी नहीं सुन पायेगा। आंखों की रोशनी चली जायेगी तो बुरा तो क्या अच्छा को भी नहीं देख सकेगा और यदि पटाखों के कारण घटित दुर्घटना में मारा जायेगा तो बुरा तो क्या अच्छा कहने के काबिल भी नहीं रहेगा। ऐसे सिरफरे युवकों को समझाना मुसीबत मोल लेना ही है। यहां समय बर्बाद करना उचित नहीं है। सीधे अपने भक्तों के घर चलिए। उन्हें दर्शन देकर कृपा बरसाइये और उन्हें कृतार्थ कीजिए। ''

उल्लू अपने रूट चार्ट के हिसाब से लक्ष्मी जी को लेकर आगे बढ़ने लगा।

उल्लू लक्ष्मी जी को लेकर सीधे महलों की ओर उड़ रहा था। रास्ते में छोटी-छोटी झुग्गी झोपड़ियां दिखाई दे रही थी। नंग-धड़ग बच्चे, असहाय बुढे, बेरोजगारी के कारण जीवन से हताश युवा और महंगाई की मार से अधमरी गृहणियां दिखाई दे रही थी। लक्ष्मी जी को उन पर दया आ रही थी तो उन्होंने उल्लू से फिर वहां कुछ देर रूकने के लिए कहा।

उल्लू उनकी बातों को टालते हुए बोला-''मैडम! ये लोग ना तो रिश्वत खाते हैं। ना बेईमानी करते हैं। ना जमाखोरी करते हैं और ना मिलावट खोरी करते है। ना किसी को धोखा देते हैं और ना ही किसी को बेवकूफ

बनाते है बस दिनभर जी तोड़ परिश्रम भर करते हैं। अब आप ही बताइये यदि आप इन पर भी कृपा बरसाने लगेंगी तो आपके ऐसे भक्तों पर क्या बीतेगी जो बेईमानी के पैसे से आपके लिए घी के दीये जलाते है। जो आपको पाने के लिए मनुष्यता का गला घोंट सकते है। गरीब का खून पी सकते है। गरीबों के हक पर डाका डाल सकते है। अपने ईमान को सरे आम बाजार में नीलाम कर सकते है। ऐसे भक्तों के समर्पण का क्या होगा। जरा उनका भी तो ख्याल रखिये। ‘‘

उल्लू के तर्क के सामने लक्ष्मी जी निरुत्तर हो गईं। उल्लू मन ही मन मुस्कराते हुए महलों की ओर उड़ चला।

लक्ष्मी जी को लाने के लिए उल्लू को पहले से ही घूस खिलाये हुए भक्त गण बड़े प्रसन्न हो रहे थे। लक्ष्मी जी स्वयं आश्चर्य चकित थी। क्योंकि ऐसे भक्तगण लक्ष्मी जी से ज्यादा स्वागत-सत्कार उल्लू का कर रहे थे। कोई उल्लू की आरती गा रहा था तो कोई उसको प्रसाद अर्पित कर रहा था। लक्ष्मी जी को मुश्किल से एक भक्त थोड़ा असमजंस में नजर आया जो शायद सोच रहा था कि लक्ष्मी उल्लू दोउ खड़े काके लागू पायं सोच रहा था पर कुछ ही देर में वह भक्त भी उल्लू के कदमों पर झुक गया। शायद वह इस दोहे के आखिरी पंक्ति को आत्मसात कर कर गया था।

उल्लू के बताये हुए भक्तों पर अपनी कृपा बरसाकर लक्ष्मी जी लौटने लगी। लक्ष्मी जी ने जिज्ञासावश उल्लू से पूछा-‘‘क्यों रे उल्लू! क्या बात है जो आजकल यहां तेरा खूब स्वागत-सत्कार हो रहा है। ‘‘

उल्लू मुस्कुराते हुए बोला-‘‘माता! आपकी कृपा से मैं आजकल श्रद्धेय हो गया हूँ। अब सब मुझे श्रद्धेय उल्लू जी कहकर सम्मान देते है। सब आपकी ही कृपा तो है माता। ‘

श्री वीरेन्द्र सरल, ग्राम- बोडरा, पोष्ट-भोथीडीह, व्हाया-मगरलोड, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़), मो 7828243377

लेख - हिंदू उत्सव शिरोमणि दीपावली - श्री सुरेश पटवा

दीपावली पर्व का भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक सभी दृष्टियों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात हे भगवान! मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलिए। यह उपनिषदों का दार्शनिक सूत्र है। यह पवमान मन्त्र या पवमान अभयारोह बृहदारण्यक उपनिषद में विद्यमान एक मन्त्र है। यह मन्त्र मूलतः सोम यज्ञ की स्तुति में यजमान द्वारा गाया जाता था।

ॐ असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

(बृहदारण्यकोपनिषद् 1. 3. 28)

अर्थ

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।

मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो॥

इस दार्शनिक मंत्र का व्यावहारिक अर्थ समझते हैं।

असत्य याने माया से सत्य ब्रह्म की ओर, अज्ञानी अंधकार से ज्ञान प्रकाश की ओर, मृत्यु भय से निर्भयता की ओर ले चलो।

मृत्यु से बचकर कोई भी अमर नहीं हो सकता लेकिन देह में अनश्वर ब्रह्म की प्राणसत्ता का ज्ञान मृत्यु भय से मुक्त करता है। देह समाप्त होती है और आत्मा परमात्मा में विलीन होती है। यही अनादि-अनंत सत्य अमरत्व की अनुभूति है।

हिन्दुओं के योग, वेदान्त, और सांख्य दर्शन में यह विश्वास है कि इस भौतिक शरीर और मन से परे वहां कुछ है जो शुद्ध, अनन्त, और शाश्वत है जिसे आत्मन् या आत्मा कहा गया है। दीपावली, आध्यात्मिक अन्धकार पर आन्तरिक प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का उत्सव है।

दीपावली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात 'दिया' व 'आवली' अर्थात 'क़तार' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। कुछ लोग "दीपावली" तो कुछ "दिपावली" ; वही कुछ लोग "दिवाली" तो कुछ लोग "दीवाली" का प्रयोग करते है। यहाँ यह जान लेना जरूरी है कि प्रत्येक शुद्ध शब्द का प्रयोग उसके अर्थ पर निर्भर करता है। शुद्ध शब्द "दीपावली" है, जो 'दीप'(दीपक) और 'आवली'(पंक्ति) से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है 'दीपों की पंक्ति'। 'दीप' से 'दीपक' शब्द की रचना होती है। 'दिवाली' शब्द का प्रयोग भी गलत है क्योंकि उपयुक्त शब्द 'दीवाली' है। 'दिवाली' का तो इससे भिन्न अर्थ है। जिस पट्टे/पट्टी को किसी यंत्र से खींचकर खराद सान आदि चलाये जाते है, उसे दिवाली कहते है इसका स्थानिक प्रयोग दिवारी है और 'दिपाली'-'दीपालि' भी। दीपावली का अपभ्रंश रूप 'दीवाली' है दिवाली नहीं; परंतु विशुद्ध एवं उपयुक्त शब्द दीपावली है। इसके उत्सव में घरों के द्वारों, घरों व मंदिरों पर लाखों प्रकाशकों को प्रज्वलित किया जाता है।

दीपावली का धार्मिक महत्व हिंदू दर्शन, क्षेत्रीय मिथकों, किंवदंतियों, और मान्यताओं पर निर्भर करता है। भारत में प्राचीन काल से दीपावली को विक्रम संवत के कार्तिक माह में वर्षा काल के बाद के एक त्योहार के रूप में दर्शाया गया। पद्म पुराण और स्कन्द पुराण में दीपावली का उल्लेख मिलता है। माना जाता है कि ये ग्रन्थ पहली सहस्त्राब्दी के दूसरे भाग में किन्हीं केंद्रीय पाठ को विस्तृत कर लिखे गए थे। दीये (दीपक) को स्कन्द पुराण में सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है, सूर्य जो जीवन के लिए प्रकाश और ऊर्जा का लौकिक दाता है और जो हिन्दू कैलंडर अनुसार कार्तिक माह में अपनी स्थिति बदलता है। कुछ क्षेत्रों में हिन्दू दीपावली को यम और नचिकेता की कथा के साथ भी जोड़ते हैं। नचिकेता की कथा जो सही बनाम गलत, ज्ञान बनाम अज्ञान, सच्चा धन बनाम क्षणिक धन आदि के बारे में बताती है। यह कथा पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व उपनिषद में लिखित है।

कई हिंदु दीपावली को भगवान विष्णु की पत्नी तथा उत्सव, धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ मानते हैं। दीपावली का पांच दिवसीय महोत्सव देवताओं और राक्षसों द्वारा दूध के लौकिक सागर के मंथन से पैदा हुई लक्ष्मी के जन्म दिवस से शुरू होता है। दीपावली की रात वह दिन है जब लक्ष्मी ने अपने पति के रूप में विष्णु को चुना और फिर उनसे शादी की। लक्ष्मी के साथ-साथ भक्त बाधाओं को दूर करने के प्रतीक गणेश; संगीत, साहित्य की प्रतीक सरस्वती; और धन प्रबंधक कुबेर को प्रसाद अर्पित करते हैं। कुछ दीपावली को विष्णु की वैकुण्ठ में वापसी के दिन के रूप में मनाते है। मान्यता है कि इस दिन लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं और जो लोग उस दिन उनकी पूजा करते है वे वर्ष भर दौरान मानसिक, शारीरिक दुखों से दूर सुखी रहते हैं।

श्री सुरेश पटवा, भोपाल, मध्य प्रदेश

कहानी – दीपपर्व – पाँच लघुकथाएँ… – श्री संजय भारद्वाज

(1) धनतेरस

इस बार भी धनतेरस पर चाँदी का सिक्का खरीदने से अधिक का बजट नहीं बचा था उसके पास। ट्रैफिक के चलते सिटी बस ने उसके घर से बाजार की 20 मिनट की दूरी 45 मिनट में पूरी की। बाजार में भीड़ ऐसी कि पैर रखने को जगह नहीं। भारतीय समाज की विशेषता यही है कि पैर रखने की जगह न बची होने पर भी हरेक को पैर टिकाना मयस्सर हो ही जाता है।

भीड़ की रेलमपेल ऐसी कि दुकान, सड़क और फुटपाथ में कोई अंतर नहीं बचा था। चौपहिया, दुपहिया, दोपाये, चौपाये सभी भीड़ का हिस्सा। साधक, अध्यात्म में वर्णित आरंभ और अंत का प्रत्यक्ष सम्मिलन यहाँ देख सकते थे।

…उसके विचार और व्यवहार का सम्मिलन कब होगा? हर वर्ष सोचता कुछ और…और खरीदता वही चाँदी का सिक्का। कब बदलेगा समय? विचारों में मग्न चला जा रहा था कि सामने फुटपाथ की रेलिंग को सटकर बैठी भिखारिन और उसके दो बच्चों की कातर आँखों ने रोक लिया। …खाना खिलाय दो बाबूजी। बच्चन भूखे हैं।..गौर से देखा तो उसका पति भी पास ही हाथ से खींचे जानेवाली एक पटरे को साथ लिए पड़ा था। पैर नहीं थे उसके। माज़रा समझ में आ गया। भिखारिन अपने आदमी को पटरे पर बैठाकर उसे खींचते हुए दर-दर रोटी जुटाती होगी। आज भीड़ में फँसी पड़ी है। अपना चलना ही मुश्किल है तो पटरे के लिए कहाँ जगह बनेगी?

…खाना खिलाय दो बाबूजी। बच्चन भूखे हैं।…स्वर की कातरता बढ़ गई थी।..पर उसके पास तो केवल सिक्का खरीदने भर का पैसा है। धनतेरस जैसा त्योहार सूना थोड़े ही छोड़ा जा सकता है।…वह चल पड़ा। दो-चार कदम ही उठा पाया क्योंकि भिखारिन की दुर्दशा, बच्चों की टकटकी लगी उम्मीद और स्वर में समाई याचना ने उसके पैरों में लोहे की मोटी सांकल बाँध दी थी। आदमी दुनिया से लोहा ले लेता है पर खुदका प्रतिरोध नहीं कर पाता।

पास के होटल से उसने चार लोगों के लिए भोजन पैक कराया और ले जाकर पैकेट भिखारिन के आगे धर दिया।

अब जेब खाली था। चाँदी का सिक्का लिए बिना घर लौटा। अगली सुबह पत्नी ने बताया कि बीती रात सपने में उसे चाँदी की लक्ष्मी जी दिखीं।

(2) मृत्युपर्व

दो-तीन दिन से वे मृत्युशय्या पर हैं। बेटा ऑफिस से छुट्टी लेकर घर पर है। उसकी दोनों बहनें भी आ चुकी हैं। रिश्तेदार भी जुटने लगे हैं।

वे भरपूर जीवन जी चुके हैं। तीसरी पीढ़ी में भी कुछ की शादियाँ हो चुकी हैं। पकी आयु, चलने की बेला, फल के टपकने की प्रतीक्षा! दो बार तो लगा कि गए पर डॉक्टर ने जाँच कर बताया कि अभी हैं। शॉल ओढ़ाने को आतुर लड़के के ससुराल से छह-सात बार फोन आ चुके। आखिर बेटी के घर का मामला है। पहुँचने में भी बारह घंटे से अधिक का समय लगता है। बहू ने अपने घर में बताया कि अभी मरे नहीं हैं। फिर से जब लक्षण दिखेंगे, फौरन बताऊँगी।

तीसरे दिन की भोर चढ़ते-चढ़ते हर रिश्तेदार उद्विग्न हो चुका था। घर में इतने सारे रिश्तेदारों को पाकर बहू और पतोहू तो पहले ही आपा खोये बैठी थीं। हरेक शून्य में घूरता, एक-दूसरे को संभावना की दृष्टि से देखता। धीरे-धीरे बेचैनी बढ़ती गई। जिस काम के लिए आये थे, उसके सम्पन्न न होने से हताशा झलकने लगी थी। एकाध रिश्तेदारों ने तो लौट जाने का मन बना लिया।

...'न जाने किस में जान अटकाये पड़े हैं बुढ़ऊ?'

...'बेटा-बेटी, नाती-पोता, सब तो आ लिये।'

...'बुढ़िया को गये भी बरसों बीत गये।

...' कहीं कोई पुरानी कहानी तो नहीं जो अब याद आ रही हो!'

बातें भी समाप्त हो गईं। शून्य फिर जस की तस। पूरे वातावरण में अजीब-सी मुर्दनगी छाई थी। विकलता, नाराज़गी, बेचैनी, अनवरत प्रतीक्षा।

एकाएक लगा कि छाती साँस लेने-छोड़ने के लक्षण नहीं दिखा रही है। आनन-फानन में डॉक्टर को बुलाया गया। धड़कन जाँचकर, नब्ज़ हाथ में लेकर डॉक्टर ने जवाब दे दिया।

इस जवाब ने वातावरण में चैतन्य फूँक दिया। फोन खनखनाने लगे। अगली तैयारी शुरू हो चुकी थी। जीवन मानो लौट आया था।

(3) आग

दोनों कबीले के लोगों ने शिकार पर अधिकार को लेकर एक-दूसरे पर धुआँधार पत्थर बरसाए। बरसते पत्थरों में कुछ आपस में टकराए। चिंगारी चमकी। सारे लोग डरकर भागे।

बस एक आदमी खड़ा रहा। हिम्मत करके उसने फिर एक पत्थर दूसरे पर दे मारा। फिर चिंगारी चमकी। अब तो जुनून सवार हो गया उसपर। वह अलग-अलग पत्थरों से खेलने लगा।

वह पहला आदमी था जिसने आग बोई, आग की खेती की। आग को जलाया, आग पर पकाया। एक रोज आग में ही जल मरा।

लेकिन वही पहला आदमी था जिसने दुनिया को आग से मिलाया, आँच और आग का अंतर समझाया। आग पर और आग में सेंकने की संभावनाएँ दर्शाईं। उसने अपनी ज़िंदगी आग के हवाले कर दी ताकि आदमी जान सके कि लाशें फूँकी भी जा सकती हैं।

वह पहला आदमी था जिसने साबित किया कि भीतर आग हो तो बाहर रोशन किया जा सकता है।

(4) गोटेदार लहंगा

..सुनो।

...हूँ।

...एक गोटेदार लहँगा सिलवाना है.., कुछ झिझकते, कुछ सकुचाते हुए उसके बच्चों की माँ बोली।

....हूँ......हाँ...फिर सन्नाटा।

...अरे हम तो मजाक कर रहीं थीं। अब तो बच्चों के लिए करेंगे, जो करेंगे।...तुम तो यूँ ही मन छोटा करते हो...।

प्राइवेट फर्म में क्लर्की, बच्चों का जन्म, उनकी परवरिश, स्कूल-कॉलेज के खर्चे, बीमारियाँ, सब संभालते-संभालते उसका जीवन बीत गया। दोनों बेटियाँ अपने-अपने ससुराल की हो चलीं। बेटे ने अपनी शादी में ज़िद कर बहू के लिए जरीवाला लहंगा बनवा लिया था। फिर जैसा अमूमन होता है, बेटा, बहू का हो गया। आगे बेटा-बहू अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींचने लगे।

बगैर पेंशन की ज़िंदगी कुछ ही सालों में उसे मौत के दरवाज़े ले आई। डॉक्टर भी घर पर ही सेवा करने की कहकर संकेत दे चुका था।

उस शाम पत्नी सूनी आँखों से छत तक रही थी।

....डागदर-वागदर छोड़ो। देवी मईया तुम्हें ठीक रखेंगी। तुम तो कोई जरूरी इच्छा हो तो बताओ.., सच को समझते हुए धीमे-से बोली।

अपने टूटे पलंग की एक फटी बल्ली में बरसों से वह कुछ नोट खोंसकर जमा करता था। इशारे से निकलवाए।

....बोलो क्या मंगवाएँ? पत्नी ने पूछा।

....तुम गोटेदार लहंगा सिलवा लो..! वह क्षीण आवाज़ में बोला।

(5) मोक्ष

उसका जन्म मानो मोक्ष पाने के संकल्प के साथ ही हुआ था। जगत की नश्वरता देख बचपन से ही इस संकल्प को बल मिला। कम आयु में धर्मग्रंथों का अक्षर-अक्षर रट चुका था। फिर धर्मगुरुओं की शरण में गया। मोक्ष के मार्ग को लेकर संभ्रम तब भी बना रहा। कभी मार्ग की अनुभूति होती भी तो बेहद धुँधली। हाँ, धर्म के अध्ययन ने सम्यकता को जन्म दिया। अपने धर्म के साथ-साथ दुनिया के अनेक मतों के ग्रंथ भी उसने खंगाल डाले पर 'मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।' ... बचपन ने यौवन में कदम रखा, जिज्ञासु अब युवा संन्यासी हो चुका।

मोक्ष, मोक्ष, मोक्ष! दिन-रात मस्तिष्क में एक ही विचार लिए संन्यासी कभी इस द्वार कभी उस द्वार भटकता रहा।... उस दिन भी मोक्ष के राजमार्ग की खोज में वह शहर के कस्बे की टूटी-फूटी सड़क से गुज़र रहा था। मस्तिष्क में कोलाहल था। एकाएक इस कोलाहल पर वातावरण में गूँजता किसी कुत्ते के रोने का स्वर भारी पड़ने लगा। उसने दृष्टि दौड़ाई। रुदन तो सुन रहा था पर कुत्ता कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। कुत्ते के स्वर की पीड़ा संन्यासी के मन को व्यथित कर रही थी। तभी कोई कठोर वस्तु संन्यासी के पैरों से आकर टकराई। इस बार दैहिक पीड़ा से व्यथित हो उठा संन्यासी। यह एक गेंद थी। बच्चे सड़क के उस पार क्रिकेट खेल रहे थे। बल्ले से निकली गेंद संन्यासी के पैरों से टकराकर आगे खुले पड़े एक ड्रेनेज के पास जाकर ठहर गई थी।

देखता है कि आठ-दस साल का एक बच्चा दौड़ता हुआ आया। वह गेंद उठाता तभी कुत्ते का आर्तनाद फिर गूँजा। बच्चे ने झाँककर देखा। कुत्ते का एक पिल्ला ड्रेनेज में पड़ा था और मदद के लिए गुहार लगा रहा था। बच्चे ने गेंद निकर की जेब में ठूँसी। क्षण भर भी समय गँवाए बिना ड्रेनेज में लगभग आधा उतर गया। पिल्ले को बाहर निकाल कर ज़मीन पर रखा। भयाक्रांत पिल्ला मिट्टी छूते ही कृतज्ञता से पूँछ हिला-हिलाकर बच्चे के पैरों में लोटने लगा।

अवाक संन्यासी बच्चे से कुछ पूछता कि बच्चों की टोली में से किसीने आवाज़ लगाई, 'ए मोक्ष, कहाँ रुक गया? जल्दी गेंद ला।' बच्चा दौड़ता हुआ अपनी राह चला गया।

संभ्रम छँट चुका था। संन्यासी को मोक्ष की राह मिल चुकी थी।

श्री संजय भारद्वाज,

अध्यक्ष– हिंदी आंदोलन परिवार ☆ **सदस्य**– हिंदी अध्ययन मंडल, पुणे विश्वविद्यालय, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज (स्वायत्त) अहमदनगर ☆ **संपादक**– हम लोग ☆ **पूर्व सदस्य**– महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ☆ **ट्रस्टी-** जाणीव, ए होम फॉर सीनियर सिटिजन्स ☆

फ्लैट-1, पाँचवीं मंज़िल, हिमगिरिनाथ सोसायटी, 486-ए, एलफिंस्टन रोड, खडकी, पुणे-411003 (महाराष्ट्र)

मोबाइल– 9890122603 संजयउवाच@डाटामेल.भारत writersanjay@gmail.com

लेख - मनन, अनुसरण, अनुभव – डॉ मुक्ता

ज्ञान तीन प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है– प्रथम मनन, जो सबसे श्रेष्ठ है, द्वितीय अनुसरण सबसे आसान है और तृतीय अनुभव जो कटु व कठिन है– सफलता प्राप्ति के मापदंड हैं। इंसान संसार में जो कुछ देखता-सुनता है, अक्सर उस पर चिंतन-मनन करता है। उसकी उपयोगिता- अनुपयोगिता, औचित्य-अनौचित्य, ठीक-ग़लत लाभ-हानि आदि विभिन्न पहलुओं के बारे में सोच-विचार करके ही निर्णय लेता है– ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान कहलाता है। यह सर्वश्रेष्ठ माध्यम है तथा किसी ग़लती की संभावना नहीं रहती। दूसरा माध्यम है अनुसरण–यह अत्यंत सुविधाजनक है। इंसान महान् विद्वत्तजनों का अनुसरण कर सकता है। इसमें किसी प्रकार की ग़लती की संभावना नहीं रहती तथा इसे अभ्यास की संज्ञा भी दी जाती है। तृतीय अनुभव जो एक कटु मार्ग है, जिसका प्रयोग वे लोग करते हैं, जो दूसरों पर विश्वास नहीं करते तथा अपने अनुभव से ही सीख लेते हैं। वे उससे होने वाले परिणामों से अवगत नहीं होते। वे यह जानते हैं कि इससे उनका लाभ होने वाला नहीं, परंतु वे उसका अनुभव करके ही साँस लेते हैं। ऐसे लोगों को हानि उठानी पड़ती है तथा आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

विद्या रूपी धन बाँटने से बढ़ता है। परंतु इसके लिए ग्रहणशीलता का मादा होना चाहिए तथा उसमें इच्छा भाव होना अपेक्षित है। मानव की इच्छा-शक्ति यदि प्रबल होती है, तभी वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है तथा जो वह सीखना चाहता है, उसमें और अधिक जानने की प्रबल इच्छा जाग्रत होती है। वास्तव में ऐसे व्यक्ति महान् आविष्कारक होते हैं। वे निरंतर प्रयासरत रहते हैं तथा पीछे मुड़कर कभी नहीं देखते। ऐसे लोगों का अनुसरण करने वाले ही ठीक राह पर चलते हैं; कभी पथ-विचलित नहीं होते। सो! अनुसरण सुगम मार्ग है। तीसरी श्रेणी के लोग कहलाते मूर्ख कहलाते हैं, जो दूसरों की सुनते नहीं और उनमें सोचने-विचारने की शक्ति होती नहीं होती। वे अहंवादी केवल स्वयं पर विश्वास करते हैं तथा सब कुछ जानते हुए भी वे अनुभव करते हैं। जैसे आग में कूदने पर जलना अवश्यम्भावी है, परंतु फिर भी वे ऐसा कर गुज़रते हैं।

मानव में इन चार गुणों का होना आवश्यक है– मुस्कुराना, प्रशंसा करना, सहयोग करना व क्षमा करना। यह एक तरह के धागे होते हैं, जो उलझ कर भी क़रीब आ जाते हैं। दूसरी तरफ रिश्ते हैं जो ज़रा सा उलझते ही टूट जाते हैं। जो व्यक्ति जीवन में सदा प्रसन्न रहता है तथा दूसरों की प्रशंसा कर उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करता है, सबके हृदय के क़रीब होता है। इतना ही नहीं, जो दूसरों का सहयोग करके प्रसन्न होता है, क्षमाशील कहलाता है। उसकी हर जगह सराहना होती है. वास्तव में यह उन धागों के समान है, जो उलझ कर भी क़रीब आ जाते हैं और रिश्ते ज़रा से उलझते ही टूट जाते हैं। वैसे रिश्तों की अहमियत आजकल कहीं भी रही नहीं। वे तो दरक़ कर टूट जाते हैं काँच की मानिंद।

अविश्वास आजकल सब रिश्तों पर हावी है, जिसके कारण उसमें स्थायित्व होता ही नहीं। मानव आजकल अपने दु:ख से दु:खी नहीं रहता, दूसरों को सुखी देखकर अधिक दु:खी व परेशान रहता है, क्योंकि उसमें

ईर्ष्या भाव होता है। वह निरंतर यह सोचता रहता है कि जो दूसरों के पास है, उसे क्यों नहीं मिला। सो! वह अकारण हरपल दुविधा में रहता है तथा अपने भाग्य को कोसता रहता है, जबकि वह इस तथ्य से अवगत होता है कि इंसान को समय से पहले व भाग्य से अधिक कुछ भी नहीं मिल सकता। इसलिए उसे सदैव समीक्षा करनी चाहिए तथा निरंतर कर्मशील रहना कारग़र है, क्योंकि जो उसके भाग्य में है, अवश्य मिलकर रहेगा। सो!

मानव को प्रभु पर विश्वास करना चाहिए। 'प्रभु सिमरन कर ले बंदे! यही तेरे साथ जाएगा।' 'कलयुग केवल नाम आधारा' अर्थात् कलयुग में केवल नाम स्मरण ही प्रभु-प्राप्ति का एकमात्र सुगम उपाय है। अंतकाल यही उसके साथ जाता है तथा शेष यहीं धरा रह जाता है।

मौन वाणी की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है और सर्वाधिक शक्तिशाली है। इसमें नौ गुण निहित रहते हैं। इसलिए मानव को यह शिक्षा दी जाती है कि उसे तभी मुँह खोलना चाहिए, जब उसके शब्द मौन से बेहतर हों अन्यथा उसे मौन को सर्वश्रेष्ठ आभूषण समझ धारण करना चाहिए। सत्य व प्रिय वचन वचन बोलना ही वाणी का सर्वोत्तम गुण हैं और धर्मगत अथवा कटु व व्यंग्य वचनों का प्रयोग भी हानि पहुंचा सकता है। इसलिए हमें विवाद में नहीं, संवाद में विश्वास करना चाहिए, क्योंकि 'अजीब चलन है ज़माने का/ दीवारों में आएं दरारें तो/ दीवारें गिर जाती हैं। पर रिश्तों आए दरार तो/ दीवारें खड़ी हो जाती हैं।' इसलिए हमें दरारों को दीवारों का रूप धारण करने से रोकना चाहिए। संवाद के माधुर्य के लिए संबोधन की मधुरता अनिवार्य है। शब्दों का महत्व संबंधों को जीवित रखने की संजीवनी है। सो! संबंध तभी बने रहेंगे, यदि संबोधन में माधुर्य होगा, क्योंकि प्रेम वह चाबी है, जिससे हर ताला खुल सकता है।

'बहुत से रिश्ते तो इसलिए खत्म हो जाते हैं, क्योंकि एक सही बोल नहीं पाता और दूसरा सही समझ नहीं पाता।' इसके लिए जहाँ वाणी माधुर्य की आवश्यकता होती है, वहीं उसे सही समझने का गुण भी आवश्यक है। यदि हमारी सोच नकारात्मक है तो हमें ठीक बात भी ग़लत लगना स्वाभाविक है। इसलिए रिश्तों में गर्माहट का होना आवश्यक है और हमें उसे दर्शाना भी चाहिए। जो भी हमें मिला है, उसे खुशी से स्वीकारना चाहिए। मुझे स्मरण हो रहे हैं भगवान कृष्ण के यह शब्द 'मैं विधाता होकर भी विधि के विधान को नहीं टाल सका। मेरी चाह राधा थी और चाहती मुझे मीरा थी, परंतु मैं रुक्मणी का होकर रह गया। यह विधि का विधान है।' सो! होइहि वही जो राम रचि राखा।

रिश्ते ऐसे बनाओ, जिनमें शब्द कम, समझ ज़्यादा हो। जो इंसान आपकी भावनाओं को बिना बोले ही समझ जाए, वही सर्वश्रेष्ठ होता है। सो! कठिन समय में जब मन से धीरे से आवाज़ आती है कि सब अच्छा ही होगा। वह आवाज़ परमात्मा की होती है। इसलिए मानव को मनन करना चाहिए तथा संतजनों के श्रेष्ठ वचनों का अनुसरण करना चाहिए। सत्य में विश्वास कर आगे बढ़ना चाहिए तथा उनके अनुभव से सीखना अर्थात् अनुसरण करना सर्वोत्तम है। व्यर्थ व अकारण अनुभव करने से सदैव मानव को हानि होती है।

डा. मुक्ता, माननीय राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत, पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी#239,सेक्टर-45,

गुरुग्राम-122003 ईमेल: drmukta51@gmail.com, मो• न•...8588801878

लेख - सीताहरण के अंतरभेद प्रो. (डा) राजेश श्रीवास्तव

मैं अक्सर सोचता हूं कि श्रीराम के अवतार की तरह ही सीता अवतरण के पीछे भी कोई विशेष कारण रहा है? क्या सीताहरण की घटना भी पूर्व निर्धारित थी?

वाल्मीकि और अन्यान्य मुनियों ने भविष्य में राम के आगमन की घटना को पूर्व में ही जान लिया था। शरभंग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य, भारद्वाज, गौतम जैसे अनेक मुनि अपने आश्रमों में केवल राम की प्रतीक्षा में ही तप कर रहे थे। स्वयंप्रभा और शबरी वर्षों से राम की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। तो फिर सब कुछ जान लेने वाले उन मुनियों ने सीताहरण की घटना को भी अवश्य ही पूर्व में जान लिया होगा।

और फिर जब सीताहरण हुआ तो ऋषितुल्य कुल समाज के रामायणकारों ने इस विशद घटना को अलग-अलग तरह से देखा और दिखाया। तभी तो विश्व रामकथा में सीताहरण का प्रसंग इतने वैविध्यपूर्ण रूप में देखने को मिलता है।

मैं चौंक जाता हूं जब रावण संन्यासी के वेष में आकर सीता से कहता है कि मार्ग में श्रीराम को भरत मिल गए हैं। राम ने उस मृग को पकड़ लिया है और अयोध्या चले गए हैं। उन्होंने मुझे आपको लेने के लिए भेजा है।

सीता उस संन्यासी का विश्वास कर विमान पर चढ़ जाती हैं।

(नृसिंह पुराण)

आश्चर्य चूडामणि नाटक आठवीं शताब्दी का ग्रंथ है शक्तिभद्र द्वारा रचित। कवि ने अद्भुत विचार किया है। राम और लक्ष्मण स्वर्णमृग के पीछे गए हैं। तब रावण और उसका सारथी राम और लक्ष्मण के वेष में सीता के सामने आते हैं। और सारथी (लक्ष्मण) रावण (राम) से कहता है कि भरत का राज्य संकट में है। देवताओं ने यह रथ भेजा है। तीनों रथ पर चढ़ जाते हैं। शूर्पणखा सीता के वेष में राम से वार्तालाप करती है और मारीच राम के वेष में लक्ष्मण से।

गुणभद्र की जैन रामायण की रामकथा उत्तर पुराण से यद्यपि अनेक असहमतिया हो सकती हैं किंतु सीताहरण की घटना तो बिल्कुल अलग है। राम के स्वर्णमृग के पीछे जाने पर रावण राम का रूप रखकर सीता के पास जाकर यह कहता है कि अब घर जाने का समय आ गया है। पुष्पक पालकी के रूप में बदल जाता है। लक्ष्मण तो यहां है ही नहीं।

विचित्रकथा गढ़ने का अधिकार तो किसी को भी है। मैं कहूं कि रावण दो सिर वाले मृग का रूप ले लेता है और सीता उसके चर्म को प्राप्त करने की इच्छा करती है। राम के वनवास की शर्तों में उन्हें वन में वल्कल वस्त्र और मृगचर्म धारण करना था। इस मृग का चर्म भी सीता ने इसीलिए चाहा था। तो यह कथा भी दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध कथा ही है।

संस्कृत नाटकों में प्रायः इसी तरह अनेक प्रसंगों की कल्पना की गई है। रामचरित मानस में सीता के हरण की घटना का पूर्व संकेत पाकर राम सीता को अग्नि में निवास करने को कहते हैं और उसके स्थान पर छाया को रख देते हैं।

तुम्ह पावक मँह करो निवासा। जौं लगी करौं निसाचर नासा।।

निज प्रतिबिंब राखि तँह सीता। तैसेहि सील- रूप- सुविनीता।।

और तो और लक्ष्मण भी यह रहस्य नहीं जानते।

लक्ष्मण हूं यह मरम न जाना

(रामचरितमानस 3/ 23)

अध्यात्म रामायण में भी रावण केवल एक माया सीता का ही हरण करता है।

आनंद रामायणकार तो और भी विचित्र है। खर-दूषण वध के पश्चात राम सीता को तीन रूप में विभक्त हो जाने का आदेश देते हैं - रजो रूप में वह अग्नि में रहे, सत्व रूप में राम के वामांग में और तमोरूप में वन में।

आदिकवि वाल्मीकि ने जिस तरह सीताहरण की घटना का चित्रण किया तो वह किसी भी परवर्ती कवि को रास नहीं आया। क्योंकि रामकथा जिस उद्देश्य के साथ विकसित हो रही है उसमें सीता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह शक्तिस्वरुपा है। इसके संकेत यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं।

सीताहरण के प्रसंग की अनंत व्याख्याएं और तर्क- वितर्क हो सकते हैं। किंतु सम्पूर्ण वांग्मय में राम के अवतार के मूल में सीताहरण प्रसंग की पूर्व सूचना कहीं नहीं मिलती।

सीता के गुणों का आख्यान तो पुराणों से लेकर काव्य जगत का आधार है किंतु जीवन में सांस्कृतिक व्यवहार में सीता ने जो स्थान बनाया है वह भी ध्यान देने योग्य है।

बुंदेलखंड की संस्कृति में विवाह के अवसर पर सबकी हार्दिक इच्छा होती है-

दूलह राम, सीय दुल्हन-सी

त्याग, समर्पण, दया, प्रेम और स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति सीता। अपने बालकों को स्वयं शिक्षित कर इस योग्य बनाने वाली सीता कि वे अकेले ही अयोध्या की सेना को पराजित कर सकें।

सीता के व्यक्तित्व का एक पक्ष और है - वे वन में राम को परामर्श देती है और विरोध करती भी दिखाई देती हैं। सुतीक्ष्ण आश्रम से दंडकारण्य को जाते समय राम और लक्ष्मण जब शस्त्र धारण करते हैं तो वह कहती हैं- आपका इस तरह वन में शस्त्र धारण करना मुझे उचित प्रतीत नहीं होता। तपस्वी धर्म और क्षत्रिय धर्म का पालन एक साथ नहीं हो सकता। यह विरोधाभासी है। आप वन में तपस्वी के वेष में आए हैं तो शस्त्रों का अनावश्यक प्रयोग उचित प्रतीत नहीं होता। वन के सभी राक्षस अपराधी नहीं है। उनका वध क्यों?

राम सीता की शंका का समाधान अवश्य करते हैं किंतु हमारी वर्तमान न्याय व्यवस्था का भी यह पहला सूत्र है कि एक अपराधी भले मुक्त हो जाए किंतु किसी निरपराध को दंड नहीं मिलना चाहिए। सीता के इस विरोध के भी कई अर्थ हैं।

सीता की कौतुक लीला का वर्णन तुलसी इस प्रकार करते हैं -

जब श्रीराम को मनाने के लिए अयोध्यावासी चित्रकूट आए तो तीनों माताएं भी साथ थीं। तब सीताजी ने अपने ही भीतर से और रूप बनाए और तीनों की समान आदरपूर्वक सेवा की।

सिय सासु प्रति वेष बनाई, सादर करइ सरिस सेवकाई।

लखा न मरमुं राम बिनु काहू, माया सब सिय माया मोहू।

सीता की इस माया को केवल राम ही जान सके और कोई न जान सका।

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥

ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥

मैं सीता को भूमिपुत्री कहूं..... कवियों ने उन्हें भूमिजा कहा ही है। सीता रामकथा की आन्तरिक शक्ति हैं। मानस के बालकांड में तुलसीदास सीता को ब्रह्म की तीन क्रियाओ की संचालिका और आद्याशक्ति कहकर वंदना करते हैं तो इसके अर्थ अनंत व्याख्याओं के लिए प्रतीक्षित हैं।

उद्भवस्थिति संहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।

सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।

(जो उत्पत्ति, स्थिति और लय करने वाली हैं, समस्त क्लेशों को हर लेने वाली हैं, सभी का कल्याण करने वाली हैं, ऐसी श्रीरामप्रिया मां सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ।)

प्रो. (डा) राजेश श्रीवास्तव, निदेशक रामायण केंद्र भोपाल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, तीर्थस्थान एवम मेला प्राधिकरण भोपाल

व्यंग्य - 'एनजीओ' का नेटवर्क – श्री आशीष दशोत्तर

ये नए युग के नए एनजीओ हैं। इनका वर्क ही नेटवर्क है और नेटवर्क ही वर्क। इनका जीवन 'नेटवर्क नहीं तो वर्क नहीं' के सूत्र से संचालित होता है। ये ग्रेट हैं क्योंकि इनके पास नेट है। ये 'नेट जीवी औघड़' उर्फ़ एनजीओ हैं।

आप आटा खरीदते हैं लेकिन ये डाटा। आप जीवन की कोरी स्लेट पर किसी विषय पर लिखने में जितना वक्त गंवाते हैं, ये उतने समय में नेट पर उस विषय का पूरा इतिहास और वर्तमान निकाल कर उसके भविष्य का निर्धारण कर देते हैं। शिकारी अपना शिकार पकड़ने के लिए अक्सर नेट का इस्तेमाल करता है मगर इन्होंने इस 'नेट को अपनी इच्छा से ही स्वीकार किया। इसके बगैर ये कभी कुछ नहीं करते। इनका सारा वर्क ही नेट से होता है। इस नेट से बाहर ये निकल ही नहीं पाते। दिन-रात, सुबह-शाम लगे रहते हैं। 'होमवर्क' करते-करते कब ' वर्क फ्राम होम' करने लगते हैं पता नहीं चलता।

कभी सुनते थे कि 'सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं। ' लेकिन ये इसके बिल्कुल विपरीत हैं। ये सर कटा सकते हैं लेकिन सर उठा सकते नहीं। इनका सर हमेशा झुका हुआ ही रहता है। झुका भी इतना कि दाएं- बाएं, आमने-सामने किसी की ख़बर नहीं। सबसे बेख़बर। सबसे अनभिज्ञ। सबसे अनजान। इसके बाद भी इन का नेटवर्क तगड़ा होता है। ये अपने रिश्तेदारों को नहीं जानते, पड़ोसी को नहीं पहचानते, गली-मोहल्ले वाले को तो जानने का प्रश्न ही नहीं, मगर दूसरे शहरों और मुल्कों तक इनके तगड़े संबंध होते हैं। जिनसे फेस टू फेस मिलने से कतराते हैं, उन्हें फ्रेंडशिप रिक्वेस्ट भेज पौमाते हैं।

इनकी अपनी दुनिया है। उस दुनिया में कौन-कौन हैं इसकी ख़बर इन्हें भी नहीं। ये खुद से आगे कुछ देखते नहीं। इसलिए दूसरों को देखने का सवाल ही नहीं उठता। इनकी दुनिया अगर एक कुआ है तो ये उस कुए के मेंढ़क। मेंढक हैं मगर उछल-कूद नहीं करते। ये शांत किस्म के मेंढ़क है। चुप रहना, स्क्रीन के सामने बैठे रहना, बगैर स्नान वहीं ब्रेकफास्ट से डिनर तक सबकुछ कर लेना इनकी दिनचर्या में शामिल है। पूजा पाठ, ध्यान, व्यायाम, स्नान इनके लिए बकवास है। ये नई व्यवस्था के नए पहरेदार हैं।

इनसे कोई आस, उम्मीद रखना व्यर्थ है। इनके भरोसे रहने वाले घरों में ठीक समय पर न सब्ज़ी बनती है न ही दाल गलती है। ये हमेशा व्यस्त रहते हैं। अपने आप में मस्त रहते हैं। इनकी मस्ती किसी को नहीं भाती और किसी की स्टाइल इन्हें रास नहीं आती। ये इसी दुनिया के होकर भी दुनिया से अलग हैं। नेट इनके जीवन का आधार है, स्क्रीन इनका जीवन दर्शन। इन्हें प्रदर्शन में यकीन नहीं। इसलिए ये खुद से ही खुश रहते हैं। इनका इतना ही संसार है। अफसोस! ये हमारे भविष्य के आधार हैं।

श्री आशीष दशोत्तर, 12/2, कोमल नगर, बरबड़ रोड़ , रतलाम- 457001, मो. 9827084966

कविता - ।।मुक्तक।। दीपावली ।। रोशनी का अलौकिक पर्व ।। - श्री एस के कपूर

=1=

दीपावली का पर्व मानों कि दीपों की कतार है।
उमंगों की लौ में सजा हर कोना बाजार है।।
ज्योति पर्व की रोशनी और लक्ष्मी गणेश का पूजन।
अमावस्या के अन्धकार को मिटाने का त्यौहार है।।

=2=

दीवाली रात हज़ारों नई उम्मीदें जगाती है।
हमारी ऊर्जा चमक को कई गुना बढ़ाती है।।
हर दर हर कोना हो जाता रोशन।
अपनों को अपनों के ही करीब ले आती है।।

=3=

हर कोना गुलज़ार हो हर जगह हो चमकती।
पटाखों के शोर में मिलन की आवाज़ धमकती।।
लक्ष्मी गणेश आशीर्वाद लाए खुशियों की सौगात।
हर चेहरे पर खिल जाए नई रोशनी दमकती।।

=4=

अंधकार से केवल प्रकाश की ओर जाना है।
हर स्थान से बस तम को ही मिटाना है।।
यह दीप पर्व करे बुद्धि विवेक का उन्नयन।
इस दीपावली सम्पूर्ण राष्ट्र आलोकित कराना है।।

श्री एस के कपूर "श्री हंस", बरेली, उत्तर प्रदेश मोबाइल 9897071046 व्हाट्स ऐप 8218685464 कॉलिंग

लेख - तब और अब – श्री प्रदीप शर्मा

आपने अख़बारों में विज्ञापन देखें होंगे - तब और अब! एक तस्वीर में एक गंजे सज्जन खड़े हैं, और दूसरी में एक बाल वाले। यह हमारे तेल का कमाल है। कल जहां रेगिस्तान था, आज वहां फसल लहलहा रही है। फेयर एंड लवली के विज्ञापन में भी एक मुहांसे वाली और दूसरी ओर इटालियन टाइल्स जैसी चिकनी चुपड़ी सूरत। प्रकृति के सिद्धांत के विपरीत बूढे से जवान होइए। तब और अब में अंतर देखिए।

बुजुर्गों के किस्से कहानियों में तब का गुणगान होता था, और अब की आलोचना! उनके लिए वह गर्व करने वाला अंग्रेजों का जमाना था। चीजें इतनी सस्ती थी कि क्या बताएं! उनके परिवार में कोई न कोई रायबहादुर, जमींदार अथवा दीवान अवश्य निकल आता था। राजा साहब द्वारा दी गई तलवार दीवार पर लटकी रहती थी। शिकार के किस्से न हुए, तो किस्से ही क्या हुए। ।

मुझे भी यह अख्तियार है कि मैं तब और अब के किस्से सुनाऊं! रात होती तो आप सो जाते। दिन में तो केवल चाय ही बोरियत दूर कर सकती है। तो पेश हैं मेरे तब और अब के बोरियत भरे किस्से।

मुझे तब और अब में ज़्यादा कुछ बदला नज़र नहीं आता! तब भी मैं, मैं ही था, और आज भी मैं, मैं ही हूं। यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। लोग कल कुछ और थे, और आज कुछ और हैं।

जो समय के साथ बदला नहीं, वो इंसान नहीं। तो बताइए, मैं कौन हूं। ।

तब भी मेरे पास वे चीजें नहीं थीं, जो लोगों के पास थीं, और आज भी ऐसी कई चीजें, जो लोगों के पास है, मेरे पास नहीं है। तब हमारे पास फ्रिज नहीं था, लोगों के पास था। जिनके पास था, उनके फ्रिज के ऊपर एक डब्बा रखा रहता था, जिसे वोल्टेज स्टेबलाइजर कहते थे।

मैं उसकी कांपती सुई की ओर देखा करता। जब वोल्टेज कम ज़्यादा होता है तो स्टेबलाइजर उसे कंट्रोल कर लेता है। यही हाल तब के टीवी का था। बड़ी महंगी चीजें थीं, इसलिए स्टेबलाइजर भी जरूरी था।

मेरे घर जब तक फ्रिज और टीवी आया, वोल्टेज स्टेबलाइजर इन बिल्ट हो चुके थे। मेरे यहां तब भी स्टेबलाइजर नहीं था, आज भी नहीं है। लाइट तब भी जाता था, आज भी जाता है। लोग इन्वर्टर और जेनरेटर रखने लगा गए हैं। मेरे पास तब भी इन्वर्टर नहीं था, आज भी नहीं है। ।

एक समय लूना जितनी कॉमन थी, आज कार उतनी कॉमन हो गई है। लोग लूना से कार पर आ गए। मेरे पास तब लूना ज़रूर थी, लेकिन अब मेरे पास न लूना है, न कार है। बस, कभी सिटी बस है, तो कभी ग्यारह नंबर की बस। अब तो मेरे पास मेट्रो भी आ रही है।

तब और अब में जो सबसे महत्वपूर्ण है और जिसके लिए मुझे गर्व है, अभिमान है, फख्र है, घमंडवा है, वह यह, कि मेरी मुट्ठी तब भी बंद थी, और आज भी बंद है। कहते हैं, बंधी मुठ्ठी लाख की होती है। और इसका श्रेय मैं अपने पिताजी को देता हूं। मैंने उन्हें अपने जीवन में कभी किसी के आगे हाथ पसारते नहीं देखा। अगर उनका हाथ खुला, तो किसी को देने के लिए ही, मांगने के लिए नहीं।।

जो न नवीन हो, न पुरातन हो, तब भी वैसा ही हो, और अब भी वैसा ही हो, वह सनातन होता है। संसार चलता रहता है, इसलिए यह समय के साथ बदलता रहता है। मूल्य बदलते हैं, परिभाषाएं बदलती हैं, लोगों की फितरत बदलती है। जो आज जड़ दिखाई देता है, वह कभी चेतन था, जो आज चेतन है, वह कभी जड़ था।

सृष्टि के कुछ नियम है, कुछ मर्यादाएं हैं। सूरज पूरब से निकलता है, पश्चिम में अस्त होता है। ऋतुएं तीन हैं, सुर सात हैं। दो और दो चार होते हैं। जब दो और दो पांच होने लग जाएंगे, पूरब पश्चिम मिलने लग जाएंगे, रात रानी दिन में खिलने लगेगी, नियम टूट जाएंगे, मर्यादाएं भंग हो जाएंगी। तब और अब में फर्क मिट जाएगा। सनातन पर संकट छा जाएगा।।

एक वो भी दीवाली थी, एक ये भी दीवाली है। तब दस रुपए के पटाखों के लिए थैला ले जाना पड़ता था, अब ठेले भर पटाखे, सिर्फ paytm से आ जाते हैं। तब दीयों से रोशनी होती थी, अब बिजली की झालर से मॉल और भवन सजाए जाते हैं।

मिठाई तब भी बनती थी, आज भी बनती है। घर की सफाई तब भी होती थी, आज भी होती है। खुशियां कम ज़्यादा हो जाएं, कमरतोड़ महंगाई क्यों न हो जाए, खुशियों को गले लगाना मनुष्य का स्वभाव तब भी था, आज भी है। सुख दुख सनातन हैं। हम तब भी खुश थे, आज भी खुश हैं।

सूरज का रोज सुबह उगना, फूलों का सुबह खिलना, झरनों का निरंतर बहना, पक्षियों का चहचहाना क्या खुशियों का सबब नहीं ? हम क्यों सुबह के अभिवादन में सुप्रभात अथवा गुड मॉर्निंग ही कहते हैं, bad morning अथवा एक मनहूस सुबह नहीं कहते। हम जानते हैं, खुशियां ही जीवन की सकारात्मकता है। तब भी थी आज भी है। खुशियां बांटने से बढ़ती है। दीपावली की शुभकामनाएं। खुशियों से आपका जीवन जगमगाए।।

श्री प्रदीप शर्मा १०१, साहिल रिजेंसी, रोबोट स्क्वायर, MR 9, इंदौर मो 8319180002

लेख - दीपोत्सव : महत्व तथा सरोकार - श्री प्रखर दीक्षित

दीपोत्सव, या दीपावली, एक गहरा आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सरोकार रखने वाला पर्व है, जो अंधकार पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। आध्यात्मिक रूप से यह अज्ञानता के नाश व ज्ञान के आगमन का संदेश देता है। सांस्कृतिक रूप से यह रिश्तों में गर्माहट लाने तथा नई शुरुआत का प्रतीक है। सामाजिक रूप से यह परिवारिक एकता को बढ़ावा देता है। समाज में सुख-समृद्धि की कामना करता है।

आध्यात्मिक महत्व

बुराई पर अच्छाई की विजय:

यह पर्व भगवान श्री राम के 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटने और रावण पर उनकी विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जो अंधकार पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है।

ज्ञान का आगमन:

दीये जलाना अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने का प्रतीक है, जोकि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' (अंधकार की ओर नहीं, बल्कि प्रकाश की ओर जाओ) के उपनिषदीय संदेश को भी व्यक्त करता है।

लक्ष्मी पूजा:

दीपावली पर धन की देवी मां लक्ष्मी और धन के देवता कुबेर की पूजा की जाती है, जिससे घर में सुख, ऐश्वर्य, धन और शांति का वास होता है।

सांस्कृतिक महत्व

त्योहार का प्रतीक:

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, जो रोशनी, खुशियाँ और परंपराओं से जुड़ा है।

ननवल आरम्भ :

यह नई शुरुआत, आशा और उत्सव का प्रतीक है, जहाँ लोग पुराने गिले-शिकवे भुलाकर एक नई शुरुआत करते हैं।

धार्मिक एकता:

मात्र हिंदू ही नहीं, वरन सिख, बौद्ध और जैन धर्म के अनुयायी भी इस पर्व को मनाते हैं। जैन धर्म में यह महावीर के निर्वाण दिवस का प्रतीक है, तो सिख समुदाय इसे बन्दी छोड़ दिवस के रूप में मनाता है.

सामाजिक महत्व

पारिवारिक एकता:

दिवाली के दौरान परिवार के सदस्य एक साथ आते हैं, रिश्तों में गर्माहट लाते हैं और एकता व एकजुटता को मजबूत करते हैं।

सामाजिक सौहार्द:

यह त्योहार सामाजिक एकता और सामंजस्य को बढ़ावा देता है, जहाँ लोग एक-दूसरे को उपहार और मिठाइयाँ बांटते हैं।

सम्पन्नता की कामना:

व्यापारी वर्ग अपने प्रतिष्ठानों में मां लक्ष्मी और कुबेर का पूजन करते हैं और व्यापार में समृद्धि की कामना करते हैं।

समृद्धि का संदेश:

यह पर्व समाज में सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य की वृद्धि का भी प्रतीक है।

दीपोत्सव (दीपावली) से जुड़े शोध संदर्भों में प्राचीन हिंदू ग्रंथ जैसे पद्म पुराण, स्कन्द पुराण, भविष्योत्तर पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण और विष्णु पुराण शामिल हैं। सातवीं शताब्दी के राजा हर्ष की रचना नागानंद, नौवीं शताब्दी के लेखक राजशेखर की काव्यमीमांसा, ग्यारहवीं सदी के ईरानी यात्री अल-बरूनी के संस्मरण और १३वीं सदी के जैन स्कॉलर मेरुतुंग की प्रबंध चिंतामणि जैसे ऐतिहासिक ग्रंथों में भी इस त्योहार का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त, वात्स्यायन के कामसूत्र में यक्ष रात्रि का उल्लेख है, जिसे कुछ विद्वान दीपोत्सव की उत्पत्ति से जोड़ते हैं, वहीं सिख धर्म में गुरु हरगोबिंद के आगमन से भी इसका जुड़ाव है।

ग्रंथ और साहित्य संदर्भ

पुराण:

पद्म पुराण, स्कन्द पुराण, विष्णु पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण जैसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों में दीपावली का उल्लेख मिलता है।

ऐतिहासिक ग्रंथ:

सातवीं शताब्दी में राजा हर्ष वर्धन की रचना नागानन्द में दीपप्रतिपदोत्सव का उल्लेख है।

नौवीं शताब्दी के लेखक राजशेखर ने काव्यमीमांसा में दीपमालिका का वर्णन किया है।

ग्यारहवीं सदी के ईरानी यात्री अल-बरूनी के संस्मरणों में हिंदू लोगों द्वारा दीपावली मनाने का वर्णन है।

1305 ईस्वी में जैन स्कॉलर मेरुतुंग ने अपनी रचना प्रबंध चिंतामणि में कोल्हापुर के राजा की पत्नी द्वारा महालक्ष्मी की पूजा का उल्लेख किया है।

संस्कृत साहित्यः

वात्स्यायन के कामसूत्र में यक्ष रात्रि का उल्लेख है, जिससे कुछ विद्वान दीपोत्सव की उत्पत्ति जोड़ते हैं।

धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ

हिंदू धर्मः

यह त्योहार अंधकार पर प्रकाश की और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। कुछ क्षेत्रों में इसे भगवान राम के अयोध्या लौटने के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।

जैन धर्मः

जैन धर्म के अनुयायी इस त्योहार को धन की देवी लक्ष्मी की पूजा के रूप में मनाते हैं, जो भगवान महावीर की मृत्यु के समय से जुड़ा है।

सिख धर्मः अठारहवीं शताब्दी से, सिख धर्म में दीपावली को गुरु हरगोबिंद के ग्वालियर से अमृतसर लौटने की खुशी में मनाया जाता है।

अतः यह त्योहार भारत प्रायदीप सहित वैश्विक स्तर पर पूर्ण श्रद्धा, पावनता तथा मनोयोग से हर्षोल्लास के संग घर-घर सम्पन्न होता है।

इस दिन ख चल शकर के खिलौने, गट्टा, मिष्ठान आदि यजन अर्चन उपरांत देवार्पण करने टा विधाश है। तत्पशचात पटाखे आतिबाजी की गूंज और प्रकाश हमारे अंर्त के कलुष रुपी तमस विनाश कर देता है। समस्त बाल, युव वृद्ध महिलाऐं सानंद भगवती रमा कुबेर जी से आशीर्वाद पाते हैं।

श्री प्रखर दीक्षित, 27, शांतिदाता सदन, नेकपुर चौरासी, फतेहगढ़, जनपद-फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) पिन 209601

कविता – दीप भरोसे का – सुश्री सीमा देवेन्द्र

एक दीप जलाना भरोसे का इस बार
किसी भटके हुए मुसाफ़िर के लिए
ज्यादा रोशनी से चौंधिया जाती है आँखें
रास्ता साफ दिखाई नही देता!

एक दीप जलाना भरोसे का इस बार
तेज हवाओं में सम्भाल सके अपने आपको
हवाओं का रूख मोड़ देता है अक्सर
उजाले की दिशा को!

एक दीप जलाना भरोसे इस बार
बादल का बरसना रूका नही अभी
उसे सावन पसंद है
विचलित करेगा वो.. लौ को

एक दीप जलाना उस भरोसे का इस बार
जिसकी रोशनी में आप
अपने आप को देख सकें
के कलुषता मिट जाए!

और एक दीप जलाना
उस भरोसे का भी एस बार
जिसकी रोशनाई में सारा जग नहा जाए
मुहब्बत की सीमा के उस पार... जहां
दिल की बस्तियां जगमगा जाए।
दीप जलाना ज़रूर लेकिन भरोसे का... !

सुश्री सीमा देवेन्द्र, उज्जैन म प्र

कविता – संवेदना – सुश्री मनवीन कौर पाहवा

यदि तुम छू सको किसी की वेदना
हृदय में हो थोड़ी सी संवेदना
दर्द समझना उन टूटी उम्मीदों का
दो शब्द स्नेह के तुम अवश्य ही कहना।

जब कोई बिछड़ जाए किसी का अपना
या फिर टूट जाए नन्हा सा सपना
जब सूने हों दुःख से आँखों के प्याले
विचारों का बवंडर उलझे हों जाले
तपते सूरज से झुलसा हो उसका आनन
तीक्ष्ण शरों से छलनी हो मन का आँगन
घनघोर घटाएँ विचलित करती हों अंतर्मन
लगने लगे उसे निरर्थक अपना जीवन।

तब तुम यदि बन जाओ सच्चे हमजोली
स्नेह अपनत्व से भर सको जो उसकी झोली
गहरा सागर बन मन उसका सरसा दो ग़र
क्यों नहीं औरों सा वह यदि सोचो क्षण भर
झंझकोर रहा होगा कोई बवंडर विचारों में
विरला ही कोई समझता है उसे हज़ारों में।

तब तरस नहीं खाना उस पर बस सहृदय बनना
स्नेह भरा घावों पर मलहम रखना
नई दिशा ग़र दे पाओ उम्मीदों की
राह दिखा दो फिर से नई शमशीरों की
अंधकार में ज्योति की इक बाती बन कर
चमका दो जीवन थोड़ा साथ में चलकर
अवसाद मिटा फूलों से जीवन भर दो
करो प्रार्थना ईश्वर से,
उसे ख़ुशियों का वर दो
दूजों के जीवन में जो ख़ुशियाँ भरते हैं
मानवता के दूत उसे ही कहते हैं।

मनवीन कौर पाहवा, मुंबई, मो. 8600017018 ईमेल: manveenkaurjp@gmail. com

संस्मरण – लंबे सफेद बादलों की भूमि में दीपावली – श्री जगत सिंह बिष्ट

दीपावली शब्द सुनते ही आँखों में चमक, कानों में पटाख़ों की गूँज, और मन में अपनेपन की मिठास उतर आती है।

पर कल्पना कीजिए—यदि यह उत्सव आपको अपने देश से दूर, धरती के उस छोर पर मनाना पड़े जहाँ आकाश हमेशा बादलों से ढका रहता है, तो कैसा अनुभव होगा?

पिछले वर्ष यही संयोग हमारे साथ हुआ। मैं और मेरी पत्नी, अपने पुत्र और पुत्रवधु के पास, न्यूज़ीलैंड—आओटियारोआ, यानी लंबे सफेद बादलों की भूमि—पहुंचे थे।

प्रकृति की गोद में

ऑकलैंड के उपनगर में बसा Unsworth Reserve पहली ही झलक में हमारे मन पर छा गया।

संकीर्ण पगडंडियाँ, गीली मिट्टी की सुगंध, और पेड़ों के बीच से छनकर आती धूप—मानो प्रकृति ने अपना निजी कक्ष खोल दिया हो।

पक्षियों के स्वर वहाँ किसी राग की तरह गूँजते थे।

एक पल को लगा कि यह "वन स्नान"—*shinrin yoku,* जैसा जापानी कहते हैं—सिर्फ़ शरीर नहीं, आत्मा को भी शुद्ध कर रहा है।

शहर के बीच बसे अन्य उद्यान—Rewi Alley, Adah, Kauri Glen—भी किसी रहस्य की तरह सामने आये।

न पर्यटकों की भीड़, न कृत्रिम सजावट।

सिर्फ़ पेड़ों की चुप्पी और झाड़ियों की सुगंध।

जैसे कोई कह रहा हो—"सच्चा सौंदर्य प्रसिद्ध स्थलों की दौड़ में नहीं, इस नीरव एकांत में छिपा है। "

जल का गान

कुछ दिनों बाद हम पहुँचे हूका फॉल्स।

वहाँ जल का वेग इतना प्रबल था कि उसके शोर में स्वयं के विचार तक डूब जाएँ।

नीला पानी, उफनती धार, और हवा में उठती नमी—ये सब मिलकर जीवन का वह पाठ पढ़ाते हैं, जिसे शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता।

थोड़ी ही दूरी पर लेक टाउपो का विस्तार।

इतना शांत, इतना स्थिर कि लगता, समय ने स्वयं को वहीं थमा दिया हो।

हमें लगा—यही जीवन की लय है: एक ओर प्रवाह की तीव्रता, दूसरी ओर मौन का गहरा विस्तार।

धरती का अंत और महासागरों का मिलन

हमारी यात्रा उत्तर दिशा में Cape Reinga तक पहुँची।

वहाँ, तस्मान सागर और प्रशांत महासागर एक-दूसरे से टकराते नहीं, बल्कि आलिंगन करते हैं।

उस दिन तेज़ हवाएँ और बारिश थी।

प्रकाशस्तंभ तक पहुँचने के लिए हमें बारिश से जूझना पड़ा।

पर जब अंततः उस चट्टान पर खड़े हुए—जहाँ धरती समाप्त होती है और जल अनंत हो जाता है—तो लगा कि यह स्थान केवल भूगोल का चमत्कार नहीं, आत्मा का भी तीर्थ है।

वहाँ खड़े-खड़े सोचा: जीवन भी तो ऐसा ही है—दो धाराओं का मिलन, दो संस्कृतियों का संगम।

फिर आई दीपावली

यात्रा का सबसे उज्ज्वल क्षण तब आया जब दीपावली की रात घर दीपों से सजा।

बच्चों ने आँगन में दीये सजाए, रंग-बिरंगी रोशनी टाँगी।

मंत्रोच्चारण गूँजे तो लगा जैसे भारत की कोई गली इस पराये देश में उतर आई हो।

बाहर का पड़ोस भले ही मौन था, पर भीतर—पूड़ी, छोले और हलवे की सुगंध, मिठाइयों की थाल, और हँसी-खुशी का वातावरण—संपूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित कर रहा था।

उस रात दीपावली के साथ-साथ बेटे का जन्मदिन भी था।

विदेश की धरती पर भारतीयता और परिवार का वह संगम हमारे हृदय में हमेशा जीवित रहेगा।

कुछ ही दिनों बाद मेरा जन्मदिन आया।

हमने ऑकलैंड के Sky Tower के पास “1947” नामक रेस्तराँ में इसे मनाया।

चारकोल पनीर टिक्का और ‘जलेबा’ के स्वाद से अधिक यादगार था वह अपनापन, वह स्नेह, जो इस दूर देश में भी घर का अहसास दिला गया।

और अंत में प्रार्थना

इस पूरे प्रवास ने हमें सिखाया—उजाला केवल दीपक से नहीं आता।

वह तो भीतर से फूटता है, और जहाँ भी जाता है, वातावरण को आलोकित कर देता है।

इस दीपावली पर हमारी यही कामना है—

आपके जीवन में हूका फॉल्स की शक्ति और लेक टाउपो की शांति साथ-साथ उतरें।

हर दिन आपके लिए केप रेइंगा के प्रकाशस्तंभ-सा बने—जो आँधी-पानी में भी राह दिखाता है।

और आपके घर का हर दीप, आपके मन के अंधकार को सदा-सर्वदा दूर करता रहे।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री जगत सिंह बिष्ट (Master Teacher: Happiness & Well-Being, Laughter Yoga Master Trainer, Author, Blogger, Educator, and Speaker.) इंदौर, मध्य प्रदेश

व्यंग्य - दिवाली का दिवालियापन – डॉ मुकेश असीमित

दिवाली आ रही है। वैसे दिवाली का क्रेज़ बच्चों में था। अब उन्हें पहनने के लिए नए कपड़े, फोड़ने के लिए पटाखे, और चलाने के लिए फुलझड़ियां चाहिए। खाने के लिए दूध, मावे और चीनी की मिठाई चाहिए। अब तो दिवाली आते ही ग्रीन ट्रिब्यूनल वालों का रोना शुरू हो जाता है। AQI इंडेक्स एकदम सेंसेक्स की तरह उछलने लगता है। सुप्रीम कोर्ट हरकत में आ जाता है। पटाखे और फुलझड़ियां बेचारे गोदामों में घुटन में जीने को मजबूर हो रहे हैं। उधर आदमी AQI के बढ़ने की सूचना के साथ ही घुटन महसूस करने लगता है। प्रदूषण का धुआँ ठंडे बस्ते में बैठ जाता है। अब दिवाली के एक महीने पहले और बाद तक जो भी प्रदूषण होगा, उसमें दोषारोपण पराली पर नहीं, वह जले या न जले, दोषारोपण तो पटाखों पर ही होगा। आम आदमी को टैक्स स्लैब में छूट नहीं मिलेगी, लेकिन बाजार में छूटों का पूरा पंडाल सजाया गया है। आप बिना टैक्स की छूट के भी इन छूटों का लाभ लेकर दिखाइए। दिवाली पर छूटों की बौछार चारों तरफ गले फाड़-फाड़ कर चिल्ला रही है। कोई आपके घर में फ्रिज, टीवी, वाशिंग मशीन, मोबाइल, जूसर, मिक्सर सब बदलना चाहता है। दिवाली आएगी, तब आएगी, दिवाली की आड़ में दिवालियापन की दरकार बहुत पहले आ जाती है।

ऑफिसों में फाइल दबाए कर्मचारी राहत महसूस करते हैं। अब "दिवाली के बाद" का बहाना सरपट दौड़ेगा - "अब चक्कर लगाइए, साहब छुट्टी पर हैं... यार, आप दिवाली बाद आइए... इतनी सारी पेंडिंग लीव पड़ी है, साहब भी क्या करें... लेप्स हो जाएँगी। एनकैश करने साहब छुट्टियाँ बिताने बाहर गए हैं। छोटे बाबूजी को भी बोनस मिला है, तो वे भी परिवार के साथ निकल गए हैं। अब आप भी दिवाली मनाइए इत्मीनान से। दिवाली बाद आना।

लेकिन बाबूजी, दिवाली मनाएंगे कैसे अंधेरे में? घर का कनेक्शन कट कर रखा है। बिजली के बिल में गड़बड़ी थी, सुधार करवाने के लिए फाइल लगवा रखी है। आज दो महीने हो गए। "

"लेकिन क्या करें साहब भी, उनकी भी तो दिवाली है, भाई...। सबको अपनी-अपनी दिवाली मनाने की पड़ी है। "

मजदूर को मजदूरी दिवाली के बाद मिलेगी। क्या करें सेठ जी, पाँच दिन फैक्ट्री बंद रहेगी... उसकी भरपाई भी तो करनी है। फिर दिवाली सामने है, भला लक्ष्मी जी को ऐसे ही दूसरों के हाथों में कैसे जाने दें? लक्ष्मी जी को हर किसी ऐरे-गैरे नत्थू के हाथ में कैसे पकड़ा दें, बताइए? "

टीवी वाले और अखबार वाले नकली का रोना रोने शुरू कर देते हैं। नकली मावे की धर पकड़ शुरू हो जाती है। "कहाँ है मावा... मावा कहीं नजर नहीं आता... बस अधिकारी की भी दिवाली अच्छी-खासी मनाने का ध्यान रखते हैं सब मावा बेचने वाले। फूड इंस्पेक्टर की दिवाली तो नकली मावा पकड़ने से मनती है। " अरे, जब देश में नकली नेता चल सकते हैं, नकली वादे चल सकते हैं, तो नकली मावा क्यों नहीं? नकली मावे की धरोहर में कितनों का रोजगार है। देखो, तब न्यूज़ वालों को न्यूज़ मिलती है। रिकॉर्ड ब्रेकिंग न्यूज़, डिबेट होती है। नकली के साथ असली माल रखा जाता है... असली माल की कीमत एकदम बढ़ जाती है। नकली आम जनता के लिए और असली नेता व अधिकारियों के लिए... इस दिवाली सबको कुछ न कुछ देकर जाएगी... गरीब को बीमारी, तो अमीर की जेब भारी।

नकली होगा तभी तो असली की पहचान होगी। लोग असली ढूंढने निकलेंगे, दीया-सलाई लेकर। असली के चार गुना दाम देंगे। सोहन पापड़ी भी इतना कुछ झेलने के बावजूद भाव खा रही है। क्यों? क्योंकि उसका मुकाबला नकली मावे की मिठाई से है। क्या करें, गर्ग साहब! लाना तो हम देसी घी की शुद्ध मिठाई ही चाहते थे इस बार, लेकिन क्या करें? आपको तो पता ही है... देसी घी के नाम पर क्या गड़बड़झाला हो रहा है... इसलिए सबसे सुरक्षित है सोहन पापड़ी। वरना सोहन पापड़ी की हालत तो आप जानते ही हैं। सरकारी अस्पतालों से भी बदतर है। घर में एक बार आ जाए तो ऐसे पड़े रहते हैं जैसे सरकारी अस्पताल के पुराने बिस्तर। सोहन पापड़ी हमें बताती है कि जो आज तुम्हारे पास है, कल किसी और के पास होगा। परसों किसी और के पास हो सकता है। घूम-घूमकर तुम्हारे पास हो आ जाए। यही जीवन चक्र है। दिवाली मुझे भी मनानी है, कैसे मनाऊँ? कई लोगों को उधार दे रखा है। मांगने जाता हूँ तो उनकी शक्ल मुझे घूरने लगती है। कहते हैं, "तुम्हें औकात नहीं है यार, दिवाली सर पर है। देखो, दिवाली के बाद यार, आप तो जानते हैं, लक्ष्मी दीवाली पर बाहर नहीं जाने देती। "

मैंने कहा, "भाई, हम भी दिवाली मना लेते, यार अपना ही तो मांग रहे हैं। तुम्हारे भाग्य की लक्ष्मी थोड़े ही मांग रहे हैं। "

दिवाली का असली मजा तो दिवाली के बाद ही है। डंप माल सस्ते में मिल जाता है। दिवाली की बची-खुची मिठाई सस्ते में मिल जाती है। जले हुए पटाखे और फूलझड़ियाँ भी अगर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा रखी हो, तो दिवाली के बाद ही फोड़ोगे ना? अब रोज-रोज दिवाली नहीं होती। फिर एक दिन आँसुओं का रोना - जब जेब में पैसा हो तब मना लो दिवाली, जेब खाली तो काहे की दिवाली?

डॉ मुकेश असीमित, ईमेल - drmukeshasemit@gmail. com

कहानी – चंदोवा - लेखक: योगेश जोषी - भावानुवाद डॉ. रजनीकान्त एस. शाह

शारदामा को जरा भी शांति नहीं। इस उम्र में और ऐसी तबीयत में भी चौकी पर बैठी हैं धूप में। घर में बैठी रहेंगी तो दिखेगा कहाँ से? ! मोतियाबिंद उतारी हुई, धुंधला धुंधला सा मुश्किल से देख पानेवाली छोटी छोटी आँखें, सर्दकालीन ताप का उजास और कांपते हुए हाथों में सुई और धागा। आसपास में पडी हुई रेशमी वस्त्र की छोटी-बड़ी रंगबिरंगी चिन्दियाँ।

"एरी, छोरी.... " शारदामा बोलीं, "कौन है? मुझे अब तो दिखाई भी नहीं देता, कोई छोरी खेल रही है, बस इतना ही दिखता है, पर कौन है, यह पहचान नहीं पा रही। तनिक यहाँ आना तो। यह धागा तो पिरो देना।"

बीते कईं महीनों से शारदामा इस तरह चौकी पर बैठीं होती हैं और रंगबिरंगी छोटीमोटी चिन्दियाँ जोड़कर चंदोवा बना रही होती हैं।

"क्यों आँखें खराब कर रही हो, बा(माँ)?'' सुरेश ने कहा था, बैठे बैठे मालाजाप करो ना!"

"तुम समझ नहीं पाओगे।"

"लेकिन बा, अभी हमारे घर में दूर दूर तक अवसर भी कहाँ आनेवाला है?"

"क्या कहा? अब फ़िर कभी ऐसी बात कहना नहीं। गीता का जन्म दस वर्ष बाद हुआ तो क्या हुआ? मीना के आने के बाद ग्यारहवें वर्ष में तू आया था। बहू भी पेट से रहेगी और छोरा ही आयेगा और उसके जनेऊ को देखे बिना मैं मरने से रही, समझ में आया?"

`बा', कभी बेटे की बहू धीमी आवाज़ में समझाती, "अवसर होगा तब शामियानेवाले ही चंदोवा बांध देंगे। आप अब आराम फरमाओ और बा, आँखें देख नहीं पा रही हैं फ़िर भी...."

"यह तुम नहीं समझोगी। खाली बैठी रहूँगी तो मौत जल्दी आएगी। मीना का ब्याह हुआ तब शामियानेवाले मंडप बांध गए थे, पर चंदोवा तो मैंने ही खुद का बनाया हुआ ही लगवाया था। उस चंदोवा को मैंने संभालकर रखा था तो सुरिया के ब्याह में काम आया था। उसके बाद भी उस चंदोवा को मैंने इसलिए संभाले रखा था, कि अवसर पर काम आए... पर फ़िर तो अवसर ही आया नहीं। गीता के जन्म के बाद उसके ही शुभ कदमों पर चलकर घर में इतनी लक्ष्मी आयी है तो उसीके नक्शेकदम चलकर भगवान छोरा भी देगा। बस, उसीके जनेऊ का इंतज़ार करते हुए मैं इस चंदोवे में टांके लगा रही हूँ। वह पुराने चंदोवे को संभालकर रखा नहीं तो चूहे कुतरकर खा गए। पर उसका तो कपड़ा भी सड़ गया था..."

शारदामा को इतने वर्ष हुए। आँखें भी लगभग गईं। वातव्याधि के कारण पैरों से कुछ

कदमों से ज्यादा चल पाना भी बंद हो गया। शरीर पर की चमड़ी.... चमड़ी? ना, झुर्रियां ही कहिए। आँख और हाथ-पैर पर हररोज़ सूजन आ जाती थी। खुराक और नींद भी बहुत कम हो गई थी। बी. पी. की तकलीफ़ तो थी ही पर आवाज़ झुनझुने जैसी। उनकी बातें कभी कम होती नहीं थी। पैरों ने जवाब दे दिया तब से भजन में जाना भी बंद हो गया। अन्यथा भजनमंडली में शारदामा भजनों की जो झड़ी बरसाती थीं.... कानुडा का भजन गवाते वक़्त तो उनके भीतर से भावों की ऐसी बाढ़ उमड़ आती थी कि यदि कोई

औरत उसके एकाध-दो साल के बेटे को लेकर आयी हो तो उस बच्चे को लेकर शारदामा नाचने लगती थीं। उसकी छोटी सी चुटिया में मोरपिच्छ लगा देती थीं और यदि बच्चा शांत स्वभावी हो और रोये नहीं तो भजनों के बाद माताजी के फ़ोटो की आरती करने के बजाय इस छोटे से कन्हैया को ही मंची पर बैठाकर उसकी आरती उतारती थीं! पर अब तो ते दिवसा: गता:....।

उम्र एवम् वातव्याधि ने शारदामा की चलने में असमर्थता के बावजूद भी भजन मंडली की बहनें घोडागाड़ी में बैठाकर उनको अपने साथ ले जाती थीं। वातव्याधि के चलते घुटनों के जोड़ जवाब दे गए हों और पैर सीधे नहीं हो तब भी शारदामा गाते गाते खड़े होकर मुड़े हुए पैरों से अस्थिर ही सही नाचती थीं। बाद में जब पैरों ने नाफ़रमानी कर दी तब कहीं नाचना बंद हुआ। लेकिन गाना तो चलता ही रहा। -

“हरिने भजता हजी कोईनी लाज़ जती नथी जाणी.... रे...”

(हरि की भक्ति करने से किसीकी बेइज्जती हुई हो ऐसा अब तक मैंने जाना नहीं है।)

एकबार तो उन्होंने गीत गाने की शुरुआत की, “मेहुलो गाजे ने माधव नाचे....” और भावना में बहकर पैर काम नहीं कर रहे है-यह तो भूल ही गईं! वे तो जल्दी जल्दी उठ खड़ी हो गईं, आँखें बंद हुईं, दोनों हाथ नृत्य की मुद्रा में ऊपर उठे... लेकिन पैरों ने उनकी बात मानी नहीं और वे धड़ाम से जा गिरीं और आया पुट्ठे में फ्रेक्चर।

उसके बाद तो भजन मंडली में जाना बंद हुआ, पर भजन थोड़े ही बंद होनेवाले थे? चंदोवा बनाते हुए चौकी पर बैठी हों तब भजन गायन तो चलता ही रहता है। लेकिन हाँ, वर्षाकाल में उफनती नदियों की भांति नाचते, उछलते, घहराते हुए लयबद्ध नहीं, पर शांत धीमे लय और सूर वाले भजन।

उस लड़की ने सुई में धागा पिरो दिया। शारदामा ने टांके लगाना शुरू किया। अब ख़ास कोई काम बाकी रहा नहीं था। चंदोवा पूरा होने को था। यदि पूरा एक महिना बीमारी में गया नहीं होता तो चंदोवा बहुत पहले बन चुका होता। शारदामा को हार्टएटेक आ गया था। डॉक्टर ने पर्याप्त आराम लेने के लिए कहा था। लेकिन हाथ में रेशमी चिन्दियाँ और अधूरे चंदोवे की गठरी

लेकर कुछ ठीक होते ही शारदामा धीरे धीरे चलकर चौकी पर गईं। ठीक एक महीने तक चौकी सुनी पड़ गई थी वह आज़ पुन: जी उठी- रंगबिरंगी रेशमी चिन्दियाँ और अधूरे चंदोवा से।

टांके लेते हुए शारदामा ने ऊपर देखा।

बस, बरा... बर वहाँ ही चंदोवा लगायेंगे....

इस विचार के साथ ही शारदामा को अभी अधूरा है ऐसा चंदोवा पूरा भी हो गया और लटकता हुआ दिखाई दिया- धुंधला धुंधला सा नहीं, एकदम स्पष्ट! रेशम की कोमलता और सभी चमकीले रंगों के साथ और बेलबूटेदार छाप एकदम स्पष्ट!

.... इतना स्पष्ट तो मैं कभी भी देख नहीं सकती थी.... क्या मेरी आँखें हार गईं? ! कहते हैं कि अस्सी-नव्वे हो जाने के बाद नए दांत फूटते हैं इसी तरह मेरी आँखों को भी क्या नया तेज़ मिल गया? अब नए दांत भी आएंगे? !....

“बा....” पुत्रवधू ने कहा।

“बा.... फ़िर से ऊंची आवाज़ में कहा।

शारदामा ने अपना मुंह घुमाया।

“तबीयत तो अभी ठीक हुई नहीं, कि कहाँ यह सब लेकर चौकी पर बैठ गईं? मैं तो सोच रही थी कि आप अंदर सोयी हुई हैं। छोड़ो भी न बा; हम नया चंदोवा खरीद लेंगे।”

“`तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा। किसीके हाथों का बनाया हुआ चंदोवा और मेरे बनाए हुए चंदोवा में जमीन आसमान का फ़र्क है। उपरांत, शामियानेवाले का चंदोवा तो सत्रह जगहों पर लगाया हुआ होता है, समझ में आया कुछ?”

“तो बा, बाकी रहे टांके मैं ले दूँ?”

“अभी मेरे हाथ साबुत हैं।”

पड़ोसी तो कहते थे मगर आज तो बहू को भी लगा कि उम्र हो गई है इसलिए बा का स्वभाव.....

“शारदाबेन,” पड़ोसन वृदधा ने सामने से आकर कहा, “यह क्या आँखें फोड़ने के लिए बैठी हो? चंदोवा बनाकर आपको क्या करना है भला? लेटे लेटे आप माला जाप करती रहिये न। अब भगवान का नामस्मरण ज्यादा करो। संसार में बहुत मन नहीं रखना। पगलाई हुई हैं क्या? जब देखो तब बस, चंदोवा चंदोवा.... चंदोवा तुम्हारे साथ नहीं जानेवाला। हाँ मैं तो सच्ची बात कहती हूँ। हार्टएटेक आ गया है फ़िर भी अभी चंदोवा से मन नहीं हट रहा। ? और आपके घर में अब कौनसा अवसर आनेवाला है?....”

अब तक खामोश रही शारदामा को गुस्सा आ गया। आँखें लाल लाल मिर्ची जैसी हो गई।

दाहिना हाथ ऊपर उठा, शरीर कांपने लगा और ज़्वालामुखी की भांति उनके कंठ से आवाज़ फूटी,

“मर, मुई.... ज़हरीली, अबकी बाद तुम मुझे अपना कालामुख नहीं दिखाना.... और मैं मर जाऊँ तब रोने के लिए भी मत आना....”

अवश्य, शारदाबेन पगला जानेवाली है। – ऐसे बडबडाती हुई वह वृद्धा चली गई।

शारदामा की देखभाल करने के लिए बहू चुपचाप उनके पास बैठ गई। सुरेश भी दरवाज़े में खड़ा रहा था। पर शारदामा को घर में जाने के लिए कहने का किसी की हिम्मत हुई नहीं।

कुछ क्षण ऐसे ही चुपचाप बीते।

छोटे छोटे टांके ले रही शारदामा के कांपते हुए हाथों से कुछ बड़े बड़े टांके भी ले लिए गए। उसके बाद उनका हाथ काम करने से रुका।

मन में विचार आया, बहू का छोरा आए और वह जनेऊ धारण करने जैसा हो जाए उतना तो मैं अब जीने से रही.... पर यह चंदोवा पूरा हो जाए उतने दिन तो वह जिएगी ही जिएगी....

उनकी आँखें और छोटी हुईं। कपार पर ढ़ेर सारी झुर्रियां एकदूसरे के ज्यादा निकट गईं और उनकी दृष्टि कुछ अदृष्ट को देखने लगी।

“बहू बेटा,’ शारदामा बड़बड़ा रही हो ऐसा बोलीं, “घर में अवसर नहीं आया होने के कितने बरस हुए?”

“मेरी शादी को हुए इतने।”

“सुरेश को तो बुला।”

जंगले के पास खडा सुरेश आया।

“देख सुरिया, बहुत बरस बीत गए, हमारे घर में अच्छा अवसर आया नहीं है.... इसलिए मैं सोच रही हूँ कि अब एकाध अवसर करें और सारी बिरादरी को भोज़ पर बुलाएँ।”

सुरेश ने सोचा, बा क्यों ऐसा कह रही हैं?! अभी कहाँ कोई अवसर आनेवाला है?! बा को कहीं....

“देख बेटा,” आवाज़ को और धीमी करके शारदामा ने कहा, “देखो, अब मैं ज्यादा जीनेवाली नहीं हूँ.... बहू को बेटा आए और उसका जनेऊ देखकर जाने की इच्छा थी। पर अब ऐसा लगता है, कि भगवान की मर्जी नहीं है.... तो मन में होता है कि मरने से पहले एक अवसर देखकर जाऊँ.... और मुझे मेरी जीवतक्रिया(जीवत श्राद्ध) कर लेनी है....”

“जैसी आपकी इच्छा बा।”

“तब फ़िर देख, जल्द से निकलनेवाला मुहूर्त निकलवा और कार्ड छपवाकर सबको भेज दे। भेजने से पहले एकबार मुझे दिखा देना। कोई नाम छूट नहीं जाए और बैंक से पैसे निकालकर

सारी व्यवस्था कर ले। धूमधाम से जीवतक्रिया का आयोजन करना है।

बाद में तो मुहूर्त निकलवाया गया। कार्ड छपवाकर सबको भेज दिया। शारदामा की बिटिया मीना और उसकी दोनों बेटियाँ –जया और माया को तो बहुत पहले से बुला लिया। जमाई यदि बाद में आएंगे तो चलेगा, लेकिन बेटियों को तो पहले ही बुला लेना पड़े न? वे अपना मनपसंद खरीद ले न? सज्जा में रखने के लिए सोने की माला बनवाने के लिए दे दिया। अन्य वस्तुएँ- पलंग, गदेला, रज़ाई, मंगलसूत्र, बर्तन और ऐसी ही कई वस्तुएँ खरीदी जाने लगी। शारदामा सबको बुलाकर पूछतीं और जिसे जो चाहिए उसकी खरीद करवाती और चंदोवा को पूरा कर देने में ज्यादा समय देती थीं। चंदोवा के टांके लेते हुए, अपनी जिंदगी से भी, समय के कुछ रंगबिरंगी टुकड़े जुड़ जुड़कर शारदामा के हृदय में भी मानो एक चंदोवा सृजित होता जा रहा था। उनमें दिन प्रतिदिन एक नयी ही उमंग और एक नया ही उत्साह और फुर्ती संचारित होती थी।

जया और माया ने तो कुछ पुस्तकें भी मांगी। तो वे भी शहर से मँगवाई और गीता के लिए ढ़ेर सारे खिलौने।

“मम्मी,’ जया ने पूछा, भोज़ में क्या क्या बनेगा? मुझे तो लड्डू जरा भी पसंद नहीं।”

“ऐसे मौके पर तो लड्डू ही बनते हैं, और कुछ नहीं बनाया जाता।”

“क्यों नहीं बनाते?” शारदामा ने तुरंत कहा, “भानजी को जो खाना पसंद हो वह बनवाना।”

बाद में तय हुआ- श्रीखंड, पूड़ी, दो सब्जियाँ, एक द्विदल, कचूमर, रायता, फरसान और कढी-भात।

भोज़ का सामान-तेल के डिब्बे, अनाज, दलहन आदि की खरीद हुई और उन सबकी साफ़-सफ़ाई शुरू हुई। घर की साफ़-सफ़ाई हुई। तांबे और पित्तल के सारे बरतन मंजवाए गए। घर की पुताई करवायी और दीवारों का अधोभाग हरे रंग से रंगवाया। बड़े गज़ब की फुर्ती के साथ शारदामा इन सबकी देखरेख रखती थीं। उनका चंदोवा भी तैयार हो गया।

पुताई के वक़्त देव-देवियों तथा अन्य फ़ोटो नीचे उतरवाए थे। यह देखकर शारदामा ने कहा था, "ये सारे फ़ोटो पुराने पड़ गए हैं तो सुरेश तुम जाकर फ़िर से मढ़वा लो और सबमें स्टील का फ्रेम डलवाना।"

"और बा, माया ने कहा, "आपके चश्मे का फ्रेम भी स्टील का ही बनवाओना!"

"मर, मूई! मेरी नकल उतारती है! पर तुम्हारे जैसा बोलना हमें कहाँ से आयेगा? ठीक है भाई सुरेश, मेरे चश्मे का फ्रेम भी स्टील का, बस माया, अब ख़ुश?"

उसके बाद तो फ़ोटो फ़िर से मढ़वाये गए और शारदामा ने जैसे कहा वैसे लटकाये भी। स्टील के फ्रेमवाले बा के चश्मे भी तैयार हो गए।

"हाँ.... !" माया ने कहा, बा तो नए चश्मे में बहुत फब रही हैं, हाँ!"

"अरे मैं जब जवान थी तब तो...." कुछ कहते हुए शारदामा रुक गईं। पर, पर इस उम्र में भी वयः संधिकालीन शर्म(लज्जा) उनके चेहरे पर रही झुर्रियों को फाँदती हुई उभर आयी!

सबके लिए नए कपड़ों का शारदामा ने हुक्म जारी किया।

यह सुनकर जया ने तो मज़ाकिया लहजे में कहा, "पर बा, यह तो मृत्यु के बाद की क्रिया आप एडवान्स में मना रही हैं न? तो क्या हम सबको श्वेत वस्त्र पहनने नहीं होंगे? और मम्मी और मामी को काली साड़ी...."

"बस, बस, बंद भी कर, डेढ़सयानी, तुम कब इतनी बूढ़ा गई? देख, सुन, मेरे मरने के बाद किसीको भी काली साड़ी पहननी नहीं है और रोना-धोना नहीं है। ऐसा समझना है, कि मानो मैं बाहरगाँव गई हूँ। और...."

बाल कनैया की फ़ोटो पर नज़र जाते ही शारदामा कहीं गुम हो गईं। कुछ देर तक अनिमेष फ़ोटो को देखती रहीं। बाद में बोलीं, "और सुरैया एक बात तो छूट ही गई!"

"कौनसी बात बा?"

"लगे हाथ भागवत सप्ताह भी बैठाएँ और भागवत के सारे अवसर धूमधाम से मनाएँ।"

भागवत सप्ताह का भी आयोजन हुआ।

मुहूर्त का दिन आया। मानो शादी या यज्ञोपवीत हो इतनी धमाचौकड़ी! एक तरफ़ पुरोहित के मंत्रोच्चार और धार्मिक संस्कार चल रहे होते हैं तो दूसरी तरफ़ भजनों की झड़ी और शय्यादान तथा भोज़ की तैयारियाँ।

शारदामा के हाथों से बना चंदोवा हवा में झूल रहा था। रेशमी चिन्दियों के अलग अलग रंग सूर्य प्रकाश में अपनी छटा बिखेर रहे थे।

संस्कार सम्पन्न हुए। शैय्यादान और भोज़ भी सम्पन्न हुआ। सबको बड़े प्यार से और आग्रह के साथ भोजन करवाया।

सारे गाँव में बस एक ही बात चल रही थी-

-ऐसा नुक्ता तो कभी देखा-सुना नहीं था!

-ऐसी जीवतक्रिया तो कभी हुई नहीं थी और होगी भी नहीं। रंग है शारदामा का।

-जीवतक्रिया भी इतनी धूमधाम के साथ!

-जीवत आचार में भी भोज़!

-साधु-संत, गरीब और भिखारियों को भी कितना दिया!

- चिरंजी रहो शारदामा!

आनंद, उत्साह, उमंग, मज़ाक मस्ती और धमाचौकड़ी में सारा दिन गुजरा। रात में भी भोज़ के बाद घर में देर रात तक भजन और आँगन में छोटी छोटी लड़कियाँ और बहुओं की गरबे की रौनकदार झड़ी। और बाद में मधुरेण समापयेत के न्याय के अनुसार महाआरती और प्रसाद।

एरी, लड़कियाँ और बहुएँ.... शारदामा की आवाज़ में आनंद छलका जा रहा था। “आज जैसा गा रही हैं ऐसे ही भागवत सप्ताह के सम्पन्न होने तक हररोज़ गाना है! समापन के दिन एय मज़ेदार नेग भी बांटा जाएगा, हाँ!”

पर किसे पता था कि भागवत सप्ताह सुनने या नेग देने के लिए शारदामा रहनेवाली नहीं हैं!

आरती और प्रसाद के बाद शारदामा सो गईं।

और सुबह मालाजाप करते हुए शारदामा लुढक गईं....

मृत्यु जनित खामोशी छा गई अंदर और बाहर भी। सारा समा स्तब्ध रहा हुआ था। हृदय विदारक रुदन और आश्वासन और रुदन....

थोड़ी देर बाद सुरेश कुछ स्वस्थ हुआ।

उसके बाद स्त्रियाँ भी कुछ स्वस्थ हुईं। कि अचानक ही समझ में आया- एरी, हम सबने तो नए कपड़े पहने हुए हैं न! अब? !

बादमें सफ़ेद साड़ियों की ख़ोज शुरू हुई।

“सुरेशभाई,” किसीने पूछा, “बाहर जो नया चंदोवा झूल रहा है क्या उसे उतार लेना है?”

“ना भले ही लटकता रहे।”

श्री योगेश जोषी लेखक: B-303, अर्जुन ग्रीन्स, मेनवर हॉल के पास, घाटलोडिया, अहमदाबाद-३८००६३. चलभाष: ९०५४९६८०५७. ybj3755@gmail. com

अनुवादक: 2, `शीलप्रिय’, विमलनगर सोसायटी, नवाबजार, करजण. पिन: 391240. वडोदरा. गुजरात.

चलध्वनि: 9924567512. E. Mail: navkar1947@gmail. com

कविता – सीता की व्यथा.. – श्री राजेंद्र तिवारी

मै, भू पुत्री,
भू पर, अबोध, असहाय,
पड़ी अकेली, किसका दोष,
परिस्थिति, या, भाग्य,
सहलाया था, हवा ने,
भाग्य था, पा लिया,
जनक ने,
पाल लिया, महलों में,
पुत्री बनी, जनक की,
बड़ी हुई,
चिंता हुई, विवाह की,
शर्त रखी, धनुष भंग,
जो करे, वो जीते,
सीता को, पुष्प वाटिका, में,
राम मिले, सीता ने,
मन को, वार दिया,
धनुष भंग कर,
जीत लिया, पाया नहीं, राम ने,
कई सपने, कई अरमान,
अवध में, फिर वनवास,
छाया बनकर, साथ चली,
पर क्या, राम की,
हो पाई,
नारी पीड़ा, हुई अपहृत,
अशोक वाटिका,
केवल राम की सोच,
रावण वध, के पश्चात,
सोच रही,
लेने आओगे, नहीं आए,
संदेश आया, पैदल आओ,
अग्नि परीक्षा, देनी होगी,
नारी ही, देती आई, अग्नि परीक्षा,
पुरुष तो,
अहंकार में, लिप्त है,
सह गई, लोकाचार में,
अयोध्या में, फिर परीक्षा,
फिर वनवास, पुत्र जन्म,
बिन परीक्षा, नहीं स्वीकार,
थक गई राम, तुम्हें पाते पाते,
तुम मर्यादा पुरुषोत्तम,
की परिधि से, बाहर नहीं निकले,
मै थक गई, देवी बनते बनते,
तुमने मुझे जीता, पाया नहीं राम,
मै लेती हूं राम, पृथ्वी में विश्राम,

श्री राजेन्द्र तिवारी, 70, रामेश्वरम कॉलोनी, विजय नगर, जबलपुर, मो 9425391435

कहानी – लघुकथा - सवाल - डॉ. अखिलेश पालरिया

'वकील साहब, एक बात बताएँ, हम लोग न्यायालय की शरण क्यों लेते हैं?'

'केस जीतने के लिए... लेकिन यह बेतुका सवाल क्यों?'

'साहब, जीत की बुनियाद छल-कपट नहीं होनी चाहिए। जीत किसी की भी हो पर न्याय जरूर मिले। '

आपकी बात मेरे समझ में नहीं आ रही। '

'सुनिए वकील साहब, आपको एक बात बता दूँ, जिन पर आप गंभीर आरोप लगाना चाहते हैं, वे सब देवता तुल्य हैं। '

'आप चाहते क्या हैं?'

'मैं चाहता हूँ कि हम सच पर कायम रहें और निर्णय जज साहब पर छोड़ दें क्योंकि झूठ पर केस लड़ना तो कायरों का काम है! '

'यह क्या कह रहे हैं, क्या आप मेरी छवि खराब करेंगे?'

'ठीक कह रहा हूँ जी। आपने क्या हमें कायर समझा है जो गीता की सौगंध खाकर हमसे कुछ भी बुलवा लेंगे?'

डॉ. अखिलेश पालरिया

कविता – ॥गीत॥ - किसे अपनी व्यथा सुनाएँ - डॉ. रामेश्वरम तिवारी

बुद्धि प्रखर हुई, भाव-शून्य ह्रदय है,

उसूल शूल हुए, यह कैसा समय है।

* * *

हाथ हैं कि नभ की बुलंदियाँ छू रहे,

औ कदम हैं कि दलदल में धँस रहे,

दिग्भ्रमित मानव, भ्रमित-निर्णय हैं।

* * *

साजो-सामाँ से बाज़ारो-घर पटे हैं,

तन परस्पर मिले पर मन बँटे-बँटे हैं,

कहने को सुखी, जीवन दुःखमय है।

* * *

इंसां का इंसां पर, विश्वास उठ रहा,

खुद ही शत्रु बना, खुद को छल रहा,

आज़ाद हैं, मगर नहीं कोई निर्भय है।

* * *

जीवन शापित हुआ, हम कहाँ जाएँ,

जाकर किसे अपनी व्यथा सुनाएँ,

दुख के सम्मुख, नत जय-विजय हैं।

डॉ. रामेश्वरम तिवारी, सागर रॉयल होम्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462026, **मोबाईल –** 8085014478

कविता – दिवाली - श्री गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द'

चौदह वर्ष बाद हैं आये, अहंकार कर नाश।
पापी रावण मार गिराये, लेकर आये प्रकाश।।
दीपोत्सव हम चलो मनाएँ, पावन यह त्योहार।
आनन्दित हो मंगल गाएँ, आये हैं कर्तार।।
दीपोत्सव हम चलो......।

हर्षित अवध पुरी के वासी, बढ़ा रहे सब प्रीत।
एक कण्ठ से गा रहे सारे, रामचन्द्र के गीत।।
अवध नरेश आये पधारे, घर आँगन हर द्वार।
दीपोत्सव हम चलो.....।

दुल्हन सी है सजी अयोध्या, दसों दिशा गुणगान।
माता सीता लक्ष्मण भैया, साथ खड़े हनुमान।
बज रहे झाल ढोल नगाड़े, नृत्य करे नर नार।
दीपोत्सव हम चलो......।

कैकेयी सुमित्रा कौशल्या, लिये आरती थाल।
उतारे प्रेम से आरती, चंदन देकर भाल।।
भरत शत्रुघ्न जोड़े पाणी, स्वागत को तैयार।
दीपोत्सव हम चलो...।

ऋषि मुनि ज्ञानी भी बरसाए, गगन मार्ग से फूल।
आशीर्वाद की लिये झोली, पधारे है गुरुकुल।।
अकुलित जन है आये सारे, मिलन को बेकरार।।
दीपोत्सव हम चलो.....।

श्री गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द', मॉरीशस

लेख - शिवसागर- अद्भुत असम की सांस्कृतिक विरासत - डॉक्टर मीना श्रीवास्तव

नमस्कार पाठकगण!

दीपावली के मंगलमय पर्व की शुभकामनाएं!

मई २०२४ के अंतिम सप्ताह में हमने भारत के पूर्वोत्तर में स्थित सेव्हन सिस्टर्स (सात बहनों) में से एक असम का सफर किया| "असम" की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "असामा" से हुई है, जिसका अर्थ है असमान या अद्वितीय! हम हवाई सफर करते हुए मुंबई से कोलकाता होते हुए डिब्रूगढ़ पहुँचे| डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे से ८० किमी दूरी पर शिवसागर नामक जिला में स्थित शिवसागर शहर है| दो घंटों के अंदर आप असम की इस अनमोल ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत तक पहुँच जाएंगे| यह शहर ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी दिखू के किनारे बसे इस शहर का इतिहास अहोम राजाओं से सम्बंधित है|

आइये, पहले अहोम राजाओं का संक्षिप्त इतिहास जानें| अहोम चीनी वंशज थे, जो कुछ काल के उपरांत हिन्दू धर्म में परिवर्तित हुए थे। शासितों को अपनाने का यह अनोखा तरीका था| हिन्दू राजाओं के रूप में अहोम राजवंश ने वर्तमान असम में लगभग ६०० वर्षों तक (ई. स. १२२८ - १८२६) शासन किया। इसकी स्थापना मोंग माओ के राजकुमार सुकफा ने की थी| १२२८ में मोंग माओ (अब म्यांमार में) के ताई-अहोम राजकुमार सुकफा ने पटकाई पर्वतों को पार करके असम में प्रवेश किया। सुकफा ने विभिन्न स्थानीय जनजातियों, विशेष रूप से सुताई, मोरन और कचारियों के साथ घनिष्ठ कूटनीतिक संबंध बनाए और उन्हें अपने साथ एकीकृत कर लिया| "बोर असोम" या "ग्रेटर असम" के वास्तुकार बनने का श्रेय उन्हें ही जाता है। तब शिवसागर असम की राजधानी थी| अहोम राजाओं ने इस क्षेत्र में शक्ति, संस्कृति और धर्म को मजबूत किया| राजाओं को असमिया भाषा में "स्वर्गदेव" कहा जाता था। इस स्वर्णिम कालखंड में कई इमारतों, मंदिरों और सड़कों का निर्माण किया गया। अहोम राजाओं ने कवियों, विद्वानों और कलाकारों को बहुत प्रोत्साहित किया। इस राजवंश ने मुगलों का प्रतिरोध करने हेतु एक मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था बनाई| एक सुव्यवस्थित प्रशासन विकसित हुआ, जिसमें 'पाइक प्रणाली' एक महत्वपूर्ण आधार बनी| यह श्रम शक्ति और कर संग्रह को सुनिश्चित करती थी। पाइक प्रणाली एक पारंपरिक श्रम और मिलिशिया व्यवस्था अर्थात एक नागरिक सैन्य दल व्यवस्था थी| इसमें वयस्क पुरुष राज्य की सेवा में लगाए जाते थे। इसके बदले में उन्हें भूमि दी जाती थी और वे कृषि के साथ-साथ सड़क, पुल, और तटबंध बनाने जैसे सार्वजनिक कार्यों में योगदान करते थे एवं युद्ध के समय में सैन्य-सेवा भी प्रदान करते थे|

जहाँ मुग़ल सल्तनत भारत के उत्तर और मध्य भारत में शासक बनी थी, वहीं १६७१ के सरायघाट के युद्ध में लाचित बोरफुकन के नेतृत्व में संगठित अहोमों ने एक विशाल मुगल सेना को हराया| अहोमों ने अपनी कुशल सैन्य रणनीतियों और कूटनीति के माध्यम से कई मुगल आक्रमणों का सफलतापूर्वक विरोध किया। इसलिए असम में मुगल कभी भी शासन नहीं कर पाए| दुर्भाग्यवश १९ वीं सदी के प्रारम्भ में अहोम लोगों के बीच गृहयुद्ध छिड़ जाने से उनकी ताकत और संसाधन कमजोर हुए। उनकी इसी आंतरिक कमजोरियों का फायदा उठाते हुए, बर्मा के राजाओं ने असम पर आक्रमण कर अहोम राजा को कमजोर कर दिया। इसके

बाद, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने असम पर आक्रमण किया और १८२६ में यंदाबो की संधि के माध्यम से राज्य पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया| इस प्रकार असम को समृद्धि के शिखर पर पहुँचाने वाले अहोम राजवंश का अंत हुआ। शिवसागर के संग्रहालय में यह इतिहास बहुत अच्छी तरह दिखाया गया है|

अब हम शिवसागर के एक मंदिर समूह के दर्शन करेंगे!

शिवदौल: यह शिवसागर ज़िले के शिवसागर नगर के मध्य भाग में स्थित तीन मंदिरों और एक संग्रहालय का समूह है। असमिया भाषा में 'दौल' का अर्थ है मन्दिर! 'यह 'शिवसागर' नामक तालाब के किनारे बनाया गया| इस मानवनिर्मित तालाब का निर्माण १७३१ और १७३८ के बीच हुआ था| यहाँ के अत्यंत सुन्दर परिसर में तीन देवताओं को समर्पित विशाल मन्दिर हैं, भगवान शिव (शिवडोल), भगवान विष्णु (विष्णुडोल) और देवी दुर्गा (देवीडोल)! इनका निर्माण १७३४ में हुआ। इनको निर्माण करने का श्रेय जाता है असम के राजा स्वर्गदेव शिवसिंह (१७१४- १७४४) की रानी बररजा अम्बिका कुंवरी को| शिवडोल एक अत्यधिक ऊंचा, ऐतिहासिक शिव मन्दिर है, जो अपनी १०४ फुट ऊंचाई, स्वर्ण गुंबद तथा जमीन में स्थापित उल्टे शिवलिंग के लिए प्रसिद्ध है| भूमि पर इसकी परिधि १९५ फुट है। यह भारत का सबसे ऊँचा शिव मन्दिर माना जाता है| मंदिर का शुद्ध सोने से बना ८ फुट ऊँचा गुंबद दूर से ही चमकता दिखाई देता है। इस मंदिर की प्रमुख विशेषता है इसका अद्वितीय शिवलिंग| यह प्राकृतिक रूप से ही अन्य शिवलिंगों के ठीक विपरीत, ज़मीन में उल्टा स्थापित है| इस महत्वपूर्ण तीर्थस्थल का दर्शन करने श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है|

इन सारे मंदिरों के सामने एक और खुला मंडप बनवाया गया है| ये तीनों समान ढांचे, यानि शिखर, मंडप और बाहरी छत इन मन्दिरों को सम्मिश्रित वास्तुकला का उत्तम नमूना पेश करते हैं। मन्दिरों की बाहरी दीवारें विभिन्न मूर्तियों और पुष्प के आकारों से सजाई गईं हैं| दुर्गा को राक्षस राज महिषासुर का नाश करते हुए दिखाया गया है, जबकि विष्णु मंदिर के छत पर मधुकोश जैसी रचना है| मित्रों, यद्यपि ऐसी नक्काशी हमें अन्य हिन्दू मन्दिरों स्थानों पर भी देखने को मिलती है, लेकिन पत्थर की यह खुदाई श्रद्धालुओं को निश्चित ही भावविभोर कर देती है| भूरे और लाल रंग का मिश्रित प्रभाव रंगीन होते हुए भी भड़कीला नहीं दिखता। इन मन्दिरों का गर्भगृह जमीनी स्तर से थोड़ा नीचे होता है। महाशिवरात्रि एवं नवरात्रि के पर्व यहाँ बड़े ही उत्साह से मनाये जाते हैं|

हमें यहाँ का वातावरण भक्तिमय, शांत, स्वच्छ एवं प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर लगा| यहाँ के हरे भरे पेड़ों की शीतल छाया के कारण मई महीने की गर्मी को हम काफी अंश तक झेल पाए| शिवसागर झील का कुल क्षेत्रफल २५७ एकड़ है और जल विस्तार १२९ एकड़! झील में पानी की गहराई २७ फ़ीट के करीब है| झील का पानी पूरे साल भर स्थिर रहता है| मानसून के महीनों में भी इसमें कोई उतार-चढ़ाव नहीं आता। इसमें हमने नौका विहार का भरपूर आनंद लिया|

मित्रों, अनोखे असम की यह झलक मात्र थी| इस अद्भुत राज्य में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर दर्शाते कई अनोखे स्थल हैं| असम यात्रा के सुखद अनुभव के लिए अक्टूबर से दिसंबर के महीने सर्वोत्तम होंगे|

डॉक्टर मीना श्रीवास्तव, ठाणे मोबाईल -९९२०१६७२११, ई मेल- drmeenashrivastava21@gmail. com

कहानी – यात्रा - श्री सदानंद आंबेकर

भोपाल रेल स्थानक संख्या पांच पर खडी भोपाल बीना शटल के इंजन के लोको पायलट कुशवाहा जी ने लोको लॉगबुक में प्रेशर गेज, वोल्टेज, लाइट्स आदि की जांच कर रीडिंग लिखी, अपने सहायक सुभाष की ओर देख कर कहा "चलें, अपना सिग्नल हो गया है"। उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना आगे और पीछे वाला हॉर्न दो बार बजाया और गाडी रेंगने लगी।

इंजन अभी प्लेटफॉर्म से बाहर गया नहीं था कि अचानक किसी महिला की तेज आवाज सुनाई दी। उन्होंने देखा कि इंजन केसामने के छोर से एक इकहरे बदन की कम आयु वाली महिला हाथ दिखा कर रोकने का संकेत कर रही है। कंधे पर एक झोला, गोद में एक बच्चा, दूसरे हाथ से दूसरे बच्चे को लगभग घसीटते हुए हाथ से रोकने के लिये पुकार रही है। कुशवाहा जी ने इंजन के गियर को शून्य पर लाकर ब्रेक लीवर से हल्का सा प्रेशर कम किया और गाडी लगभग थम सी गई।

अपनी खिडकी से उन्होंने सिर निकाल कर देखा, वह महिला शीघ्रता से इंजन से लगे हुये जनरल डिब्बे में चढ रही थी।

कुछ ही पल में ब्रेक का दबाव बनते ही गाडी को स्टेशन से चला दिया। गाडी सामान्य गति में आने के बाद उनके सहायक पायलट सुभाष ने पूछा - "साहब आपने एक सवारी के लिये गाडी रोक दी, ऐसा करेंगे तो हमारा समय गडबडा जायेगा"।

गाडी के पेनल पर दृष्टि टिकाये ही कुशवाहा जी ने कहा- "बेटा, तुम अभी साल-डेढ साल से इंजन पर चल रहे हो, तुम्हारी बात रेलवे के नियम के अनुसार एकदम सही है पर क्या है, हम पैसेंजर गाडी चला रहे हैं, वह लडकी दिवाली मनाने अपने घर जा रही होगी। हम उस समय तक गति में नहीं आये थे, और गाडी भी प्लेटफॉर्म में थी साथ ही हमने उसे देख भी लिया था तो मुश्किल से एक मिनट गाडी रोक देने से उसे सुविधा हो गई...... और वह गाडी में बैठ सकी"।

"अब रही बात हमारे गार्ड साहब की, तो यह निश्चित मानो कि अपनी लॉग बुक में उन्होंने कुछ नहीं लिखा होगा क्यों कि इन सिंह साहब को मैं तब से जानता हूं जब से वह तुम्हारे जैसे प्रशिक्षु गार्ड थे। हम साथ साथ खूब चले हैं। बेटे, हम सब भी तो जीवन की यात्रा पर ही हैं और इस यात्रा में यदि कोई थोड़ी भी मदद करता है, कोई सुविधा देता है तो उस समय हमें कितना अच्छा लगता है ना! कुछ समझे सुभाष बाबू. "...

उनके सहायक ने यह सुना और मुस्कुरा कर दो बार जोर से यूं ही हॉर्न बजा दिया जैसे कुशवाहा जी की सोच को सलामी दे रहा हो।

श्री सदानंद आंबेकर, सी 149, सी सेक्टर, शाहपुरा भोपाल मप्र 462039 **मो.** 8755 756 163 **E-mail:** ambekar.sadanand@gmail.com

लेख - रामलीला मंचन का इतिहास और उसका वैश्विक परिप्रेक्ष्य – श्री सुरेश चौधरी

रामकथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना का आधारभूत आख्यान है। यह केवल धार्मिक महाकाव्य न होकर मानव जीवन के आदर्शों, नीति, धर्म और सामाजिक संगठन का प्रतीक है। इसी कथा का सार्वजनिक नाट्यरूप "रामलीला" कहलाता है। रामलीला आज केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में भी भिन्न-भिन्न रूपों में जीवित परंपरा के रूप में प्रचलित है। प्रस्तुत आलेख में रामलीला के भारतीय इतिहास, उसके ऐतिहासिक प्रमाणों तथा थाईलैंड, वियतनाम आदि देशों में उसके प्रसार का विवेचन किया गया है।

1. भारत में रामलीला का इतिहास

(क) आरंभ और प्राचीनता

रामायण का काव्यात्मक रूप वाल्मीकि (500 ई. पू. से 100 ई.) द्वारा दिया गया। आगे भवभूति के उत्तररामचरित (8वीं सदी) जैसे संस्कृत नाटकों में भी रामकथा का नाट्यरूप मिलता है। लोकजीवन में यह कथा कथा-वाचकों और भागवतारों द्वारा गाई-बजाई जाती रही। धीरे-धीरे यह नाट्यरूप में विकसित हुई।

कृतवासी रामायण पर आधारित जात्रा नाटक राम कथा का उल्लेख 15 वी सदी में मिलता है।

रामलीला के मंचन का रूप पूर्ण रूप से राधेश्याम रामायण आने से बदल गया। यह रामायण प्रख्यात राम कथा वाचक पंडित राधेश्याम कथावाचक ने की थी। इस रामायण में श्री राम की कथा का वर्णन इतना मनोहारी ढँग से किया गया है कि समस्त राम प्रेमी जब-जब इस रचना का रसपान करते है और इस पर आधारित रामलीला देखते हैं तो झूम उठते हैं और तब-तब वे इसके प्रणेता के प्रति अपना आभार व्यक्त करते है।

हिन्दी, उर्दू, अवधी और ब्रजभाषा के आम शब्दों के अलावा एक विशेष गायन शैली में रचित राधेश्याम रामायण गाँव, कस्बा और शहरी क्षेत्र के धार्मिक लोगों में इतनी लोकप्रिय हुई कि राधेश्याम कथावाचक के जीवनकाल में ही इस ग्रन्थ की हिन्दी व उर्दू में पौने दो करोड़ से अधिक प्रतियाँ छपीं और बिकीं।

मुख्य रूप से भारत में ही सैकड़ों रामकथा ग्रन्थ हैं परंतु उनमें मुख्य हैं,

प्रमुख रामायणों के नाम

- वाल्मीकि रामायण
- रामचरितमानस
- कृत्तिबासी रामायण
- कम्ब रामायण
- डंडी रामायण(जगमोहन रामायण)
- उत्तर रामायण

- अद्भुत रामायण
- आनंद रामायण
- अध्यात्म रामायण
- राधेश्याम रामायण

थाई की रामाकेन नामक रामायण अति प्रचलित है,

इन सभी रामकथाओं को आधार मान कर सदियों से राम कथा का मौखिक वाचन तो प्रारम्भ से हो रहा है साथ ही आरम्भ में यदा कदा अभिनीत कर प्रसंग में रोचकता दी जाती रही वही रोचकता रामलीला का रूप ले चुकी थी।

(ख) तुलसीदास और संगठित रामलीला

16वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस (1574–77 ई.) की रचना ने उत्तर भारत की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना को गहन रूप से प्रभावित किया। तुलसीदास की प्रेरणा से काशी में कथा-पाठ को संवादात्मक मंचन रूप मिला। जो कि 1625 ई. से आरम्भ हुआ उसमे कहते हैं तुलसीदास जी स्वयं राम चरित मानस की चौपाइयों को पढ़ते थे और लोजी उन चौपाइयों पर मंचन करते थे।

18वीं शताब्दी में काशी के रामनगर की रामलीला को महाराजा उदित नारायण सिंह ने संगठित एवं भव्य रूप दिया। यहाँ की रामलीला लगभग 31 दिनों तक चलती है और आज भी विश्वविख्यात है।

(ग) अन्य केंद्र

अयोध्या, चित्रकूट, मथुरा, दिल्ली, राजस्थान, बिहार एवं मध्य भारत में 17वीं–18वीं शताब्दी से रामलीला का व्यापक मंचन आरंभ हुआ। स्थानीय भाषाओं—अवधी, ब्रज, भोजपुरी—में इसे लोकनाट्य शैली में प्रस्तुत किया गया।

2. प्रमाण और ऐतिहासिक साक्ष्य

रामचरितमानस (1574–77) : रामलीला का आधार-ग्रंथ।

रामनगर रामलीला (18वीं सदी) : आज भी निरंतर चल रही परंपरा।

UNESCO (2008) : “Ramlila, the traditional performance of the Ramayana” को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया गया।

ब्रिटिश यात्रियों के वृत्तांत : W. H. Sleeman (19वीं सदी) ने उत्तर भारत की मेलों एवं रामलीला का उल्लेख अपने संस्मरण Rambles and Recollections of an Indian Official (1844) में किया।

समकालीन समाचार-पत्र : 19वीं–20वीं शताब्दी में लाखों की भीड़ वाले रामलीला उत्सवों का विवरण।

3. दक्षिण-पूर्व एशिया में रामलीला परंपरा

भारत से समुद्री व्यापार, ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं के माध्यम से रामायण दक्षिण-पूर्व एशिया पहुँची और वहाँ की संस्कृति में रच-बस गई।

(क) थाईलैंड

रामायण का स्थानीय नाम रामकियन (Ramakien) है।

14वीं–15वीं शताब्दी में अयुथ्या साम्राज्य के दौरान इसका प्रवेश हुआ।

राजा राम-I (1782–1809) ने इसे संकलित करवाया।

आज भी “खोन” नृत्य-नाट्य में रामलीला मंचित होती है।

(ख) वियतनाम

यहाँ रामायण का रूप फ्रा लक फ्रा लाम (Phra Lak Phra Lam) के रूप में प्रचलित है।

इसका प्रसार चम्पा साम्राज्य (12वीं–15वीं सदी) के माध्यम से हुआ।

बौद्ध और लोकनाट्य परंपराओं में आज भी यह जीवित है।

(ग) कंबोडिया

स्थानीय नाम रैमकेर (Reamker)।

7वीं–8वीं सदी से ही शिलालेखों और मंदिर मूर्तियों में प्रमाण मिलते हैं।

अंकोरवाट मंदिर की दीवारों पर रामायण प्रसंग अंकित हैं।

(घ) इंडोनेशिया

यहाँ का ककाविन रामायण (9वीं सदी) और वायंग नाट्य परंपरा विश्वविख्यात है।

प्राम्बानन मंदिर में प्रतिवर्ष “रामायण बैले” आज भी आयोजित होता है।

(ङ) लाओस

यहाँ भी नाम फ्रा लक फ्रा लाम है।

यह लोकसंस्कृति एवं नैतिक शिक्षा का प्रमुख आधार है।

4. सांस्कृतिक महत्व

रामलीला ने धर्म, कला और समाज को जोड़ने का कार्य किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी रामलीला सभाओं ने जनजागरण में भूमिका निभाई। दक्षिण-पूर्व एशिया में रामलीला का प्रसार भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का सशक्त प्रमाण है।

निष्कर्ष

रामलीला भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अनूठी परंपरा है। इसकी जड़ें वाल्मीकि और तुलसीदास तक जाती हैं और शाखाएँ थाईलैंड, वियतनाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया और लाओस तक फैली हैं। UNESCO द्वारा मान्यता प्राप्त यह धरोहर भारतीय संस्कृति की वैश्विक गूँज का प्रतीक है।

श्री सुरेश चौधरी ‘इंदु’

कविता - एक बुंदेली पूर्णिका - नेह प्रेम की जोत जरइये - श्रीमती तरुणा खरे 'तनु'

दीपावली तेहार मनइये
नेह -प्रेम की जोत जरइये

मिट जाबै मन को इंदयारो
ऐंसो उजयारो फैलइये

ऊंची बखरी सैं कुटिया तक
दीन हीन सबखां हरसइये

भेदभाव मन के मिट जाबैं
इंसानों को फर्ज निभइये

बैठे हैं जे मन खां मारे
उनके मन मै आस जगइये

छोड़ बिदेसी साज सजावट
देसी चीजन खां अपनइये

हँसी खुसी के राकिट छोड़ें
आसा की फुलझरी जरइये

घर बाहर की करत सपाई
मन मै बैठी गर्द हटइये

साप उर सुद्ध हवा पानी हो
ऐंसी सब मिल जुगत भिड़इये

'तनु' अनार छूटैं खुसियों
आपस मै सद्भाव बढ़इये

श्रीमती तरुणा खरे 'तनु', जबलपुर मध्यप्रदेश

व्यंग्य – यदा यदा हि धर्मस्य... - श्री शारदा दयाल श्रीवास्तव

हे केशव! यह क्या लिखवा गये तुम शास्त्रों में कि जब जब धर्म की हानि होती है, तुम अधर्मियों का नाश करने धरती पर जन्म लेते हो। बस, तुम्हारे इसी स्टेटमेंट की आड़ में जो चाहे खुद को तुम्हारा अवतार बताने लगा है और दावा करने लगा है कि वह धर्म की पुनर्स्थापना हेतु जन्मा है। इधर संतगण भी कहने लगे हैं कि धरती पर धर्म का लोप हो गया है। इन संकेतों से प्रभावित होकर धर्मपरायण प्रजा मानने लगी है कि अवश्य ही इस देवभूमि में तुम्हारा अवतरण हो चुका है, यहाँ तक कि अब तो कलयुग होने में ही संदेह होने लगा है। लगता है सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग के पड़ावों को पूर्ण कर कालचक्र ने अगली परिक्रमा आरम्भ कर पुनः सतयुग में प्रवेश कर लिया है और धर्म की पुनर्स्थापना हो चुकी है। देखो न जनार्दन! देश भर में धर्मधारा अपने पूरे वेग से प्रवाहमान है, विभिन्न स्थलों पर देवलोक निर्मित हो रहे हैं, कथावाचकों की वाणी सुनने को व्याकुल धर्मावलम्बियों के जनसमूह टूटे जा रहे हैं, जिसके जमघट से आये दिन होते बाधित यातायात के नये-नये कीर्तिमान बन रहे हैं, दिव्य राजपुरुष तीर्थ गुफाओं में तपस्या कर रहे हैं, नेतागण नदी परिक्रमाएं कर रहे हैं, नवयुवक काँवड़ यात्राएं कर रहे हैं, वृद्धगण मुफ्त तीर्थ यात्राएं कर रहे हैं, करोड़ों की संख्या में प्रजा गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त कर रही है, सरकार गंगा आरती कर रही है और करोड़ों आस्थावानों के पापों को ढ़ोती सुरसरि गंगा बोझिल कदमों से बहे जा रही है।

सतयुग धर्मप्रधान युग था, अधर्म का नामोनिशान न था पर तब भी हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष जैसे आतताइयों के मारे तुम चैन से न बैठ पाए; यही नहीं तुम्हे कभी मत्स्य, कभी कच्छप, कभी वाराह तो कभी नरसिंह का गेट-अप बनाना पड़ा। त्रेता में पापों का पहाड़ रावण ने खड़ा किया तो द्वापर में कंस ने अत्याचारों की अति कर दी फिर कलयुग तो है ही अधर्मियों का युग; यहाँ जो सत्ता से बाहर होता है समझो अधर्मी हो जाता है। हे अच्युत! वहाँ क्षीर सागर में गहन जलराशि के सिवा और क्या रखा है, और करते भी क्या हो वहाँ पड़े-पड़े? वहाँ न तो चुनावी हलचलें हैं और ना ही संसद के गाली गुप्ते सुनाई देते हैं, ना डीजे पर बजकर धरती हिला देने वाला गगनभेदी देव संगीत है और न ही सोशल मीडिया का भड़काऊ नेटवर्क... बड़ी बोरिंग लाईफ है। भरतखण्ड की इस पुण्यधरा पर अपना परमानेंट हैडक्वार्टर बना कर रहोगे तो बार-बार के अवतारों के झंझट से मुक्ति भी मिलेगी और तुम्हारे पीठ फेरते ही अधर्मी आसुरी शक्तियाँ भी पैर न पसार पायेंगी। और नटखट! अब मानहानि के मुकदमे के भय से कोई तुम्हे माखनचोर भी न कह पाएगा ऊपर से यहाँ की ट्रोल टीम उसके सात पुश्तों तक की ऐसी खबर लेगी कि वह खुद अपने बाल नोचने लगेगा।

प्रभु! साधुगण कहते हैं-"सबै भूमि गोपाल की" और तुम्हारे नाम पर आसन जमा कर अपना साम्राज्य खड़ा करते जाते हैं। राजनेता भी इसी धर्ममार्ग का अनुसरण करते हुए अपनी भू सम्पदा वद्धि कर देश के विकास में लगे हैं। राजशक्ति को प्रसन्न कर धनिक-वणिक भी गोपाल की मूल्यवान सम्पदा का प्रतिफल प्राप्त कर रहे हैं। जब समूची राज सत्ता ही धर्ममार्गी हो तो भला राजसेवक ही क्यों वंचित रहे, तो वह भी इस पुण्यलाभ में अपना हिस्सा समेट रहा हैं। दामोदर! गोपाल की 'सबै भूमि' का प्रसाद सांसारिक विषयों से विरक्त साधुओं, जनहितैषी राजनेताओं, दानप्रिय धनिकों, साधुहृदय वणिकों व सेवाभावी राजसेवकों में ही तो पूरा नहीं पड़ता है कि पवित्र भूमि पर बदमाश गरीब-गुरबों की गंदी झुग्गियों की खरपतवार उग कर मूल्यवान भूमि का

अवमूल्यन कर देती है। धर्मदण्ड धारण किये राजसत्ता की दृष्टि में शासकीय भूसम्पत्ति की छिनतई निषिद्ध है अतएव उसके राजसेवक दिव्य बुलडोजर रथ पर सवार होकर राजधर्म का पालन करते हैं और झुग्गियों को भूगर्भस्त कर देते हैं।

गिरधर! इस आर्यभूमि के वासी भूमाता के लघुतम अंश तक से बहुत स्नेह करते हैं और उसे अपनी माता मानते हैं। भूमाता किसी और की हो तो यह स्नेह और अधिक प्रगाढ़ हो जाता है। भूमि के टुकड़े के लिये ही तो इतनी बड़ी महाभारत हुई। परम्परा आज भी जारी है। देखो न मुरारी, बुलडोजर रथ के साथ राजसेवकों के वापस होते ही, उजाड़ी गयीं झुग्गी बस्तियाँ पुन: पूरी बेशर्मी से ठीक उस तरह उठ खड़ी होती हैं, जैसे तुम्हारे बैकुण्ठ प्रस्थान करते ही अधर्म अपने पैर पसार लेता है।

इसलिये गोविंद, तुम इसी देवभूमि में रम कर रासक्रीड़ाओं का आनन्द लो, सड़कों पर जमे आवारा गोधन से वाहन टकरा जाने पर चालक के हाथ-पैर तोड़ कर दण्ड दो और कहीं प्रदूषित यमुना के तीर पर कदम्ब के ठूँठ पर बैठ कर बंशी बजाओ।

माधव! तुम्हारे द्वापर वाले अवतार से लेकर अब तक यमुना में काफी पानी बह चुका है, युग बदल गया है और लाईफ काफी फास्ट हो गयी है। अब तुम्हे दही की मटकियाँ फोड़ने की चुहलबाजी का अवसर कदाचित ही मिले, दही अब ग्वालिनों की मटकियों में नहीं, डेयरी की मोटरों में पा ॅलीपैक होकर 'जी एस टी' लगकर आता है। हाँ! तुम्हारे जन्म दिवस पर राजनीति के धर्मप्राण पुरोधाओं के तत्वाधान में पूरे दलीय प्रचार सहित 'दही हाँडी' उत्सव नें खेल प्रतियोगिता का रुतबा जरूर हासिल कर लिया है। गोपियाँ अब न तो गाँव के पनघट पर मटकी लिये दिखतीं हैं और न ही स्नान के लिये यमुना के तीर पर; नल जल योजना से तुम्हारे गाँव में यमुना ही घर-घर पहुँचने लगी है और श्याम! चीरहरण की ठिठोली तो भूलकर भी मत करना; एण्टी रोमियो दल तुरंत धर लेगा। यह तुम्हारा द्वापर वाला जमाना थोड़ी है कि भरे दरबार में स्त्री निर्वस्त्र की जाती रहे और एक से एक योद्धा और शास्त्रज्ञ मुँह में दही जमाकर बैठे रहें। यहाँ सत्तादल की बैटरी से संचालित मुस्तैद पुलिस का अपना न्याय शास्त्र है जो दूध को मथकर पहले अपने लिये मक्खन निकालता है और तदानुसार अपने पुलिसिया नीर-क्षीर विवेक से कार्यवाही करता है।

हे योगीश्वर! पानी सर तक आ गया है। पता नहीं तुम्हारा 'कल्कि अवतार' अभी आया या नहीं पर तुम्हारी दुनियाँ काफी बदल गयी है। मनुष्य ने कृत्रिम मेधायुक्त ह्यूमेना ॅयड रोबोट बनाने की शक्ति प्राप्त कर तुम्हारे देवत्व को चुनौती दे दी है। यह रोबोट सामाजिक व्यवहार की नकल कर सकता है, मानव जैसी बात-चीत कर सकता है और भावनाएं प्रकट कर सकता है। सोफिया नाम के मानवाभ रोबोट को एक देश ने विधिवत नागरिकता दे दी है। विदेश में निर्मित सोफिया में संस्कार भी विदेशी होंगे; हमारे वैदिक संस्कार तो कतई न होंगे। हमारे यहाँ तो प्राचीन ज्ञान ही इतना भरा पड़ा है कि हमे कृत्रिम मेधा (A I) की आवश्यकता ही न थी अन्यथा हम तो पहले ही वैदिक रोबोट बना कर वैश्विक जगत में अपना डंका पीट लेते।

हे जगन्नाथ, तुम शीघ्र प्रकट होकर विधर्मी रोबोट का विनाश करो और हमें विश्वगुरू पद पर प्रतिष्ठित करो। तब तक हम भग्वद् गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग पर चिन्तन कर अपनी ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाते हैं।

श्री शारदा दयाल श्रीवास्तव, भोपाल

लेख – नए भारत की बदलती तस्वीर – श्री प्रियदर्शी खैरा

इंजीनियरिंग समस्याओं का निदान करती है। यह हमें जटिलता से सरलता और विपन्नता से संपन्नता की ओर ले जाती है। हमारे जीवन को सुगम बनाती है। कुछ वर्ष पहले तक गांव में सड़क बनना समाचार बनता था और आज गांव में सड़क न होना समाचार होता है। कुछ वर्ष पहले तक गांव में जल नल लगना समाचार बनता था और अब गांव में जल नल न होना समाचार होता है। कुछ वर्ष पहले तक गांव में बिजली पहुंचना समाचार होता था और अब गांव में बिजली न होना समाचार बनता है। कुछ समय पहले तक गांव में पक्का मकान दर्शनीय स्थल हुआ करता था, अब कच्चे मकान गिनती के रह गए हैं। इंजीनियरिंग सपनों को सच करती है। जीवन को सरल बनाती है। आईये, इस लेख में हम अपने देश के कुछ ऐसे उत्कृष्ट सिविल इंजीनियरिंग कार्यों की चर्चा करते हैं, जिनकी चर्चा आज सारे विश्व में है। विकसित देश भी अब मानने लगे हैं कि भारत की सिविल इंजीनियरिंग विश्व स्तर की है।

कश्मीर घाटी तक ट्रेन का पहुंचना एक सपने का सच होना है। चिनाब नदी का सेतु संसार का आठवां आश्चर्य है। आखिर हमारे इंजीनियरों ने हिमालयीन चुनौतियों का सामना करते हुए दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज (मेहराब सेतु), चिनाब सेतु और भारत के पहले केबल रेलवे स्टेड सेतु, अंजी खड्ड सेतु का निर्माण कार्य पूरा कर लिया। हमारे प्रधानमंत्री जी ने 6 जून 2025 को इनका लोकार्पण किया और, साथ ही कटरा से श्रीनगर के लिए वंदे भारत ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई।

चिनाब पुल भूकंप रोधी है। ये 260 किलोमीटर प्रति घंटे के वायु वेग का सुरक्षित रूप से सामना कर सकता है। इसकी लंबाई 1315 मीटर है और ऊंचाई एफिल टावर से 35 मीटर अधिक, 359 (नदी तल से) मीटर है। इसमें कुल में 17 पायान्तर(स्पैन) है, इसमें सबसे लंबा स्पैन 467 मीटर का है। इसके निर्माण में 28660 मेट्रिक टन स्टील का उपयोग हुआ है। इससे पुल में स्टील और कंक्रीट का उपयोग किया गया है। यह पुल उधमपुर- श्रीनगर- बारामुला रेलखंड पर स्थित है।

भारत में रेलवे का पहला केबल स्टैंड सेतु अंजी नदी घाटी पर बना है। अंजी नदी चिनाब की सहायक नदी है। अंजी खड्ड पुल की लंबाई 725. 5 मीटर है। नदी तल से ऊंचाई 331 मीटर है। यह पुल 193 मीटर ऊंचे खंभे पर 96 हाई टेंशन स्टील केबलों के माध्यम से टिका है। इस पुल में तीन स्पैन है, सबसे लंबा स्पेन 290 मीटर है। इसमें रेलवे ट्रैक के साथ 3. 75 मीटर चौड़ा सर्विस रोड भी है। यह पुल 230 किलोमीटर प्रति घंटा के वायु प्रवाह को सहने में सक्षम है एवं भूकंपीय जॉन -5 के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारत का दूसरा सबसे ऊंचा रेलवे पुल है। यह स्टील सेतु है। यह पुल उधमपुर- श्रीनगर- बारामुला रेल लाइन के कटरा-बनिहाल खंड को जोड़ता है।

इन पुलों के निर्माण से कश्मीर घाटी का शेष भारत से रेल मार्ग से भी संपर्क जुड़ गया है। कश्मीर से कन्याकुमारी अब रेल मार्ग से भी पहुंचा जा सकता है। हिमालय पर्वत श्रृंखला को देखते हुए यह कार्य कल्पना माना जाता था। आज वह कल्पना साकार हो गई है।

अयोध्या के राम मंदिर की जितनी चर्चा पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं वैधानिक कारणों से की जाती है, उससे अधिक चर्चा अब उसके निर्माण के तकनीक एवं भव्यता की होती है। मंदिर परिसर को 70 एकड़ क्षेत्र में विकसित किया जा रहा है। जिसका 70% क्षेत्र हरित क्षेत्र है। मंदिर की लंबाई 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट और ऊंचाई 161 फीट है। मंदिर में तीन मंजिल है। मुख्य गर्भ ग्रह भूतल में है जिसमें रामलला विराजमान है। प्रथम तल में राम दरबार है। मंदिर के स्थायित्व के लिए इसकी नींव में 400 फीट लंबे और और 300 फीट चौड़े विशाल भू क्षेत्र में 14 मीटर मोटी रोलर कंपैक्टेड कंक्रीट बिछाई गई है। यह आश्चर्यजनक है कि इतनी विशाल संरचना में लोहे का उपयोग नहीं किया जा रहा है। मंदिर की प्लिन्थ 21 फीट ऊंची है जो ग्रेनाइट पत्थर से बनाई गई है एवं 32 सीढ़ियों के माध्यम से मंदिर में पहुंचा जा सकता है। दिव्यांग जन एवं वरिष्ठ जनों के लिए रैंप एवं लिफ्ट की भी सुविधा है। मंदिर में कुल 392 खंभे और 44 द्वार हैं। मंदिर के चारों ओर 732 मीटर लंबा परकोटा प्रावधानित है। मंदिर में भू सतह के ऊपर कंक्रीट का उपयोग नहीं किया गया है। खंभे विशेष पत्थर से बनाए गए हैं। मंदिर में मनमोहक नक्काशी है। मंदिर परंपरागत नागर शैली में बनाया गया है एवं निर्माण में स्वदेशी तकनीक को अपनाया गया है।

अयोध्या का राम मंदिर अपनी भव्यता एवं दिव्यता में अनोखा है। यह सिविल इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट उदाहरण है।

एक समय था जब हमें खाद्यान्न निर्यात करना पड़ता था। कृषि क्षेत्र में आई क्रांति के कारण आज हम आयात करने की स्थिति में आ गए हैं। कृषि क्रांति में सिंचाई का महत्वपूर्ण योगदान है। आर्थिक सर्वेक्षण 2024 -25 के अनुसार अब सिंचित क्षेत्र सकल फसल क्षेत्र का 55% हो गया है। 1947 से अभी तक सिंचित क्षेत्र में लगभग चार गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। इसमें हमारे बांधों का भी उल्लेखनीय योगदान हैं। दुनिया के सबसे उंचे बांधों में से एक टिहरी बांध जिसकी ऊंचाई 260. 5 मीटर है उत्तराखंड में स्थित है। ओडिशा स्थित हीराकुंड बंध मिट्टी का सबसे लंबा बांध है जिसकी लंबाई 25. 8 किलोमीटर है। पंजाब का भाखड़ा नांगल बांध 226 मीटर ऊंचा, गुजरात का सरदार सरोवर 163 मीटर ऊंचा, नागार्जुन सागर, तेलंगाना 124 मीटर ऊंचा, इंदिरा सागर मध्य प्रदेश 92 मीटर ऊंचा और इडुकी आर्च बांध, केरल 169 मीटर ऊंचा है। लगभग सभी बांध बहुउद्देशीय है। ये बांध सिंचाई के साथ साथ विद्युत उत्पादन पेयजल आपूर्ति एवं बाढ़ नियंत्रण के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

सरदार सरोवर बांध बनने के पहले गुजरात पानी की विकट समस्याओं से जूझ रहा था। सरदार सरोवर बनने से गुजरात की पेयजल समस्या और सिंचाई समस्या का काफी हद तक समाधान हो गया है। इस बांध की ऊंचाई 163 मीटर है एवं लंबाई 1210 मीटर है। यह बांध 18 लाख हेक्टेयर से अधिक भूमि पर सिंचाई करता है। बांध में निर्मित दो बिजली घरों की विद्युत उत्पादन क्षमता क्रमशः, 1200 मेगावाट एवं 250 मेगावाट है। बांध सिंचाई और विद्युत उत्पादन के साथ-साथ पेयजल समस्या का भी समाधान करने में सहायक सिद्ध हुआ है। इसी सरदार सरोवर से 3. 2 किलोमीटर की दूरी पर केवड़िया के साधु बेट नामक नर्मदा नदी के टापू पर संसार की सबसे ऊंची मूर्ति, "स्टैचू ऑफ यूनिटी" की स्थापना की गई है। यह मूर्ति लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की है। मूर्ति की ऊंचाई 182 मीटर एवं भार लगभग 1700 मेट्रिक टन

है। इतनी विशाल मूर्ति बनाना एवं स्थापित करना अपने आप में विस्मयकारी कार्य हैं। आने वाली पीढ़ियां इसे आश्चर्य से देखेंगी।

भारत में मार्ग निर्माण के क्षेत्र में अद्भुत कार्य हुआ है। ग्राम मार्ग, जिला मार्ग, राज्यमार्ग, राष्ट्रीय राज मार्ग, द्रुतगामी मार्ग, सीमांत मार्ग सभी प्रकार के मार्गों पर आशातीत कार्य हुआ है। अब भारत का कुल सड़क नेटवर्क 63. 4 लाख किलोमीटर हो गया है, जो अपने आप में रिकॉर्ड है। इससे अधिक लंबाई की सड़क सिर्फ अमेरिका में है। पर, सड़क के घनत्व की दृष्टि से भारत अमेरिका एवं चीन से भी आगे है। 2014 में हमारे पास 91, 287 किलोमीटर राजमार्ग था जो अब बढ़कर 1, 46, 000 किलोमीटर हो गया है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना गांव की प्रगति में मील का पत्थर साबित हो रही है। अब हम 8-लेन और उससे अधिक लेन के मार्ग निर्माण कर रहे हैं। निर्माणाधीन दिल्ली- मुंबई द्रुतगामी मार्ग 8-लेन का है। यह राजमार्ग देश की राजधानी को देश की आर्थिक राजधानी से जोड़ता है। पहाड़ों को चीरती टनल, नदी को पार करते पुल, हमारे राजमार्गों की पहचान बन गए हैं। अब हमारे राजमार्ग भी इस प्रकार के बनाए जा रहे हैं जहां से विमान उड़ान भर सकें और उतर सकें। राजस्थान के बाड़मेर के राजमार्ग से जब विमानों ने उड़ान भरी तो आम आदमी आश्चर्यचकित हो गया। दूरगामी मार्ग पर फर्राटा भरते वाहन अब भारत की नई पहचान बन गए हैं। दुर्गम से दुर्गम स्थल पर पहुंचती सड़कें, उन्नति का नया रास्ता खोल रही है। सीमांत सड़कों के निर्माण ने जहां पर्यटन एवं परिवहन को नई दिशा दी है, वही सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्रीनगर से कन्याकुमारी राष्ट्रीय राजमार्ग- 44, देश की सबसे लंबी सड़क है, जिसकी लंबाई 3745 किलोमीटर है और जो 11 राज्यों से होकर गुजरती है। देश में सड़कों का जाल बिछ गया है। जिसने हमारी परिवहन व्यवस्था को नई दिशा दी है।

जब हम आकाश की ओर देखते हैं तो दो-चार घंटे के अंतराल से कोई ना कोई हवाई जहाज उड़ता हुआ दिख जाता है। ये उड़ान भरते हैं विमानपत्तन से। आज हमारे पास 137 विमानपत्तन है, जिसमें 103 घरेलू, 24 अंतर्राष्ट्रीय और 10 सीमा शुल्क विमान पत्तन है, जहां से हवाई यात्राएं संचालित होती हैं। अब क्षेत्रीय संपर्क योजना के तहत छोटे हवाई अड्डे भी विकसित किया जा रहे हैं। अंतर्देशीय जल परिवहन की दिशा में भी कार्य प्रारंभ हो चुका है। हमने परिवहन के हर क्षेत्र में सफलता के झंडे फहराए है।

आज हमारे नगरों में रोज नया रंग भर रहा है। गगनचुंबी अट्टालिकायें, फ्लाईओवर, ओवर ब्रिज, चोड़ी-चोड़ी सड़कें, बाग बगीचे, स्वच्छता के प्रति जागरूकता ने, शहरों की पहचान बदल दी है। पुरी हो या बनारस, दिल्ली हो या चेन्नई, उज्जैन हो या रामेश्वरम, हैदराबाद हो या चंडीगढ़, सभी अपनी संस्कृति की खुशबू को सहेजते हुए आधुनिकता के नए-नए रंगों में ढल रहे हैं।

यह कुछ कार्यों का संक्षिप्त विवरण है और भी कई कार्य हैं जो इस लेख में छूट गए हैं, पर इससे उनका महत्व कम नहीं होता। एक छोटे से निर्माण कार्य की भी राष्ट्र निर्माण में महती भूमिका है। इन कार्यों से भारत की तस्वीर बदल रही है। यह नए dr भारत की बदलती तस्वीर है, जिसमें सर विश्वेश्वरैया के पद-चिन्हों पर चलने वाले सिविल इंजीनियरों का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

श्री प्रियदर्शी खैरा, भोपाल

लेख - मौजी – मातृत्व का अमर कश्मीरी लोकगीत डॉ. नवनीत धगट

कश्मीर की वादियों से उठता लोकगीत **"वफादार मौजी"** केवल सुरों की गूँज नहीं, बल्कि मातृत्व की महिमा का अनन्त उद्घोष है। ऐसे गीत कश्मीर के ग्रामीण समाज में शादी-ब्याह, त्योहारों या पारिवारिक समारोहों में गाए जाते हैं। गीत सुनिए नीचे दी जा रही लिंक से :

https://youtu. be/0cF4fvENDxg? si=n4fqYGXvb_QXzJa8

गीत की संगत करता हुआ **लोक वाद्य 'रबाब'** है। इसमें **"वफ़दार"** का अर्थ है विश्वासपात्र, भरोसेमंद और **"माउ"** का अर्थ है **'माँ'**। गीत में गायक अपनी **मौजी**— अर्थात् **माँ** से संवाद करता है।

चे हुव कह वोचुम नै वफ़ा दर मौजी

तुम जैसी वफ़ादार कोई न मिली, मौजी

मैन निश चाहिन चाइ लवी संसार मौजी

मेरे लिए तुम्हारी छवि ही पूरे संसार के बराबर है, मौजी

वंदै सर पदान तव घोष नादन

मेरा माथा तुम्हारे चरणों में बिछ जाए,

अगर तुम मेरी पुकार सुन लो

चकाई पोश पैथे पैथे हलम दार मौजी

फूलों की बौछार मैं तुम पर करूँ,

ताकि तुम्हारी गोद फूलों से भर जाए, मौजी

मैन न वोच चे हुव कह वफ़ादार मौजी

तुम जैसी वफ़ादार कोई न मिली, मौज

लक्चारुक मचर म्यौने

ओ बचपन की जिद्दें!

हा करते चारे म्यौने

मेरे सहारा बन जाओ!

वक़्ता चे वापस आए

ओ घड़ी! तुमसे विनती है, उल्टी चलो!

बिश्ते बिश्ते बरियोव खोट्कोव वन

क्या तुम जंगल गए थे, नखरेबाज़ बिल्ली?

तोरे क्या वोलुथ बरे पन

क्या वहाँ से तुलसी की पत्तियाँ लाए थे?

सु कमन चौकटो कोत्रान

क्या तुमने उन्हें कबूतरों में बाँट दिया?

कोतर बीथी मर्कन

कबूतर तो खुले में कतार में खड़े हैं!

जून चाहि गेंदा तारकान

चाँद तारों से इश्क़ फरमा रहा है!

अगर ज़ु ति मांगे हम पेश कशी बे तहवाई

अगर तुम मेरी जान भी माँगो,

तो मैं खुशी से तुम्हें सौंप दूँगा।

तथ नै न ज़ह कर बे इंकार मौजी

और उसमें कभी इंकार नहीं होगा, मौजी।

मैन न वोच चे हुव कह वफ़ादार मौजी

तुम जैसी वफ़ादार कोई न मिली, मौजी

मैन निश चाह्नि चाइ लवी संसार मौजी

मेरे लिए तुम्हारी छवि ही पूरे संसार के बराबर है, मौजी

डेटुथ सग जहाँतस अन्नद्वंद हयातस

तुमने संसारों को सींचा है,

पूरा अस्तित्व – जीवन!

करीत पाईद औलिया अवतार मौजी

तुमने संतों और पैग़म्बरों को जन्म दिया, मौजी

मैन न वोच चे हुव कह वफ़ादार मौजी

तुम जैसी वफ़ादार कोई न मिली, मौजी

मैन निश चाह्नि चाइ लवी संसार मौजी

मेरे लिए तुम्हारी छवि ही पूरे संसार के बराबर है, मौजी

मत गस ज़ायाय, मत गस ज़ायाय

कृपया मुरझा मत जाना, कृपया मुरझा मत जाना।

चौनि वुज़ु छुम

मेरे भीतर की पवित्रता तुम्हारी है।

गंदिथ हा सुई छुम

यही तो मुझे संभाले हुए है।

शाह रग छे मैनै

तुम ही मेरी जुगुलर नस हो।

गुनाह आफ़ू छुम

तुम ही मेरे गुनाहों की माफ़ी हो।

मत गस ज़ायाय

कृपया मुरझा मत जाना

गीत का भावार्थ है कि माँ अपने बच्चे के लिए हमेशा कठिनाइयाँ सहती है, वह दुःख सहकर भी बच्चे को सुख देती है, उसके प्रेम में स्वार्थ नहीं होता, माँ ही सबसे बड़ी सहारा और रक्षक होती है।

गीत में माँ केवल जननी नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड की धुरी बनकर सामने आती है। गायक उसकी वफादारी को जीवन की नस-नस से जोड़ देता है और उसके चरणों में माथा नवाकर आत्मा का पूर्ण समर्पण कर देता है। माँ की गोद को फूलों से सजाने की अभिलाषा, बचपन की स्मृतियों और प्रेम की नमी से भीगी हुई लगती है।

गीत की प्रतीकात्मकता भी गहन है— जंगल और तुलसी पवित्रता का बोध कराते हैं, चाँद और तारे शाश्वतता के साक्षी बनते हैं, और संतों-पैग़म्बरों का जन्म माँ को दिव्यता की जननी ठहराता है।

गीत की सबसे मार्मिक पुकार है— "कृपया मुरझा मत जाना। " यह केवल माँ से नहीं, बल्कि मातृत्व और जीवन की संवेदना से की गई प्रार्थना है— एक ऐसी विनती, जो हर हृदय की सबसे निर्मल धड़कन बन जाती है।

डॉ. नवनीत धगट, मो. 9827012124 dhagatnavneet@gmail. com

कविता - विष्णु - प्रिया के पर्व पर मंगलकामनाएं – श्री प्रतुल श्रीवास्तव

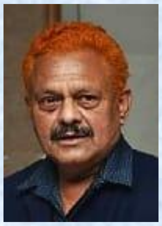

महिमामय श्रीमान बंधुवर,
प्रियजन परम सनेही।
विष्णु - प्रिय का पर्व,
मालिका - दीपक सघन - अछेही।।
*
करते हम स्मरण आज,
साक्ष्य दीप - प्रज्वलित बाती।
किरन लेखनी काल - पत्र पर
ज्योतिर्मय रंग - राती।।
*
लिख रही कामना मंगलमय,
शुभ स्वस्तिक चिन्ह बनाती।
अनगिन धन चिन्हों पर निर्भर,
गैरिक आभ सुरांती।।
*
राग रथी हों आप वृती,
शुचि कृतियों के अभिनेता।
परम शांतिमय प्रखर कांतिमय,
समरस समस्वर वेता।।
*
नेक दृष्टि के आकांक्षी हम,
करते ज्योति समर्पित।
अर्जित करें आप वह सब जो,
गरिमामय हो वांछित।।
*
महिमामय श्रीमान बंधुवर,
प्रियवर परम सनेही।
विष्णु - प्रिया का पर्व,
मालिका - दीपक सघन - अछेही।।

श्री प्रतुल श्रीवास्तव, 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर – पिन – 482002 मो. 9425153629

कहानी - और जुन्हाई शर्मा गई – डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी

'तुम्हे हो क्या गया है?'सुबह चाय की टेबुल पर ही रुचिरा ने ख्याल किया था कि चाय पीते समय शोभित का मुँह लटका हुआ है।

'कुछ नहीं। ' एक संक्षिप्त एवं टका सा जवाब। और शोभित चाय पीकर कमरे में वापस चला गया।

बाबूजी तो चाय पीते पीते सुबह के अखबार के पन्ने पलट रहे थे, 'देखो, इन खस्तहाल सड़कों को देखो। हे दीनदयाल, इनकी हालत इतनी दीन क्यों है?'अखबार के तीसरे पन्ने पर प्रकाशित चेचक के धब्बे जैसे गड्ढों से भरपूर सड़कों की फोटो पर वे हाथ फेरते रहे।

उधर कनखिओं से बेटे को चुपचाप चले जाते हुए देख माताजी ने इशारे से बहू से पूछा, ' ए दुलहिन, बात का हौ?'

अब रुचिरा को इतने अनुसंधान की फुर्सत कहाँ? दोनों बच्चों को स्कूल भेजना है। अभी उनकी बस आ जायेगी। उनका नाश्ता लगाकर टिफिन के लिए पराठा सब्जी पैक कर देना है। सबके मन की थाह लेने की उसे फुर्सत कहाँ?

मगर तवे पर पराठे रखते हुए वह यही सोच रही थी- आखिर बात क्या है? इसी हफ्ते उसकी दीदी और जीजाजी अपनी बेटिओं को लेकर इनके यहाँ घूमने आ रहे हैं। कहीं उसीके लिए.... ? नहीं। कुछ तो खर्च बढ़ेगा ही। लड़कियों को मौसी की तरफ से कुछ देना भी पड़ेगा। मगर क्या उसीके लिए शोभित इतना परेषान हो जायेगा? मन की जिज्ञासा थोड़ी देर के लिए मन ही में कैद रह गयी।

अपना सेविंग सेट लेकर शोभित बेसिन के पास आकर खड़ा हो गया। यहीं षीषे के सामने खड़े खड़े वह रोज अपनी दाढ़ी बनाता है। रुचिरा ने पास आकर पूछा, 'कप में गरम पानी ला दूँ?'

'नहीं इतनी ठंड नहीं है। '

'क्यों नाराज हो, कुछ बताओगे भी?'रुचिरा बातों से ही पति के गालों को सहलाने का प्रयास करने लगी।

'तुम्हें किसने बता दिया कि मैं नाराज हूँ? मुझे कुछ नहीं हुआ है। '

'तो सबेरे से इस तरह मुँह लटकाये क्यों घूम रहे हो?'रुचिरा का अपना ढेर सारा काम है। कब तक वह अपने पति परमेष्वर की चिरौरी करे?

'दुइ कि होइ एक समय भुआला, हँसब ठठाइ फुलाउब गाला?' शोभित मानो आईने को मानस का दोहा सुना रहा था।

'अकारण ठठा कर हँसने से तो लोग पागल कहेंगे। मगर गाल फुलाने की कोई तो वजह होगी। '

शोभित की आँखें अपनी पत्नी की आँखों में झाँक कर मानो कुछ तलाश रही थीं। थोड़ी देर ठहर कर उसने कहा, ‘तुमसे कुछ कहना है। ’

‘क्या? अब, बोलो न बाबा। क्यों मुझे नाहक खटका में डाल रहे हो?’रुचिरा मन ही मन छटपटा रही थी।

‘तो सुनो -। ’कहते कहते शोभित मानो ठहर गया। फिर एक दीर्घश्वास छोड़कर कहा, ‘नहीं, रहने दो। ’

‘अब यह ड्रामा बंद करो। कहना है तो कहो, वरना -। ’

‘वरना -? वरना क्या?’शोभित की आवाज मानो मृदंग पर थाप की तरह गुंजित होने लगी।

‘अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। कहना है तो कहो, वरना मैं चली। मेरा ढेर सारा काम पड़ा हुआ है। ’रुचिरा रसोई की ओर चली गई।

शोभित की निगाहें उसका पीछा करती रहीं।

अब कल ही तो अपनी बुआ के घर से लौटने में रुचिरा को रात हो गई थी। फूफा अपने बेटे के यहाँ से बाईपास करवा कर लौटे हैं। सो उन्हें देखने जाना जरूरी था। इधर अम्मांजी को ही षाम की चाय बनानी पड़ी। स्कूल से लौटने पर बच्चों को खिलाना पड़ा। जब शोभित ऑफिस से घर लौटा था तो उन्होंने ही उसे चाय बनाकर पिलायी थी। क्या इन्हीं वजहों से शोभित नाराज है?

वैसे किसी अवसर के अलावा फूफाजी के घर जाना शोभित को पसन्द नहीं। क्योंकि जब शोभित की बहन की शादी के लिए उनके शहर से एक लड़के का रिष्ता आया था, तो शोभित रुचिरा के साथ उनके घर जाकर उनसे कहा था, ‘फूफाजी, जरा अपने भाइयों से कह कर इस लड़के के बारे में कुछ पता तो लगा लीजिए। ’

इसपर उन्होंने टका सा जवाब दिया था, ‘देखो शोभित, मैं इन शादी ब्याह के पचड़ों में नहीं पड़ता। मैं किसी को अच्छा कहूँ, पर तुम्हे उसमें कोई ऐब दिख सकता है। और मैं किसी के बारे में कहूँ - यहाँ बहन की शादी मत करो। तो तुम्हे लग सकता है - यह लड़का तो हीरा है। इससे बेहतर लड़का तो दिया लिए ढूंढने पर भी शायद मिले। ’

शोभित एकबार दलील देने की कोशिश की, ‘जी मेरी बहन की शादी के लिए वहाँ से रिष्ता आया था, तो मैं ने सोचा आप ही से एकबार पूछ लूँ। ’

पर फूफाजी अपना ए के फिफटी सेवेन चलाते रहे, ‘अब देखो न कितने सारे आईएएस लाखों करोड़ों घूस लेने के इल्जाम में फँसे हैं। शादी के मार्केट में वे भी तो अच्छे लड़के ही हैं। नहीं भाई, मुझे तो इन बातों से दूर ही रक्खो। ’

शोभित अपना सा मुँह बनाकर लौट आया था। मगर उसके मन में फुफिया ससुर के प्रति एक नाराजगी भी पनप गयी, ‘अपने पोजीशन का धौंस जमाते हैं। ’

तो क्या रुचिरा उनसे मिलने गयी थी और इतनी रात हो गयी इसीलिए........ ?

दोनों लड़के स्कूल के लिए निकल गये। उनके जाते ही शोभित ने भी नाष्ता कर लिया। बिलकुल चुपचाप।

माताजी एकबार बेटे की ओर और एकबार बहू की ओर देख रही थीं। बाबूजी ने नाश्ता करते करते बेटे से एकबार पूछा भी, 'तेरी तबिअत तो ठीक है?'

'हाँ, क्यों?' उल्टे शोभित ने ही उनसे पूछ लिया।

'नहीं, ऐसे ही। तू बिलकुल चुपचाप है, इसीलिए पूछ रहा हूँ। ऑफिस का टेन्षन घर में मत ले आया कर बेटा।'

नाश्ते के बाद अपना लंच पैक लेकर वह भी निकल गया। बस से जायेगा मेट्रो स्टेशन। फिर मेट्रो रेल से उतरकर पैदल ऑफिस पहुँचेगा। मगर हर रोज ऑफिस जाने से पहले ब्रीफकेस लेते समय कमरे में, या रुचिरा जब किचन में उसके हाथों में लंच बाक्स थमाती है तब, वह एक बार जरूर उसे अपनी बाँहों में भींच लेता है और.......

रुचिरा भी रोज यही कहती, 'अरे यह क्या कर रहे हो? अभी अम्मांजी देख लेंगी तो -?' मगर रोज वह इस पल के लिए इंतजार भी करती रहती है।

आज कुछ भी नहीं हुआ। शोभित चुपचाप चला गया। रुचिरा की आँखों में जलन सी होने लगी। किस बात से वह नाराज है? या किस दर्द को अपने सीने में छुपाकर वह इसतरह अंदर ही अंदर घुटता जा रहा है?

शोभित ने कई बार उससे कहा है, 'एक थ्री रुम फ्लैट बुक करवाने को सोच रहा हूँ। बुकिंग के रुपये तो एफ डी से हो जायेंगे। मगर आगे ऑफिस से लोन लेना पड़ेगा। वही सोच रहा हूँ- क्या करूँ? फिर दोनों बेटों की पढ़ाई भी अभी बाकी है। साल दो साल में स्कूल फीस के अलावा कोचिंग के रुपये भी तो भरने पड़ेंगे।'

क्या इसी उधेड़बुन में वह इसतरह परेशान है? मगर इसमें रुचिरा कर ही क्या सकती है? उसका क्या दोश है?

'रुचि, एहर आ। अब हमदुनों जनें भी नाश्ता कर लेईं।' माताजी ने बुलाया तो वह चुपचाप जाकर खड़ी हो गयी, 'अरे तोके का हो गैल?' उन्होंने इसके सर पर हाथ धरकर देखा, 'कहीं बुखार उखार तो नांही?'

सास बहू ने नाश्ता कर लिया।

शोभित ऑफिस से हररोज दो बार फोन करता है। एकबार ऑफिस पहुँचने के बाद, बारह एक के पहले, और फिर चार के आसपास। जब वह कुछ खाली हो जाता है। मगर आज एकबार भी फोन नहीं आया।

किसी ने रुचिरा से कुछ भी नहीं कहा है। किसी ने किसी बात के लिए उसे दोशी भी नहीं ठहराया है, फिर भी अचानक पिंजरे में बंद हो जाने पर जंगल के पंछी की हालत जैसी होती है, उसका उठना बैठना भी वैसा ही हो गया।

दोपहर को बैठे बैठे वह क्युंग-सुक शिन की किताब 'माँ का ध्यान रखना' को पलट रही थी, कि अचानक उसके दिमाग में एक बात बिजली सी कौंध गई, 'कहीं मेरे मायके से उनके पास कोई फोन तो नहीं आया, जो वो मुझे बता नहीं पा रहे हैं। अभी परसों ही तो माँ से बात हुई थी। माँ ने कहा था - बाबूजी की छाती में एक टीस सा दर्द उठा था। वो तो वैसे बीपी के पेषेंट हैं, कहीं उन्हें कुछ -? हे भगवान!'

मगर नहीं, ऐसा होता तो उन्हे सबसे पहले तो मुझे ही बताना चाहिए। फिर उस बात से तो इनके चेहरे पर दुख के बादल मँडराते रहते, मगर यह तो ऐसी सूरत बना बैठे हैं जैसे कोई तूफान उठनेवाला हो।

या फिर रुचिरा का छोटा भाई मिलाप के साथ तो कुछ नहीं हो गया? पीएचडी कर लेने के बाद भी मिलाप अभी तक एक अच्छी नौकरी जुटा पाने में असमर्थ है। सर पर जेनरल कैटगरी का अभिशाप लेकर दर दर भटक रहा है। उसने कईबार जीजा से कहा है, 'आप मि0 चोपड़ा से एकबार मेरे लिए बात चलाइये न। वह चाहेंगे तो अगली वैकेन्सी में मेरे लिए एक जगह बना सकते हैं। '

शोभित ने रुचिरा से कहा था, 'मि0 चोपड़ा क्यों मेरा रिक्वेस्ट रखने लगे? जिससे जिसका कोई मतलब हासिल होने की संभावना होती है, वहीं कोई किसी का सुनता है। वरना ऐसे लोगों से पैरवी करनेवालों की कोई कमी है क्या?'

तो -?

जाने कब आँखें नींद का घरौंदा बन गयी थीं। छोटे बेटे ने आकर माँ को जगाया, 'क्या हो गया है, मम्मी? तुम्हारी आँखों के नीचे पानी की बूँदें क्यों हैं? रो रही थी?'

'नहीं रे पगले। 'रुचिरा हलके से मुसकराते हुए उठ बैठी, 'चल, खाना लगाते हैं। '

फिर तो दिन का पंछी उड़ कर दूर क्षितिज के पार चला गया। और अनगिनत तारों को अपने आँचल में समेट कर श्यामा सुंदरी निशा धीरे धीरे आ गयी।

शाम की चाय की महफिल सज गयी। सास ससुर के साथ उसने चाय पी ली। थोड़ी देर में शोभित भी घर लौटा। अभी भी उसके मुख पर उसी तरह सावन की घनघोर घटा छाई हुई थी।

उसके मुँह हाथ धो लेते ही उसे चाय की प्याली थमाते हुए रुचिरा ने फिर से पूछा, 'बात क्या है, मुझसे भी षेयर नहीं कीजिएगा? मैं इतनी गैर हूँ?'

'यह मैं ने कब कहा?'शोभित के हाथ में चाय की प्याली मानो काँपने लगी।

'तो फिर कुछ कहते क्यों नहीं? क्यों इतना सीरियस हैं?'

'कहना तो चाहता हूँ। मगर तुम्हारे पास फुर्सत कहाँ है?'

'यहीं तो मैं तुम्हारे पास खड़ी हूँ। अब तो बताओ.... '

शोभित काफी देर तक उसे देखता रहा। बीच बीच में चाय की चुस्की लेता रहा। फिर एक साँस छोड़कर उसने मुँह फेर लिया, 'नहीं, अभी नहीं। फिर कभी....। '

'क्या हुआ?'रुचिरा उत्कंठा की चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। मगर वह पति के सामने रोना नहीं चाहती थी, इसलिए दौड़ कर कमरे से निकल गयी।

माताजी ने अपने पसन्द का सीरिअल देख लिया तो सबका खाना लगा दिया गया। सभी सोने गये। ये दोनों भी अपने बिस्तर पर। देर रात गये गगन के आँगन में अरुंधती आदि कई सितारे अपने दीये जलाने आ गये।

रुचिरा ने मन में ठान ली कि अब इस बारे में वह पति से कोई चर्चा नहीं करेगी। उसके मन में जो गांठ है, वो उन्ही को मुबारक! वह पूछने नहीं जायेगी। वह दूसरी ओर मुँह फेर कर लेटी रही। जाने फिर कब आँखों ने धोखा दे दिया। दिन भर की थकी हारी बेचारी सो गई.....

अचानक.......

'रुचि, सो गई क्या?'शोभित ने धीरे से उसकी पीठ को झकझोरा।

रुचिरा ने इधर करवट ली, 'फिर क्या हुआ? बात क्या है?'उसकी आवाज में झुँझलाहट स्पष्ट थी।

'तुमने तो फिर से नहीं पूछा कि वह कौन सी बात है जो मैं तुमसे कहते कहते रह गया?'

'मैं ने तो इतनी बार पूछा। 'उनींदी हालत में भी रुचिरा रूठी हुई थी, 'आपने तो एकबार भी नहीं कहा। '

'अब सुनना चाहती हो?'

रुचिरा पति की ओर ताक रही थी। खुली हुई खिड़की से चाँद की जुन्हाई आकर सीधे उसके चेहरे पर झिलमिला रही थी, 'क्या बात है?'

'मैं न -। ' शोभित फिर कुछ सोचने लगा।

'अब मुझे जलाइये मत। कहिए न -। मुझे सुबह उठना भी है। सुबह सबेरे मेरे ढेर सारे काम रहते हैं। '

'मैं न - तुम्हे बहुत..... बहुत.... बहुत.... प्यार करता हूँ -! ' पीपल के तने से लिपटनेवाली बेल की तरह शोभित की बांहों ने रुचिरा को कस कर दबोच लिया।

और फिर........ ?

खिड़की से आनेवाली रात की जुन्हाई शर्मा गई...

डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी, फ्लैट नं. 301, चौथी मंजिल, टावर नं 1, मंगलम आनन्दा, फेज 3 ए, हाज्यावाला कॉलोनी, रामपुरा रोड, सांगानेर, जयपुर, 302029. मो. 9455168359, 9140214489. ईमेलः asrc.vns@gmail. com

कहानी – दिवारी – डॉ. सत्येंद्र सिंह

जी हां, गांव में बचपन में दीपावली को हम दिवारी बोलते थे, इतना कह कर राजकुमार कहीं खो से गए। धीरे धीरे बोलने लगे, दिवारी के अर्थ से, क्यों मनाते हैं, इन बातों से कोई लेना देना नहीं था। काफी लंबे अरसे से दिवारी का इंतजार करते। मां पूरी बनाएगी, पूआ बनाएगी, खीर बनाएगी, हम सब साथ मिलकर खाएंगे। फटाके छुड़ाएंगे। बस यह सोचना ही खउशी का कारण रहता। वो छोटा सा तमंचा, जिस पर टिकली रखकर अंगूठे से घोड़ा दबा देते और टिकली आवाज करती हुई फूट जाती। इसके लिए किसी के साथ की जरूरत नहीं थी। अकेला ही फोड़ता रहता। और, अगर कोई दूसरा मौजूद होता तो किसका तमंचा ज्यादा आवाज करता है, इसकी होड़ में टिकली फोड़ते रहते। सूरज डूबने के बाद मां गेरू से दीवाल पर एक चित्र बनाती, दिवारी मां का। दीवले में तेल डालकर उसमें रुई की बत्ती का दीया जलाते, चित्र के मुंह पर पूरी खीर से भोग लगाते, खील बताशे चढ़ाते, मिठाई का भी भोग लगाते। खांड के खिलौने तो खाने में बहुत अच्छे लगते। फिर सब साथ में खीर पूरी खाते और फटाके चलाते। आई दीवारी.... कह कर एक गीत भी गाते पर अभी याद नहीं आ रहा है।

और, इस तरह हमारी दीपावली मन जाती। कहीं कोई प्रश्न नहीं, प्रश्न नहीं तो कोई प्रतिक्रिया भी नहीं। बस हंसते खेलते और खुश रहते। राजकुमार याद करते हुए आगे कहने लगे कि जैसे जैसे बड़े होते गए तो अपनी आजीविका के बारे में सोचने लगे। त्यौहारों की खुशी अपने आप कम होने लगी। आगे पढ़े और नौकरी में शहर आ गए। गांव छूट गया। शहर में तमाम लोगों से मिलना हुआ। दूसरे धर्म और क्षेत्र के भी। तब क्यों, क्या जैसे प्रश्न उभरने लगे, क्योंकि लोग पूछते थे। फिर मैंने लोगों से पूछा, अध्ययन किया तो दीपावली मनाने के कई कारण सामने आए। दीपावली ही नहीं उसके आसपास के त्योहार जैसे छोटी दीपावली, गोवर्धन पूजा, व्रत चौदस व भाईदूज जैसे सभी त्योहारों को मनाने के पीछे की अवधारणाएं जान लीं। बचपन से ज्यादा फटाके चलाने लगे। कई तरह की लाइटिंग से घर को प्रकाशित करने लगे। मिठाई तो इतनी आने लगीं कि पूछो मत, पर डाइबिटीज के कारण मिठाई खा नहीं सकता। अब पर्यावरण के कारण ज्यादा धूएं वाले फटाके चला नहीं सकता। सब कुछ खुशनुमा माहौल होने के बावजूद मन में वह खुशी नहीं रहती जो बचपन में रहती थी। हां बच्चों को खुश देखकर अवश्य खुशी होती है। इतना कहकर राजकुमार फिर चुप हो गए।

डॉ. सत्येंद्र सिंह, सप्तगिरी सोसायटी, जांभुलवाडी रोड, आंबेगांव खुर्द, पुणे 411046

कहानी – अनन्या का दीप – कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, एन एम्

भूमिका

दीपावली केवल दीपों और सजावट का उत्सव नहीं, यह आत्मा के अंधकार को मिटाकर करुणा और आस्था का प्रकाश फैलाने का पर्व है।

इस विशेषांक में प्रस्तुत कथा "अनन्या का दीप" हमें याद दिलाती है कि दीपावली की असली चमक अपने घर के आँगन से आगे बढ़कर किसी और की झोपड़ी में पहुँचने पर ही पूर्ण होती है।

💥**अनन्या का दीप**💥

नगर दीपावली की तैयारियों में आकंठ डूबा हुआ था।

हर आँगन में रंगोली खिल रही थी, छतों पर झालरें झर रही थीं, मिठाइयों की महक हवा में घुल रही थी।

मानो पूरी धरती एक उत्सवमयी आभा में नहा रही हो।

किन्तु उसी नगर के सुदूर छोर पर, जहाँ टूटी झोपड़ियों की कतारें थीं, गहन अंधकार का साम्राज्य पसरा हुआ था।

न कोई न रंग था, न ही प्रकाश! था तो बस धुँधलका, गरीबों और भूख की लंबी परछाइयाँ!

उस अँधेरे में अनन्या नाम की एक नन्ही कन्या रहती थी। उसके पिता दिन-रात मिट्टी के दीये गढ़ते, पर विडम्बना यह थी कि जिन दीयों से नगर आलोकित होना था, उन्हीं के प्रयोग से वो वंचित थे। गरीबी का ये आलम था कि उनके अपने घर में तेल के लिए पैसे नहीं बचते।

अनन्या अक्सर माँ से पूछती—

"माँ, हमारे घर में दीप क्यों नहीं जलते?

क्या हमारे हिस्से में कभी उजाला नहीं आएगा?"

माँ थके स्वर में कहती—

"बेटी, दीप केवल तेल से नहीं, मन की आस्था से भी जलते हैं।"

पर वह उत्तर अनन्या के मासूम मन को संतोष न दे पाता।

फिर आई दीपावली की रात।

नगर चमक उठा, गलियां दमक उठीं...

मानो हर घर से आकाश में एक-एक तारा उतर आया हो।

परंतु अनन्या की गली अब भी अंधकार की कैद में थी।

उसने चुपके से दो मिट्टी के दीप उठाए।

मगर तेल न था, तो उसने उनमें पानी भर दिया।

पतली रूई की बत्ती रखी और काँपते हाथों से उन्हें जलाने का प्रयास किया।

दीप जला नहीं।

तभी एक अद्भुत संयोग हुआ।

पास के आँगन से उड़ता हुआ एक बुझता दीप उसकी हथेली में आ गिरा।

अनन्या ने उस काँपती लौ को अपने पानी वाले दीयों से मिला दिया।

क्षण भर के लिए लौ डगमगाई, बुझने लगी, पर चमत्कार हुआ जैसे ही अनन्या की आँखों से विश्वास के आँसू गिरे, वह लौ टिमटिमा उठी।

उस लौ की लाली से पूरी गली जगमगा उठी।

बच्चे दौड़े आए, बूढ़े बाहर निकले।

सभी ने कहा—"दीदी, हमारे घर में भी ऐसा दीप जला दो। "

अनन्या ने अपने हाथों से बनाए अधूरे दीये सबको बाँट दिए। और देखते ही देखते, वह गली, जो अब तक नगर का भूला हुआ अंधेरा थी, दीपों के नन्हे-जगमग से आलोकित हो उठी।

नगरवासियों ने अगली सुबह देखा—

उन झोपड़ियों की दीवारें पहले से कुछ उजली थीं। किसी ने चूना नहीं लगाया था, पर लगता था जैसे भीतर का अंधकार धुल गया हो और एक दैवीय प्रकाश स्वर्ग से उतर आया हो।

तब नगर के विद्वान ने कहा—

"दीपावली का सत्य यह नहीं कि हम सिर्फ अपने घर को रोशन करें। सत्य यह है कि हम अपने दीप की लौ से किसी और का जीवन आलोकित करें। तेल से भरे दीप तो हर आँगन में मिल जाएँगे, पर वह दीप दुर्लभ है, जो आस्था और करुणा से जले। "

और उस दिन से नगर में यह परंपरा बन गई—

हर दीपावली पर सबसे पहला दीप किसी अनजान घर में, किसी अंधेरी गली में जलाया जाता।

स्मरण रहे—

उत्सव तब तक अधूरा है, जब तक किसी और की उदासी में हमारे प्रकाश की साझेदारी न हो।

यह कथा केवल एक नन्हीं बच्ची की जिजीविषा नहीं, बल्कि उस मानवीय सत्य की अभिव्यक्ति है, जो कहता है— "प्रकाश बाँटने से घटता नहीं, बढ़ता है।"

कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, एन एम्, पुणे

व्यंग्य - सब अपने में मस्त हैं - डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

उन दिनों यमराज और उनका पूरा डिपार्टमेंट हैरान-परेशान था। चित्रगुप्त की खाता-बही और धरती पर दीपावली का हंगामा आपस में बिल्कुल मेल नहीं खा रहे थे। दीपावली की रात यमदूत आत्माएँ लेने निकले, मगर हाल ये कि कोई आत्मा तैयार ही नहीं। सब कहने लगे – "भाई, अभी तो घर में पंद्रह सौ की झालर टंगी है, बीस किलो मिठाई आई है, और पटाखों की अटैची पड़ी है। ऐसे समय कौन बेवकूफ़ स्वर्ग जाएगा? वहाँ न पटाखे फूटेंगे न काजू कतली मिलेगी। जाओ भैया, दीपावली के बाद आना। " बेचारे यमदूत, मुँह लटकाए वापस चले आए। कहावत है – "भेड़ के आगे बकरी कूदी, तो बकरी के आगे यमदूत ही कूद पड़ा।"

चित्रगुप्त माथा पकड़कर बैठ गए। बोले – "प्रभु, ये कैसी मुसीबत है? आत्माओं को ले जाने निकलो तो वे खुद ही घर के बाहर झालरें टाँगकर छुप जाती हैं। औरतें कहती हैं – 'दीपावली पर आत्मा जाएगी तो अशुभ हो जाएगा।' पुरुष कहते हैं – 'भाई, बोनस मिला है, अभी कैसे मर सकते हैं? पहले EMI भरने दो।' अब हिसाब किताब कहाँ से मिलाऊँ? " यमराज ने दाढ़ी खुजाते हुए कहा – "ये मनुष्य जाति तो 'साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे' टाइप समाधान खोज लेती है। दीपावली पर सबको लगता है कि मौत भी छुट्टी पर चली गई है। और हम, बेचारे, डेडलाइन में फँसे अफसर की तरह सिर धुन रहे हैं।"

अब आप इस लेखक का ही मामला लीजिए। दीपावली की रात यमदूत पहुँचे। देखा – लेखक पटाखे जलाने के बजाय दीये गिन रहा था। बोला – "चलो आत्मा जी, ऊपर चलते हैं।" लेखक ने कहा – "भाई, ज़रा समझदारी दिखाओ। अभी-अभी पड़ोसी से पचास रुपये उधार लेकर दीये खरीदे हैं। अब अगर मैं चला गया तो अगली बार मेरी आत्मा को भी उधार में ही जलाना पड़ेगा।" यमदूत को कहावत याद आई – "नाच ना जाने आँगन टेढ़ा।" वापस आकर रिपोर्ट दी – "प्रभु, ये आदमी तो दीपावली के नाम पर पहले ही मर-खप रहा है। इसे ले जाऊँ तो परलोक में जगह कहाँ दूँगा?"

बड़ी समस्या मिठाइयों की बनी। यमदूत किसी के घर आत्मा लेने पहुँचे, वहाँ लड्डू, बर्फी, काजू कतली के ढेर लगे। आत्मा बोली – "भाई, ज़रा धीरज रखो। अभी तो ये मिठाइयाँ खानी बाकी हैं। जब ये सब डॉक्टर मना करेंगे, तब चलूँगी।" यमदूत ने कहा – "लेकिन हिसाब-किताब?" आत्मा बोली – "अरे, 'बिन मिठाई दीपावली अधूरी' होती है। मरना-जीना तो चलता रहेगा, पहले रसगुल्ला खा लूँ।" बेचारा यमदूत, भूखे पेट वापस लौट आया। चित्रगुप्त को बोला – "प्रभु, इनकी आत्माएँ तो मिठाई की दुकान में फँस गई हैं। जब तक मिठाइयाँ खत्म न हों, कोई परलोक नहीं जाएगा।"

पटाखों ने तो यमदूतों की नाक में दम कर दिया। आत्माएँ लेने जाओ तो कान फट जाएँ। एक यमदूत ने शिकायत दर्ज की – "प्रभु, इस बार पटाखों के धुएँ में हमें आत्माएँ दिखाई ही नहीं दीं। सब धुंध-धुंध। ऊपर से बच्चे कहते हैं – 'अरे, भूत-प्रेत मत बनाओ। ये तो ड्रोन है।' अब ड्रोन और आत्मा का क्या फ़र्क बताऊँ?"

कहावत है – "भैंस के आगे बीन बजाओगे तो भैंस नहीं नाचेगी।" यमदूत का भी वही हाल हुआ – जितना समझाओ, आत्माएँ उतना ही पटाखों में गुम हो जाएँ।

दीपावली की एक अजब विडम्बना यह भी रही। अमीरों के घर में आत्माएँ छुपी रहीं – आलीशान लाइटिंग, पाँच हज़ार का केक, दस हज़ार का पटाखा। सब कुछ जगमग, पर आत्मा गायब। गरीब के घर आत्मा रोती रही – "तेल खरीदने तक को पैसे नहीं हैं। दीया कैसे जलाएँ?" यमराज ने आह भरकर कहा – "कहावत सच है – 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।' गरीब को दोष मिलेगा कि त्योहार नहीं मना पाया, और अमीर को शाबाशी कि उसने आसमान में लाखों उड़ा दिए। पर असल में दोनों ही भीतर से खाली हैं।"

रात बीतते-बीतते चित्रगुप्त ने रजिस्टर बंद कर दिया। बोले – "प्रभु, दीपावली की रात का हिसाब नहीं हो पाएगा। आत्माएँ सब दीपक की लौ में, मिठाई के डिब्बे में, पटाखों के शोर में खो गई हैं।" यमराज ने गंभीर स्वर में कहा – "मनुष्य समझता है कि दीपावली रोशनी का पर्व है, पर असल में यह उसके अंधेरों की पोल खोल देता है। कोई उधार लेकर पटाखे फोड़ रहा है, कोई अकेलेपन को झालरों में छुपा रहा है, कोई रिश्तों की मिठास को नकली डिब्बों में बेच रहा है। " और उन्होंने वह लोकोक्ति दोहराई – "दीप जलाकर अंधेरा मिटाना आसान है, मन का अंधेरा मिटाना मुश्किल।"

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त', चरवाणीः +91 73 8657 8657, **ई-मेल** : drskm786@gmail.com

लेख - तमसो मा ज्योतिर्गमय - सुश्री सिद्धेश्वरी सराफ़ ‘शीलू’

शुभ- लाभ, धन - लाभ, रिद्धि- सिद्धि, सहित, सुख - संपदा, वैभव, ऐश्वर्य की कामना करते दीपावली पर हम घर मंदिर आँगन चौबारे सभी को दीपों की कतारों से सजा लेते हैं। रोशनी कम न हो, माता लक्ष्मी के लिए कहीं कुछ कमी न रह जाए, इस भावना को लिए महीने भर की साफ- सफाई रंग-रोगन सजावट करते नहीं थकते।

दिये की लौ की तरह मनुष्य का जीवन जलता बुझता, उमंग, उत्साह से उत्प्रोत केवल अपने सुख सुविधा में सिमट चुका है।

सनातन धर्म के अनुसार जब त्रेता युग में श्री राम प्रभु अहंकारी रावण का वध कर माता जानकी संग भ्राता लक्ष्मण को सकुशल अयोध्या लेकर लौटे तब पूरी अयोध्या उनके आने की खुशी 14 वर्षों की प्रतिक्षा को दीपों से सजा, उजाला कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। इस भाव से की अब तक अयोध्या अपने राम के बिना अधूरी थी।

राजकुल का दीपक ही वनवास में हो तो किस प्रकार उजाला हो। भावों को समेटे सभी का एक ही हृदय से प्रभु राम आ गए - - अब अयोध्या से सदा- सदा के लिए अंधकार दूर हो जाएगा।

असत्य पर सत्य की विजय, बुराई पर अच्छाई का होना, अज्ञान को हटा ज्ञान से परिपूर्ण होना, अहंकार को सदा के लिए दूर करके उजाला फैलाना, विजयी होकर वापस लौटना।

अपने राजा की अगवानी करती प्रजाजन हर्ष-भाव विभोर थे। इतिहास के पन्नों पर तभी से दीपावली मनाने का चलन बढ़ गया।

माँ आदि शक्ति दुर्गा देवासुर संग्राम में जब समस्त दानवों का वध करके क्रोध से इतनी भर गई कि महाकाली बन गई, तब काली को शांत करने के लिए भगवान शिव स्वयं चरणों पर लोट गए।

तभी से रूप लक्ष्मी, रौद्र काली की पूजा होती है। असंख्य दीपों से उनकी आरती वंदना पूजन अर्चन किया गया।

वामन रूप में राजा बलि से तीन पग पृथ्वी दान में संपूर्ण लोक को ले लिया प्रभु नारायण ने। बलि के शीश पर तीसरा पग रखते उन्हें पाताल भेजा था।

उनके दानशीलता के कारण वरदान स्वरुप भूलोक पर दीपावली मनाने का वरदान मिला था।

राजा विक्रमादित्य जिन्होंने अपने राज्याभिषेक को दीपों से सजाकर मनाया था।

यूँ तो कथा कहानी बहुतेरे हैं, परंतु वेद पुराणों सत्य सनातन धर्म में श्री राम प्रभु के अवध आने के कारण दीपावली मनाया गया। ऐसा उल्लेख प्रमुख माना जाता है।

आज भी हम दीपावली मना रहे हैं। परंतु केवल सोशल मीडिया के लिए। मन में श्रद्धा नहीं, भाव में सुमिरन नहीं, नैनों में आस नहीं, हृदय में विश्वास नहीं, आपस में प्यार नहीं, परिवार का साथ नहीं, रसोई में पकवान नहीं, दीपों की कतार नहीं, पड़ोसी से भेंट नहीं, कर्मचारी से मेल नहीं, बच्चों का प्यार नहीं, माँ- बाप का आशीष नहीं, बहनों की प्रीत नहीं, भाई का सम्मान नहीं, रिश्तो में आत्मियता था नहीं, संस्कार का नाम नहीं, संस्कृति की पहचान नहीं, रीति रिवाज का ज्ञान नहीं, प्रसाद में आस्था नहीं, गुरु का ज्ञान नहीं, गाँव का अभिमान नहीं, परिधानों का मेल नहीं, घूंघट में लाज नहीं,???

बेशक बहुत कुछ अच्छाइयां पहले से अधिक अच्छी हो गई है, परंतु क्या दीपावली मना पाते हैं। सिर्फ सोशल मीडिया पर तस्वीर की दीपावली होती है। जो बस टच करते डिलीट और रिमूव के कगार पर खड़ी है।

सच कहें 14 वर्ष तो क्या 14 मिनट भी आँखें अपनों को और दूसरे की खुशियों को देख नहीं पाती है।

14 सेकंड पलक झपकते सारी दीपावली फिर वही काले की बोर्ड और काली पट्टी पर समा जाती है।

आइये इस दीपावली शुभारंभ करें🙏 🪔 हम और आप मिलकर सदैव सबके लिए - - -

ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय। ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः।।

🪔🙏**शुभ मंगलम् शुभ दीपावली** 🙏🪔

सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू', जबलपुर, मध्य प्रदेश

लेख - दीपावली - सुश्री मंजिरी "निधि"

इस विशाल सनातन देश में, हम सभी सनातनी हर त्यौहार बड़े उत्साह, बड़ी उमंग, बड़े जोश के साथ मनाते हैं। या यों कहें कि हमारा भारत त्यौहारों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। दुनिया में यही एक बिरला देश है जहाँ विविध प्रांत, विविध जाती, विविध पंथ, विविध भाषा एवं विविध बोली होने के बावजूद भी हम सभी सारे ही त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। दीपावली प्रतिवर्ष शरद ऋतु में आने वाला त्यौहार है। यह कार्तिकी अमावस्या को मनाया जाता है। अमावस्या होने के बावजूद भी हम सभी मृदा के दीपों की आवली सजाकर रौशनी की श्रृंखला बनाकर इसे पूर्णिमा में बदल देते हैं। अर्थात अंधकार को प्रकाश में बदल देते हैं।

पर क्या वाकई हम दीवाली सिर्फ मनाते हैं या महसूस भी करते हैं?

हम यह सिर्फ परम्परा मनाते हैं या इससे कुछ सीखते भी हैं? इस दीवाली हमें अपने घर को रौशन करने के साथ अपने रिश्तों को भी प्रकाशमान करना होगा। हमें इस मानव तन रूपी पंचमहाभूतों से बनें इस दिये में सात्विक विचारों की बाती जलाकर उसमें सतत प्रभु के नाम के स्मरण का घी डालना होगा। साथ ही इस शरीर के अंधकार अर्थात ईष्या, द्वेष, मोह, माया, अहंकार एवं आलस को मन से निकालने का प्रण करना होगा।

दीप सनातन सभ्यता का प्रतीक है। हम कहते भी हैं "अपो दीपो भवः" अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो। अपना दीपक स्वयं बनो। अर्थात अपने स्व को जागृत करो। ताकि भीतर के ज्ञान का दिया जलता रहे। और इस दिये के प्रकाश से दूसरों के ज्ञान के दिये जलाने का सतत प्रयास हो।

ऋषि पतंजलि जी ने भी कहा है "मुर्द्ध ज्योति, सिद्ध दर्शन" अर्थात अपने अंदर के प्रकाश को प्रजवलित करो। अपने स्व के ज्ञान को जगाओ। तो आइये इस दीवाली हम सभी प्रण करें कि इस त्यौहार के जरिये हम अपने परिवार से जुड़ें। अपने समाज से जुड़ें। और सबसे महत्वपूर्ण कि हम अपने आप से सबसे पहले जुड़ें। हम चहुँओर खुशियाँ बाँटें। लोगों के दुःख में शामिल हों उनके दुखों को कम कर सकें। इस तरह हम दीवाली तो मनाएँगे पर साथ ही इस त्यौहार को जीने कि भी कोशिश करें। कोशिश करें कि हर देहरी पर आस्था और विश्वास का दिया जलता रहे। यह भी कोशिश करें कि इस रौशनी के त्योहार में हम एक दूसरे को भेंट स्वरूप विश्वास का दिलासा दें।

सुश्री मंजिरी "निधि", बड़ोदा, गुजरात

व्यंग्य – जहाँ फुटपाथ, वहीं बाज़ार; जहाँ बाज़ार, वहीं जीवन, वहीं सभ्यता – श्री शांतिलाल जैन

सन् 2525 ई. में आर्यावर्त में व्यापार संवर्धन में फुटपाथ का योगदान विषय पर लिखे जानेवाले काल्पनिक शोधप्रबंध का संक्षिप्त अंश:-

बीसवीं के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध में आर्यावर्त में व्यापार फुटपाथ किनारे विकसित हुआ. नगरीय सभ्यता के विकास में जितना महत्व नदियों का रहा आया, व्यापार के विकास में उतना ही महत्व फुटपाथ का रहा आया. "आर्यावर्त में व्यवसाय संस्कृति फुटपाथ किनारे विकसित हुई" यह कथन केवल नगरपालिका द्वारा निर्मित एक भौगोलिक सत्य नहीं था, बल्कि एक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वास्तविकता भी थी. यदि हम उस समय की नागर सभ्यता पर दृष्टि डालें, तो पाएंगे कि अधिकांश बाज़ार फुटपाथ अतिक्रमित दुकानों पर पनपे. भोपाल का न्यू-मार्केट, दिल्ली का चांदनी चौक, मुंबई का कोलाबा कॉजवे, जयपुर का बापू बाज़ार आदि अनेक बाज़ार फुटपाथ किनारे विकसित हुए. यहाँ कपड़ों, जूते-चप्पलों, स्ट्रीट फ़ूड, मोबाइल फोन्स, तोते वाले ज्योतिष और सॉफ्ट-पोर्न लिटरेचर तक के करोड़ों के व्यापार पनपने के प्रमाण मिले हैं.

अनुमान है कि नगर नियोजकों की योजना में फुटपाथ पैदल चलनेवालों को वाहन दुर्घटना से बचाववाला रास्ता प्रदान करने की रही होगी, मगर व्यवसाय संवर्धन की छुपी संभावनाओं ने उसे शॉपिंग पाथ-वे में बदल दिया होगा. उन पर नागरिक उतने कदम ही चल पाते जितने एक काऊंटर से दूसरे तक पहुँचने के लिए जरूरी होते. फिर डिस्प्ले के सामानों, होर्डिंग्स, स्टैंडिज़, डिझाईनर साड़ी, जींस, टीशर्ट पहने मनेक्वीन पुतलों ने पथिक को फुटपाथ से बेदखल कर दिया. कमाने के अवसर फुटपाथ ने व्यवसायियों को ही नहीं दिए, उसने ट्रैफिक पुलिस और मुन्सीपाल्टी के मुलाज़िमों को भी संपन्न बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी. वे जेबें ठंडी लेकर आते और गरम करके ले जाते.

नदियों की तरह फुटपाथ भी मनुष्य के लिए जीवनरेखा जैसे थे. वे जीने के लिए आवश्यक पोषक आहार यथा पोहा, कचोरी, समोसे, कटिंग चाय की सतत आपूर्ति किया करते थे. आम नागरिक फुटपाथ पर डलीं चेयर्स पर इत्मिनान से बैठकर इडली-डोसा, पावभाजी-आलू-टिकिया खाया करते तो पढ़े-लिखे नागरिक दोने-प्लेट-डिस्पोजेबल वहीं फेंक दिया करते. वे वहाँ बैठकर रील देखते, चुहल करते, सेल्फी लिया करते थे. ‘पार्टी ऑन पेवमेंट’ का चलन आम था. अंकल-आंटी केक काटकर एनिवर्सरी सेलिब्रेट कर लिया करते. जेन-ज़ी यहीं सॉफ्ट अभिसार कर लेती, एकांत ढूंढने की गरज़ रही नहीं. कहीं कहीं फुटपाथ के नीचे बहते नाले बजबजाने लगते. इनसे उपजी बदबू का सामना करने के लिए लोग घर से ही बगल में डियोडोरेंट लगाकर आते.

प्रारंभिक दौर के फुटपाथ सीमेंट कांक्रीट के हुआ करते थे, बाद के दौर में उनके पेविंग ब्लॉक से बनाए जाने के प्रमाण मिले हैं. दुकानदार यहीं से उखाड़कर एक ब्लॉक डगमगाते काऊंटर के टूटे हुए पाए के स्थान पर

लगाकर संतुलन बना लिया करते. समझा जाता है कि कुछ सभ्य, संपन्न नागरिक उखड़े पेवमेंट से उठाकर एक दो ब्लॉक कार की डिक्की में रख लिया करते थे कि हेंड-ब्रेक खराब होने की दशा में पहिये पर रोक लगाकर कार को लुढ़कने से बचाया जा सके.

फुटपाथ जिस खुले-मन से नागरिकों को मार्केट-प्लेस मुहैया कराते उसी भावना से चौपायों को आशियाना भी प्रोवाईड करते. फुटपाथों पर चौपाये यथासमय सौ मीटर स्प्रिंट, हर्डल-रेस, हाय-जम्प, लांग-जम्प आदि के आयोजन करते रहते. नागरिक अपने वाहन फुटपाथ पर ही खड़े कर लिया करते इससे पालिकाओं को पार्किंग लॉट बनाने नहीं पड़े.

फुटपाथ ने मनुष्यता के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन अच्छे से किया. दुकानों में काम करनेवाले प्रवासी मजदूर दिन भर जिस फुटपाथ पर माल बेचा करते, रात को उसी पर अखबार बिछाकर सो जाते. इससे यमदूतों को बहुत सुविधा रहती. वे भैंसे पर बैठकर आने के बजाए बीएमडबल्यू कार से आते और सोए हुए गरीबों के शरीर से आत्मा निकालकर ले जाते. फ्रॉम फुटपाथ टू बैकुंठ, डायरेक्ट.

सभ्यता के विकास में सामाजिक समरसता के महत्व को पहिचानते हुए फुटपाथों ने शनि मंदिर के लिए भी स्पेस प्रोवाईड किया और सखी-पीर की मजार के लिए भी. कुछ नागरिक यहाँ खड़े रहकर महाआरती करते, कुछ नमाज़ पढ़ते. हार-फूल-तेल-नारियल-लोभान का व्यवसाय खूब फला-फूला. इससे न केवल पुजारियों और खादिमों में सम्पन्नता बढ़ी बल्कि विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का आपसी संपर्क भी बढ़ा. आर्यावर्त में फुटपाथ ही था जो सही मायने में धर्मनिरपेक्ष आचरण कर पाता था. कुछ स्थानों पर तो फुटपाथों ने अपना वजूद मिटाकर भी धर्मस्थलों को पनपने दिया.

इस प्रकार आर्यावर्त में उस दौर में बाज़ार, फुटपाथ और मानव के बीच गहरे और अपरिहार्य संबंध के प्रमाण तो मिले हैं लेकिन कहीं-कोई फुटपाथ महज़ पैदल चलने के उपयोग में आया हो इसके प्रमाण नहीं मिले. निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि आर्यावर्त में सभ्यता की जड़ें पाँच सौ साल पुराने फुटपाथों के किनारे बसी हैं.

श्री शांतिलाल जैन, बी-8/12, महानंदा नगर, उज्जैन (म.प्र.) – 456010 मो. 9425019837 (M)

कविता - चलो एक दीपक जलाएं – श्री श्याम खापर्डे

चलो एक छोटा सा दीपक जलाएं
कितना अंधकार है यहां रोशनी लाएं

यहां सदियों से तम ने डाला डेरा है
प्रकाश किरणों ने नहीं मारा फेरा है
अज्ञानता का यहां घनघोर बसेरा है
कितना डरावना, यह स्याह अंधेरा है
एक दिया जलाकर इस तम को भगाएं

बुझी हुई आंखें मांग रही हमसे न्याय
कब तक चुपचाप सहती रहेगी अन्याय
कितने मजबूर, कितने हैं वह असहाय
कब लिखेंगे वह रोशनी का नया अध्याय
दिलों में ज्योत जलाकर एक आस तो बंधाएं

आसमान में सितारों की कमी नहीं है
बेजुबानों की उपेक्षा अभी थमी नहीं है
दुखों को देखकर भी आंख में नमी नहीं है
दिखावा बहुत है पर किसी को गमी नहीं है
जगमग दीपों से उनकी दुनिया हम जगमगाएं

कब तक रोशनी से उनको वंचित रखोगे
कब तक प्रकाश पर तुम पहरे धरोगे
कब तक उनके उन्नति से तुम डरोगे
कब तक इस पाखंड का तुम दम भरोगे
संभालो,
कहीं इस दबी आग से सब कुछ जल ना जाएं

चलो एक छोटा सा दीपक जलाएं
कितना अंधकार है यहां रोशनी लाएं /

श्री श्याम खापर्डे, फ्लेट न – 402, मैत्री अपार्टमेंट, फेज – बी, रिसाली, दुर्ग (छतीसगढ़) मो 9425592588

कहानी – मुक्ति – श्री घनश्याम अग्रवाल

दो दिन पहले एक भीषण दुर्घटना हो गई। मौसम की पहली तेज मूसलाधार बारिश से नदी के पुल का एक हिस्सा टूट चुका था और आती हुई पैसिंजर ट्रेन की तीन बोगी नदी में गिरकर डूब चुकी थीं। चारों ओर हाहाकार मचा था। लाशें निकाली जा रही थी। फिर भी आशंका थी कि कुछ लाशें अब भी नदी में बहकर चली गई होंगी। राहत अधिकारी ने घोषणा की -"नदी में से लाश ढूँढकर लानेवाले को एक हजार रुपए मिलेंगे।"

राहत शिविर से तीन-चार मील दूरी पर एक झोंपड़ी के सामने दो भाई उदास बैठे थे। तीन दिनों से उनके पेट में अन्न का दाना तक नहीं गया था। उस पर बूढ़ा बाप चल बसा। बूढ़ा मरने से पहले बड़बड़ाता रहा था - "अरे, मेरी दवा-दारू नहीं की तो नहीं की, पर मेरी मिट्‌टी जरूर सुधार देना। मुझे दफनाना नहीं, अगनिमाता के हवाले कर देना, वरना मुझे मुक्ति नहीं मिलेंगी।"

"कहाँ से करें अगनिमाता के हवाले! घर में चूल्हा जलाने को पैसे नहीं है। लाश जलाने को कहाँ से आएँगे पैसे ?" एक भाई बोला।

"हम कितने गरीब और बदनसीब हैं, अपने बाप की आखिरी इच्छा भी पूरी नहीं कर सकेंगे। लाश को सुबह दफनाना ही होगा।" रोता हुआ दूसरा भाई बोला। दोनों भाई सिर झुकाए रो रहे थे । बारिश हो रही थी ।

अचानक उनकी आँखें चमक-सी उठीं। उन्होंने झट लाश को झोंपड़े से निकालकर खुले में रख दिया। रातभर लाश भीगती रही। तड़के ही दोनों ने लाश को उठाया और नदी के किनारे होते-होते राहत शिविर में पहुँचे। राहत अधिकारी से बोले - "हुजूर, ये लाश नदी से लाए हैं। ट्रेन के किसी मुसाफिर की होगी। किसी हिन्दू की लगती हैं साहब, इसके गले में जनेऊ है।" एक भाई बोला।

"और साब! इसके चोटी भी है।" दूसरा बोला।

अधिकारी ने कुछ सतही सवाल पूछे और अपने कर्मचारी से कहा - "इन्हें हजार रूपए दे दो और लाश को उधर रख दो, हिन्दूवाली लाशों के साथ। कोई लेने आया तो ठीक, वरना परसों लावारिस समझकर सामुहिक जला देना। बाकी लाशें दफन कर देना।"

दो दिन बाद दोनों भाई दूर से अपने पिता की लाश को अगनिमाता के हवाले होते देख अपने बाबा को याद करते रो रहे थे। बाबा बड़ा धार्मिक आदमी था। शुभ दिन मरा, अपनी मिट्‌टी खुद ही सुधार गया। खुद भी मुक्त हुआ और जाते-जाते भी हमें कुछ देकर ही गया।

*****

श्री घनश्याम अग्रवाल, (हास्य-व्यंग्य कवि), मो. 7242437899 / 094228 60199

कविता – मिट्टी वाले दिये जलाओ... – श्री संतोष नेमा "संतोष"

मिट्टी वाले दिये जलाओ
हर गरीब का तमस मिटाओ

बैठ कुम्हारिन ताक रही है
ग्राहक अपने आंक रही है
आओ खरीद कर दिये उनके
उनका भी उत्साह बढ़ाओ
मिट्टी वाले दिये जलाओ

दिये में भी अब लगा सेंसर
पानी से जो जलता बेहतर
त्यागें अब चाइनीज दियों को
देशी को ही घर पर लाओ
मिट्टी वाले दिये जलाओ

गली-गली हर चौराहों पर
बिकते दिये हर राहों पर
इनके घर भी हो दीवाली
इनका भी सब हाथ बटाओ
मिट्टी वाले दिये जलाओ

हर घर में संतोष रहेगा
दिल में सबके जोश रहेगा
जब इनका दुख अपना समझें
तब मिलकर त्यौहार मनाओ
मिट्टी वाले दिये जलाओ

श्री संतोष कुमार नेमा "संतोष", आलोकनगर, जबलपुर (म. प्र.) मो 7000361983, 9300101799

कविता - जीवन धूप- छांव… – श्री शेर सिंह

जिंदगी की लुका- छिपी
धूप - छांव
कब क्या हो जाए
कौन जाने?

भागम- भाग, दौड़- धूप
जीवन चक्करघिनी
चलते चलो गिर पड़कर भी
ठहर गए तो मात निश्चित।

आशा- निराशा दो पहलू
कहावत है न -
उम्मीद पर कायम दुनिया
है संजीवनी आशा - विश्वास
जीने की।

कष्ट, दुख, तकलीफें
हरा नहीं सकते
मन के विश्वास
जीने की चाहत को
हैं विश्वास और साहस
सबसे बड़ी पूंजी
हर्ष और उल्लास की
जीवन धूप - छांव।

श्री शेर सिंह, नाग मंदिर कालोनी, शमशी, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश – 175126 मो. 8447037777/8580814900

व्यंग्य - परसाई जन्मशती में एक व्यंग्यकार की टांग का टूटना - श्री रमाकांत ताम्रव

परसाई जन्मशती पर टांग टूटना शुभ संदेश है मुझे नहीं लगता प्रख्यात समाज सेवी तथा पत्रकार श्री लक्ष्मीकांत शर्मा जी और मेरे अलावा किसी और साहित्यकार, व्यंग्यकार की टांग जन्मशती के अवसर टूटी हो. ग़्रह कितना सुखद अवसर है कि किसी न किसी के साथ समानता होना चाहिए वह आखिरकार परसाई जी के साथ हो ही गई. वैसे अमिताभ बच्चन से भी मेरी समानता है क्योकि उनकी और मेरी एक ही राशि है. पिछले दो महिनों से मैं भी अपनी टांग को पाल पोस रहा हूँ और दवाई रूपी खाद पानी दे रहा हूँ.

वैसे भी टांग टूटने का सुख अलग ही हैं, जो लोग कभी घर नहीं आते थे वे सब संवेदना प्रकट करने आते है गुलदस्ता, फल भी लाते है. पर उनको ग़्रह नहीं पता मुझे एलर्जी है गुलदस्ता से मुझे और तकलीफ बढ़ जाती है. वे लोग मन ही मन सोचते होगें और प्रसन्न होते होगें कि चलो अच्छा हुआ जो इसकी टांग टूट गई अब ये किसी के काम में टांग नहीं अडायेगा. प्रेमिका सोचती है अब प्रेमी से मुलाकात कैसे होगी क्योंकि प्रेमी तो चल नहीं सकता और वह प्रेमी के घर पहुंच जाती है. घर में कानाफूसी होने लगती है कि लगता है भैया इसी लड़की से शादी करेंगे. पिताजी कहते है देखो मुझे लड़कियों से तुम्हारी दोस्ती बिल्कुल पसंद नहीं हैं. बेचारा प्रेमी. अब प्रेमी अपनी प्रिया से मिल भी नहीं सकता. हालांकि ग़्रह आधुनिक युग का आभासी प्रेम है जो केवल बाबू और बेबी तक सीमित रहता है.

पत्नि मेरी टांग टूटने से उतनी दुःखित नहीं जितने मुझे देखने आने वालों से दुःखित होती है और कहती है अब दूध बढ़ा दो क्योंकि तुम से मिलने आने वालों को चाय तो पिलाना पड़ रहीं है. मेरा तो बजट बिगड़ रहा है तुम्हारी टांग के चक्कर में.

नेताजी सलाह देते हैं अब तुमने अपनी टांग का बहुत उपयोग कर लिया है तुम आराम करो और अब हम लोगों को भी कुछ करने का मौका मिला हैं तो घर पर रहो, मोबाइल और फोन से भी दूर रहना ताकि टांग को आराम मिल सके.

मेरे दर्द के बारे में तो कम बात होती है आगंतुक दूसरों की टूटी टांगों की बड़ी बड़ी कहानियां सुना कर मुझे डराते है. मैं मन मसोस कर सुनता रहता हूँ. मेरे पास और कोई चारा भी तो नहीं क्योंकि अतिथि देवो भव होता है.

अब मैं अपनी बात को विश्राम देता हूँ. शर्मा जी आप अपनी टांग की देखभाल कीजिए मैं अपनी टांग की कर रहा हूँ. ताकि सनद रहे और टांग स्वस्थ्य होकर फिर अड़ाने के काम आयें क्योंकि टांग टूटने से संसार अपाहिज हो जाता है.

श्री रमाकांत ताम्रकार, जबलपुर, मध्यप्रदेश, मो 9926660150

लेख - हाथी की मूर्ति: वास्तु और वैज्ञानिक महत्व - डॉ. अनिल कुमार वर्मा

वास्तु शास्त्र और फेंग शुई — दोनों ही में हाथी को शक्ति, स्थिरता, सौभाग्य, सुरक्षा और पारिवारिक सौहार्द का प्रतीक माना गया है। घर में हाथी की मूर्ति रखने से न केवल सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, बल्कि यह समृद्धि और आत्मविश्वास का भी प्रतीक बन जाती है।

हालाँकि, इसके लिए कुछ नियमों और दिशाओं का पालन करना आवश्यक है ताकि इसका शुभ प्रभाव पूर्ण रूप से प्राप्त हो सके।

मूर्ति का चयन:

हाथी की मूर्ति सफेद, चांदी, पीतल या शुभ पत्थर/मार्बल की होनी चाहिए।

काले या मिश्रित भारी धातुओं से बनी मूर्ति से बचें।

मूर्ति का आकार छोटा या मध्यम होना शुभ माना गया है।

टूटी या खंडित मूर्ति कभी न रखें।

रखने की दिशा और स्थान:

मुख्य द्वार के पास हाथी की मूर्ति रखना घर की सुरक्षा और समृद्धि के लिए लाभदायक होता है।

हाथी का मुख घर के अंदर की ओर होना चाहिए — यह सकारात्मक ऊर्जा को भीतर आने का प्रतीक है।

उत्तर या उत्तर-पूर्व दिशा में रखने से ज्ञान, करियर और धन लाभ के योग बनते हैं।

यदि हाथी की जोड़ी रखी जाए, तो दोनों का मुख एक-दूसरे की ओर होना चाहिए — यह वैवाहिक और पारिवारिक सौहार्द का प्रतीक है।

विभिन्न स्थानों पर उपयोग:

शयनकक्ष में बच्चों या दंपतियों के लिए हाथी के जोड़े या बच्चे के साथ वाली मूर्ति रखना शुभ माना गया है।

विद्यार्थियों के लिए स्टडी टेबल पर हाथी रखना ध्यान और स्मरणशक्ति बढ़ाने में सहायक होता है।

ऑफिस डेस्क पर हाथी रखने से निर्णय क्षमता, नेतृत्व और प्रगति में वृद्धि होती है।

मूर्ति की नियमित सफाई और ऊर्जा शुद्धि आवश्यक है।

निषेध और सावधानियाँ:

टूटी, धूल भरी या गंदी मूर्ति न रखें।

दक्षिण-पश्चिम दिशा में हाथी रखना शुभ नहीं माना जाता।

अत्यधिक बड़ी मूर्ति या भड़कीले रंगों से बचें — यह असंतुलन और मानसिक दबाव ला सकती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हाथी की सूंड का अर्थ:

हाथी की सूंड में हड्डी नहीं होती; यह लगभग **40,000** मांसपेशियों से बनी एक **muscular hydrostat** होती है।

हाथी की सूंड की ऊपर या नीचे स्थिति उसकी मानसिक और शारीरिक अवस्था का द्योतक होती है — और यही तथ्य वास्तु व फेंग शुई की मान्यताओं से गहराई से जुड़ा है।

सूंड ऊपर उठी हुई:

जब हाथी उत्साहित, सतर्क या स्वागत मुद्रा में होता है, तो वह सूंड ऊपर उठाता है।

यह ऊर्जा, उत्साह और उन्नति का प्रतीक है — इसलिए ऐसी मूर्ति को विशेष रूप से शुभ माना गया है।

सूंड नीचे की ओर:

यह स्थिति तब होती है जब हाथी शांत, स्थिर या विश्राम की अवस्था में होता है।

यह संतुलन, स्थिरता और संचित ऊर्जा का प्रतीक है — जो फेंग शुई में शांति का द्योतक है।

इस प्रकार हाथी की सूंड की स्थिति — ऊपर या नीचे — वास्तु और विज्ञान दोनों दृष्टियों से ऊर्जा की अवस्था को दर्शाती है।

सही दिशा, उचित सामग्री और सूंड की शुभ मुद्रा वाले हाथी की मूर्ति घर में रखने से न केवल सकारात्मक ऊर्जा और समृद्धि आती है, बल्कि यह मानसिक संतुलन और पारिवारिक सौहार्द को भी बढ़ाती है।

वास्तु और वैज्ञानिक दृष्टि — दोनों से देखा जाए तो यह एक सुंदर प्रतीक है, जो शक्ति, स्थिरता और सौभाग्य का संदेश देता है।

डॉ अनिल कुमार वर्मा, कार्यालय-सह-आवास: बंगला नंबर **B 27** चौहान टाउन, जुंनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़ मोबाइल: **9425028600 वेबसाइट:** www.askvastu.com

यूट्यूब चैनल: askvastu.com ईमेल: vermanilg@gmail.com

कहानी – बाल-लघुकथा - सच्ची पूजा - श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

बेक्टो ने तय किया था कि वह प्रदूषण फैलाने वाले पटाखें नहीं चलाएगा इसलिए उन्हें गरीब बस्ती में बांटने आया था, “अरे दादाजी ! उस लड़के को देखो. वह पटाखे के लिए जमीन पर लौट रहा है.”'

“अरे हां,” दादाजी ने कहा और उसी ओर चल दिए.

वह लड़का जमीन पर लोट कर मचल रहा था, “अम्मॉं ! मुझे भी एक फूलझड़ी दिला दो.”

पास खड़ी औरत उसे समझा रही थी, "बेटा! मैं फूलझड़ी नहीं दिला सकती हूं. कुछ पैसे थे, भैया के पास चड्डी नहीं थी. वह ले कर आ गई. पैसे कहां बचे है?”

पर, लड़का नहीं माना, ”मुझे तो एक फूलझड़ी चाहि”" वह जोरजोर से दहाड़ मार कर लोटने लगा.

तभी बेक्टो ने उसे पुकार कर कहा, “अरे भाई ! सुनो ! ये फूलझड़ी का पूरा पैकेट रख लो,” कहते हुए बेक्टो ने अपने थैले से फूलझड़ी का पैकेट निकाल कर उस की ओर बढ़ा दिया.

वह नंगा लड़का झट से अपने आंसू पौंछ कर उठ कर खड़ा हो गया, “आप नहीं जलाएंगे इन्हें."

“नहीं!”

“क्यों,” उस लड़के ने फूलझड़ी के पैकेट से एक फूलझड़ी निकालते हुए कहा, “मुझे तो एक फूलझड़ी चाहिए.”

इस पर दूर खड़ी उस की अम्मा बोली, “अभी तो जमीन पर लोट रहा था. जब बाबूसाहब पैकेट दे रहे हैं तो ले क्यों नहीं ले लेता है?” कहते हुए अम्मा ने हाथ जोड़ लिए.

“हां हां, यह सब तुम्हारे लिए है. रख लो,” बेक्टो ने थैला उस की ओर बढ़ा कर कहा तो वह लड़का बोला, “बाबुजी! मुझे पटाखें नहीं चलाना है. केवल लक्ष्मी माता की एक इच्छा पूरी करना है. उसी के लिए एक फूलझड़ी चाहिए.”

“क्या?”' उस की अम्मॉं ने चौंक कर कहा, “अरे! यह पटाखें रख लें. फिर बता ये क्या पहेली है?”

“लक्ष्मी माता की एक इच्छा पूरी करना है.”

“हां बताओ, किस की इच्छा पूरी करना है?” बेक्टो ने भी पूछा.

“आप की अम्मा!” वह नंगा लड़का हंस कर अपनी अम्मा से बोला, “यह फूलझड़ी तो मुझे आप के लिए चाहिए. आप ने एक बार माता के सामने कहा था—हे भगवान ! मेरी एक इच्छा पूरी कर देना. इस बार मैं दीपावली पर एक फूलझड़ी जला सकूं. इतनी सामर्थ्य प्रदान करना.” यह कहते हुए उस ने वह फूलझड़ी अपनी अम्मा के चरणों में रख दी.

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश', पोस्ट ऑफिस के पास, रतनगढ़ जिला-नीमच (मध्यप्रदेश) पिनकोड- 458226

मोबाइल नंबर 94240 79675

कविता – बाल गीत - दीवाली पर दीप जलाएँ – डॉ राकेश 'चक्र'

दीप-दीप से आभा बिखरे,
दीवाली पर दीप जलाएँ।
अच्छी सोच, कर्म से अपने,
तन-मन को हम स्वच्छ बनाएँ।।

राम अयोध्या लौटे इस दिन,
दुष्टों का संहार किया था।
हर्षित हुए, मनी दीवाली,
अतिशय सबने प्यार दिया था।

आराध्य देव राम हैं अपने,
उनके गुण हम सब अपनाएँ।।

युगों-युगों से मने दिवाली,
लक्ष्मी जी भी प्रकट हुईं थीं।
पूजा करें भाव से उनकी,
जगमग-जगमग निशा हुई थी।

पाँच दिनी सनातनी उत्सव,
धूमधाम से सभी मनाएँ।।

बम-पटाखे करें प्रदूषण,
इनसे हमको बचना होगा।
हरित पटाखे लाएँ हम सब,
स्वच्छ वायु को रखना होगा।

काम करेंगे सोच -समझकर
फूलों-सा जीवन महकाएँ।।

आत्मोथान तभी है होता,
जब हम मन के शत्रु पछाड़ें।
कपट, द्वेष, वैरी हैं अपने,
प्रेम, सत्य बस उर में धारें।

दान, दया के दीपक लेकर,
हम संतुष्टि के भाव जगाएँ।।

डॉ राकेश चक्र, (एमडी,एक्यूप्रेशर एवं योग विशेषज्ञ) 90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद 244001
उ.प्र. मो. 9456201857 Rakeshchakra00@gmail.com

कहानी – लघुकथा - "हैप्पी दिवाली" - डॉ. भावना शुक्ल

दीपावली का दिन है। ओल्ड एज होम में चहल-पहल का वातावरण है।

कुछ लोग रंगोली बना रहे हैं और कुछ दिए सजा रहे हैं।

श्यामलाल जी अपनी पत्नी से कहते हैं, "शायद इस बार हमारी दिवाली मन जाएगी।"

तभी रोमा धीरे से कहती हैं, "हां जी, इसी उम्मीद पर हम लोग जिंदा हैं।

तभी रोमा जी ने अपने हाथ में लिया कार्ड उठाकर उसे साफ करना शुरू किया।

"हम लोग सभी मिलकर दीप जलाएंगे और दीवाली मनाएंगे," श्यामलाल जी ने कहा। बेटा, "हम हर साल जलाते हैं, पर इसका अँधेरा तो मिटता ही नहीं।"

अरे रोमा, मत परेशान हो; यह हमारे लिए बेटे की अच्छी यादें हैं। अँधेरा छटेगा, रौशनी फिर आएगी।

तभी कहीं दूसरी ओर से आवाज आई, "हैप्पी दिवाली, दादी जी।"

दादी को आवाज जानी-पहचानी लगी। धीरे-धीरे लकड़ी ठोकते हुए उठीं और देखा कि उनका बेटा हाथ जोड़े खड़ा था और साथ में नाती था।

बेटे और नाती ने चरण स्पर्श किए और कहा - "माँ-पिताजी आपके बिना त्यौहार त्यौहार सा नहीं लगता, हम आपको लेने आए है। इस बार दिवाली साथ मनाएंगे।"

तभी नाती ने एक कार्ड बढ़ाते हुए कहा -"दादा - दादी, यह हमने बनाया है।"

जिसमें लिखा था "हैप्पी दिवाली।"

दादी ने कार्ड हाथ में लिया और दादा -दादी ने नाती को गले लगाया और दोनों फूट-फूटकर रोने।

बेटे और नाती ने चरण स्पर्श किए और कहा - "माँ-पिताजी आपके बिना त्यौहार -त्यौहार - सा नहीं लगता, हम आपको लेने आए है। इस बार दिवाली साथ मनाएंगे।"

तभी नाती ने एक कार्ड बढ़ाते हुए कहा -"दादा - दादी, यह हमने बनाया है।"

जिसमें लिखा था "हैप्पी दिवाली"।

दादी ने कार्ड हाथ में लिया और दादा -दादी ने नाती को गले लगाया और दोनों फूट-फूटकर रोने।

डॉ भावना शुक्ल, प्रतीक लॉरेल, J-1504, नोएडा सेक्टर – 120, नोएडा (यू.पी) - 201307 मोब. 9278720311 ईमेल : bhavanasharma30@gmail.com

कहानी - दादी की मार्केटिंग – सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा

सातवीं क्लास में पढ़ने वाली दिव्या और पांचवी क्लास में पढ़ रहे अंश ट्यूशन से घर लौटे। उन्हें देखते ही गायत्री जी बोली— "आ गए बच्चों, देखो आज मैंने तुम्हारे लिए कितनी बढ़िया डिश बना के रखी है।" दोनों बच्चे कोतुहल से बोले- "क्या बनाया दादी....?" गायत्री जी बड़ी खुशी से, उत्साह से बता रही है – "आज मैंने तुम्हारे लिए वेजिटेबल दलिया बनाया है। इसमें मटर, गाजर, टमाटर, धनिया जैसी सब्जियां डाली है जिससे यह बिल्कुल पुलाव की तरह बन गया है और बहुत बहुत टेस्टी और पौष्टिक है।"

दोनों बच्चे हंसने लगे – "दादी, आजकल लोग पिज़्ज़ा, बर्गर, नूडल्स, पास्ता खाते हैं और आप हमको दलिया खिला रहे हो बाप रे... और वह भी कितनी तारीफें कर करके... सच में दादी आप बड़ी अच्छी मार्केटिंग करती हैं..." भीतर के कमरे से आती मधु ने बच्चों की बातें सुनी तो वह भी मुस्कुराने लगी।

"हां हां ठीक है, मैं मार्केटिंग करती हूं बस ...! लेकिन अच्छी चीज की कर रही हूं ना... तुम्हारी ही सेहत अच्छी बनी रहे... तुम्हारा पेट स्वस्थ रहे... इसीलिए तो ऐसी चीजें छांट छांट कर बनाती हूं। अब चाहे तुम मेरा मजाक उड़ाओ... मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता..." गायत्री जी भी मुस्करा दीं।

गायत्री जी के परिवार में पति, बेटा नरेश, बहू मधु, पोती दिव्या, पोता अंश हैं। दो बेटियां हैं जिनकी शादी हो चुकी है और वे अपने परिवारों के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं। हर साल छुट्टियों में दस पंद्रह दिन रहने के लिए आती हैं। उस वक्त घर में खूब रौनक लगती है 15 दिन उत्सव के जैसे बीत जाते हैं। शाम के वक्त अधिकतर सब इकट्ठे कभी फिल्म देखने, कभी मॉल, कभी होटल के लिए निकल जाते हैं। गायत्री जी और उनके पति ज्यादा करके घर में ही आराम करना पसंद करते हैं इसलिए वे कभी-कभार ही बच्चों के साथ बाहर जाते हैं।

बेशक गायत्री जी की उम्र अब 70 के आसपास होने को है लेकिन अभी भी उनमें स्फूर्ति ऊर्जा सकारात्मकता काफी है इसीलिए वे स्वस्थ है और अनुशासित जीवन जीती हैं। रोज अपनी दिनचर्या योगा, मेडिटेशन से शुरू करती हैं, अपने तथा परिवार के खाने पीने का पूरा ध्यान रखती हैं। जहां तक हो सके घर में ही बना हुआ भोजन सबके लिए तैयार करती हैं। कई बार बच्चे खाने पर बैठते हैं तो लौकी, पालक, बैंगन, तुरई जैसी सब्जी देखकर नाक भौं चढ़ाते हैं और कहते हैं यह क्या बना दिया है हम को बिल्कुल पसंद नहीं।

गायत्री जी समझातीं – "बेटा स्वाद एक चीज है और सेहत अलग चीज है। सिर्फ स्वाद से सेहत नहीं मिलती। तुम लोग जो जंक फूड स्वाद के लिए खाते हो वह किसी भी तरह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी नहीं है। वह केवल तुम्हारा मोटापा बढ़ाता है, पेट खराब करता है, सेहत खराब करता है। मैं उस खाने के लिए तुमको मना नहीं करती लेकिन उसे बहुत ज्यादा खाने की आदत मत डालो। महीने में एक दो बार अगर तुम खाते हो तो मुझे कोई एतराज नहीं है लेकिन रोज तो तुम्हें पौष्टिक भोजन ही खाना पड़ेगा तभी तुम स्वस्थ रह सकोगे और खुशहाल जीवन जी सकोगे"।

बच्चे कभी-कभी तो चुप हो जाते लेकिन कई बार चिढ़ भी जाते कि दादी हमारी पसंद से हमें खाना भी नहीं खाने देतीं। गायत्री जी की आदत सी बन गई थी बच्चों को जब भी खाने के लिए बुलातीं तो सब्जियों की या कोई भी डिश जो बनी होती उसकी बहुत तारीफ करके उन्हें खुश करते हुए कहती— "यह सब्जी खा कर देखो इतनी टेस्टी है कि तुम और लेने के लिए जिद करोगे."... कभी किसी डिश की तारीफ करते हुए कहती—" तुम्हें इतनी पसंद आएगी कि तुम कहोगे दादी रोज-रोज यही बनाओ..."।

आज आलू के परांठे बनाए तो आदतन वे बोल पड़ीं –"आज तो आलू के पराठे ऐसे बने हैं कि जैसे दिल्ली में पराठे की गली में बनते हैं। मुझे तो लगता है उससे भी अच्छे बने हैं जरा खा कर तो देखो..." बेटे नरेश ने हंसते हुए कहा - "मम्मी आप बहुत अच्छी मार्केटिंग करती हैं जिसका खाने का मन नहीं होगा वह भी खाने बैठ जाएगा... आप इतने बढ़िया ढंग से उसका प्रेजेंटेशन करती है...."सभी सदस्य जोर जोर से हंसने लगे। गायत्री जी थोड़ा सा सकुचा गई।

इस बार छुट्टियों में बेटियां बच्चों के साथ आईं तो दिव्या और अंश बहुत उत्साहित थे। क्योंकि इस साल शहर में तीन चार ईटरिज खुली थीं जहां नए नए स्वाद वाले खाद्य पदार्थ उपलब्ध थे। उन्होंने प्रोग्राम बना रखा था सभी इटरिज पर जाकर नए नए व्यंजन एंजॉय करेंगे। फिर दो तीन मूवीज भी देखेंगे और मॉल में भी शॉपिंग के लिए जाएंगे। सभी बच्चों की उम्र दस वर्ष से ऊपर थी। अतः उनकी सोच, पसंद भी अलग अलग थी।

अगले दिन सवेरे गायत्री जी ने इंदौरी पोहे बनाए। उनमें थोड़ा सा नींबू, हल्की सी शक्कर, हरा धनिया, प्याज, आलू डालकर ऊपर से रतलामी सेव डालें और बहुत सुंदर तरीके से सजा कर उसे टेबल पर रखा। सब को आवाज लगाई –"चलो भाई आ जाओ... आज आप सबको इंदौरी पोहे खिलाऊंगी.. उंगलियां चाटते रह जाओगे..." स्वाद देखने के लिए उन्होंने एक चम्मच पोहे निकाल कर चखे। सचमुच पोहे बहुत स्वादिष्ट बने थे। उन्हें बहुत खुशी और संतुष्टि हुई की अभी भी वे कितने स्वादिष्ट व्यंजन बना सकती हैं।

सभी बड़े सदस्य तो फटाफट नाश्ता करने आ गए पर बच्चे बोले – "आज तो हमने ब्रेड का लाइट नाश्ता करना था क्योंकि दोपहर को हम नए पिज्जा हट में जा रहे हैं... वहां का पिज़्ज़ा इंजॉय करेंगे। अगर अभी पोहे खा लिए तो फिर पेट भर जाएगा फिर पिज्जा खाने में क्या मजा आएगा ...."

"बेटा, आज मैने बड़े अच्छे पोहे बनाए हैं। तुम खाकर तो देखो। बड़े दिनों बाद इतने टेस्टी पोहे बने हैं..."

"दादी, शुरू हो गई आपकी मार्केटिंग! आप हर बार अपनी बनाई चीजों की तारीफें कर कर के हम को जबरदस्ती खिलाती रहती हो। चाहे उन्हें खाने का हमारा मन हो या ना हो..." अंश कुछ तल्खी से बोला। बाकी सभी बच्चे चुप हो गए। गायत्री जी के बेटा बहू, बेटियां सभी खिसियाये से एक दूसरे को देखने लगे। माहौल थोड़ा भारी सा हो गया। बेटियों ने आगे बढ़कर प्लेट्स में पोहे परोसे और खाने लगे। साथ में बोलते भी जा रहे थे सचमुच मम्मी ने पोहे बहुत टेस्टी बनाये है। लेकिन बच्चों में से किसी ने भी आगे बढ़कर वह खाने में रुचि नहीं दिखाई।

गायत्री जी का मूड ऑफ हो गया था। इतने शौक से उन्होंने सबके लिए पोहे बनाए थे लेकिन बच्चों ने मजाक उड़ाते हुए उन्हें छुआ भी नहीं। वे आहत भी हो गई थी और बच्चों के बार-बार आप मार्केटिंग बहुत अच्छी करती हैं वाक्य सुन सुनकर थोड़ी नाराज भी हो गई थी। आखिर कुछ नाराजगी जताते हुए वे बोल पड़ीं –" मैं अपने घर में तैयार किए खाने की तारीफें इसलिए करती हूं कि बच्चों की उस खाने में रुचि जगे। वरना तो आजकल के बच्चों की तरह इनको भी बाहर के खाने की तथा जंक फूड खाने की आदत पड़ जाएगी। जो स्वास्थ्य के लिए, पेट के लिए हानिकारक है। जबरदस्ती बीमारियों को न्योता क्यों दिया जाए? अगर शुरू से ही बच्चों को घर के खाने की आदत लग जाए घर के खाने में स्वाद आने लगे तो फिर वे बाहर के खाने की ओर आकर्षित नहीं होंगे। कभी-कभी के बदलाव के लिए बाहर खाना बुरा नहीं लेकिन बाहर के खाने की आदत पड़ जाना जरूर गलत है।

अगर मेरे इस प्रयास से और खाने की तारीफ करने की आदत से आप लोगों को तकलीफ होती है तो ठीक है आगे से मैं नहीं कहूंगी। मेरा तो यही मानना है कि बीमारियों को न्योता देकर दवाइयों पर पैसा खर्च करने की बजाय क्यों ना घर में ही अच्छी सब्जियां, फ्रूट, सलाद सब कुछ खाया जाए और स्वस्थ रहा जाए। मेरा परिवार स्वस्थ रहे, सुखी रहे यही तो मैं चाहती हूं इससे अधिक और क्या चाहिए मुझे... अगर इसमें आपको मेरा स्वार्थ दिखता है कि मैं अपने खाने की तारीफ कर रही हूं तो मैं कुछ नहीं कर सकती। बस आगे से आप पर दबाव नहीं डालूंगी कि मेरे बनाए खाने को आप जरूर खाओ। जो आपकी इच्छा हो कर लेना..." कहते कहते गायत्री जी का गला भर आया था और आंखें भी नम हो गई थी।

मधु तथा दोनों बेटियों ने गायत्री जी को संभाला –“मम्मी जी आप बिल्कुल ठीक कह रही है, कहीं से भी गलत नहीं है। बच्चे ही अनजाने में आपको कुछ गलत बोल गए हैं। हम सभी आपसे माफी मांगते हैं आपका दिल दुखाया। आप इतने प्यार, ममता से हमारे लिए खाना तैयार कर रही हैं और हम इसे मार्केटिंग का नाम देकर मजाक उड़ाते है तो शर्मनाक बात है। चलो बच्चों सभी आओ एक एक करके मम्मी जी से माफी मांगो। आज के बाद तुम उनकी मजाक नहीं उड़ाओगे और वे जो भी प्यार से बना कर खिलाना चाहती है उसे चुपचाप खाओगे…”

बच्चे भी अपराध बोध से भर गए थे और शर्म महसूस कर रहे थे। वे सभी चुपचाप आगे आए और गायत्री जी के हाथ पकड़ लिए—“सॉरी दादी मां, सॉरी नानी मां! अभी हम कभी आपको परेशान नहीं करेंगे। आप इतने प्यार से जो बना कर खिलाओगे हम जरूर खाएंगे। लाइए हमें पोहे परोस कर दीजिए हम अभी खाते हैं आपके टेस्टी इंदौरी पोहे…”

गायत्री जी ने अपनी नम आंखों को पोंछा और धीरे से मुस्कुरा दी। फिर आगे बढ़कर सभी बच्चों को प्लेट में पोहे परोस कर दिए। सभी बड़े चाव से खाने लगे और बोल उठे – “दादी, सचमुच पोहे तो लाजवाब बने हैं। आप ग्रेट हो आपके हाथों में तो जादू है। अब हम दोपहर को पिज्जा हट नहीं जाएंगे बल्कि रात को जाएंगे क्योंकि अब इतने पोहे खा लिए हैं कि पेट के साथ-साथ मन भी भर गया है। पिज़्ज़ा खाने के लिए जगह नहीं है…”

गायत्री जी ने एक-एक करके सभी बच्चों को प्यार से अपने आंचल में भींच लिया और उन्हें चूमने लगी।

दूर खड़ी बेटियां, बहू सभी के चेहरे पर संतोषजनक चमक और मुस्कान आ गई थी।

सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा, मो -९३२५२६१०७९ Email- narender. chhabda@gmail.com

लेख - धनतेरस कब, क्यों और कैसे?... – श्री संजीव वर्मा 'सलिल'

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को भगवान धनवंतरी अमृत कलश लेकर सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। इस तिथि को धनतेरस या धनत्रयोदशी के नाम से जाना जाता है। भारत सरकार ने **धनतेरस** को **राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस** घोषित किया है। धनतेरस यानी अपने धन को १३ गुणा बनाने की लोक मान्यता का दिन है । धनतेरस पर बरतन वाहन, गहने, बहुमूल्य उपकरण आदि खरीदने की प्रथा है।

धनतेरस पर धन्वन्तरि,लक्ष्मी, गणेश और कुबेर की पूजा करने से स्वास्थ्य-समृद्धि बनी रहती है। ॐ धं धन्वन्तरये नमः मंत्र का १०८ बार उच्चारण करभगवान धनवंतरी से अच्छी सेहत की कामना करें। धनवन्तरी की पूजा के बाद गणेश जी के समक्ष दिया-धूपबत्ती जला, फूल अर्पण कर मिठाई का नैवैद्य अर्पित करें। इसी तरह लक्ष्मी पूजन करें। धनतेरस और कुबीर देवता की पूजा हेतु एक लकड़ी के तख्ते पर स्वास्तिक का निशान बना लें।इस पर एक तेल का दिया रख-जलाकर,ढक दें। दिये के सब ओर तीन बार गंगा जल छिड़क, दीपक पर रोली-चावल से तिलक कर मीठे का भोग लगा 1 सिक्का रख लक्ष्मी और गणेश जी को अर्पण करें। दीपक को प्रणाम कर बड़ों से आशीर्वाद लें।दिया अपने घर के मुख्य द्वार पर दक्षिण दिशा की ओर बाती कर रखें। तेरह दिए बालकर घर में हर ओर रख दें।

*** धनतेरस पर विशेष गीत... प्रभु धन दे... ***

प्रभु धन दे निर्धन मत करना.
माटी को कंचन मत करना.....

*

निर्बल के बल रहो राम जी,
निर्धन के धन रहो राम जी.
मात्र न तन, मन रहो राम जी-
धूल न, चंदन रहो राम जी..

भूमि-सुता तज राजसूय में-
प्रतिमा रख वंदन मत करना.....

*

मृदुल कीर्ति प्रतिभा सुनाम जी.
देना सम सुख-दुःख अनाम जी.
हो अकाम-निष्काम काम जी-
आरक्षण बिन भू सुधाम जी..

वन, गिरि, ताल, नदी, पशु-पक्षी-

सिसक रहे क्रंदन मत करना.....

*

बिन रमेश क्यों रमा राम जी,

चोरों के आ रहीं काम जी?

श्री गणेश को लिये वाम जी.

पाती हैं जग के प्रणाम जी..

माटी मस्तक तिलक बने पर-

आँखों का अंजन मत करना.....

*

साध्य न केवल रहे चाम जी,

अधिक न मोहे टीम-टाम जी.

जब देना हो दो विराम जी-

लेकिन लेना तनिक थाम जी..

कुछ रच पाए कलम सार्थक-

निरुद्देश्य मंचन मत करना..

*

अब न सुनामी हो सुनाम जी,

शांति-राज दे, लो प्रणाम जी.

'सलिल' सभी के सदा काम जी-

आये, चल दे कर सलाम जी..

निठुर-काल के व्याल-जाल का

मोह-पाश व्यंजन मत करना...

*

श्री संजीव वर्मा सलिल, विश्ववाणी हिंदी संस्थान, ४०१ विजय अपार्टमेंट, नेपियर टाउन, जबलपुर ४८२००१, चलभाष: ९४२५१८३२४४ ईमेल: salil.sanjiv@gmail.com

लेख - दीये की सौंदर्यशाला में दीवाली – सुश्री इन्दिरा किसलय

जापानी वैज्ञानिकों का मत है कि पूरी धरती कुछ क्षणों के लिये हल्की गति से काँपती थरथराती है। एक धीमी कोमल ध्वनि सुनाई देती है। लगता है धरती मंद मंद गुनगुना रही है।

यही गुनगुन समस्त जीव जगत के प्राणों में व्याप्त है। इसे प्रकाश के प्रति आसक्ति का नाम भी दे सकते हैं। निसर्ग का दीपदान तो निरंतर चलता रहता है। सूर्य चन्द्रमा शाश्वत दीप ही तो हैं। मनुष्य ऋतुओं के सौंदर्यसंपन्न संस्कारों से उमगता है, चहकता है, हर संभव रूपराशि से मन को प्रसन्न करना चाहता है। रचता है उत्सव। अर्जित करता है विभिन्न स्त्रोतों से रोशनी।

सृष्टि का हर रंग रूप, आलोक में ही अपनी सत्ता का परिचय देता है। अमां निशा को पूनम में बदल देने का नाम है दीवाली। मनुष्य अपने पराक्रम पुरुषार्थ से इसे सिद्ध करता है।

ज्योति की सनातन यात्रा का आदिम साक्षी है, मिट्टी का दीया।

अंधेरे खत्म करने की जिद पर जितना कायम है दीप उतना ही मानव भी। चकमक पत्थर रगड़ने से आरंभ यह यात्रा परमाणु उर्जा से स्त्रवित उजालों तक अनथक जारी है।

ईश्वर प्रकाशरूप है। दीपावली ऋतु उत्सव है। प्रकृति के रागानुराग और रूप की छुअन मनुष्य में खुशियों का अविष्कार करती है। उसका बावला मन, पंख फैलाकर मयूर सा नर्तन करने लगता है। इस थिरकन की सारी भंगिमाएं दीपोत्सव के पाँचों दिन अति दर्शनीय हो जाती हैं। विद्युत बल्ब के अविष्कार से पहले मिट्टी के दीयों ने ही मनुष्य के आलोकप्रिय आह्लाद को वाणी दी है। बावड़ी, बाग, कुँआ, मुंडेर, मंदिर, आंगन, चौराहे, पर दीप जलाकर संदेश दिया जाता था कि रोशनी घर की चारदीवारी तक सीमित न रहे। उसपर सभी का हक है।

ये बात और है कि महानगरों और कुबेरों के यहां बारहों मास दीवाली होती है। गरीब की झोंपड़ी का एक दीया भी श्री देवी अर्थात लक्ष्मी के दृष्टिपथ में होता है।

रोशनी आँखों का मन का भोजन है, पर रसाकांक्षी जिह्वा भी उत्सव में मिठाइयों को आमंत्रित करती है।

एक खूबसूरत क्रम है पंचदिवसीय उत्सव का। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को समुद्र से निकले आयुर्वेद के देवता "धन्वंतरि की जयंती "मनाई जाती है। कहने की जरूरत नहीं कि स्वस्थ व्यक्ति ही उत्सव का आनंद ले सकता है। यम के नाम घर के मुख्य द्वार पर रखा जानेवाला दीपक जीवनाशा का समर्थन और रक्षण करता है।

नरकचतुर्दशी के पीछे भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर वध से जुड़ी हुई कथा का आख्यान रचा गया है। हनुमान जन्मोत्सव एवं काली पूजा भी साकार होती है देश के कई इलाकों में।

स्वच्छता ही समृद्धि की संवाहक है। कार्तिक अमावस्या को घर एवं सारा परिसर स्वच्छ कर देवी लक्ष्मी को आमंत्रित करने का विधान है। कहते हैं दैत्यराज बली ने सारे देवताओं और देवी लक्ष्मी को भी अपनी कारा में कैद कर रखा था। वामन यानी प्रभु विष्णु ने उन्हें कारा से मुक्त किया। अतः यह उनकी रिहाई का उत्सव भी कहा जा सकता है। इस दिन अमा निशा, पूनम पर दीपावली से जीत दर्ज करती है।

अन्नकूट यानी उत्सव का चतुर्थ दिवस। निरर्थक प्रथाओं का नष्ट होना समय की माँग है। कृष्ण ने यही सिखाया है। इन्द्र के अहंकार को चूर चूर कर कृष्ण ने इन्द्र यज्ञ के स्थान पर गोवर्धन पूजा की परंपरा का सूत्रपात किया।

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यम द्वितीया या भाई दूज कहते हैं। सूर्यपत्नी संज्ञा की दो संतानें थीं यम तथा यमुना। यमुना हर उत्सव पर भाई के यहां जाती रही पर यम बहन के घर नहीं गये। एक बार यम ने यमुना का आतिथ्य स्वीकार कर लिया उसे उपहार भी दिया। वर मांगने की बात उठी तो यमुना ने जगत के सारे भाई बहनों के बीच अक्षत स्नेह और समृद्धि प्राप्त होने की कामना यम के सम्मुख रखी। यम ने तथास्तु कह दिया। यहीं से भाई दूज की शुरुआत हुई।

कार्तिक माह दीपदान और यमुना स्नान के साथ फलदायी है, ऐसा पुराण कहते हैं। हर की पौड़ी में 150 वर्षों से दीपदान की परंपरा है।

कहा गया है कि"मनुष्यता के इतिहास में हमारी सबसे मूल्यवान और ज्ञानवर्धक सामग्री सिर्फ भारत के खजाने में है। "

कामना की जानी चाहिए कि अगणित दीप जलते रहें,

रोशन हों दीपवर्तिका जैसे मन। गहन तमस के बन्दी उजाले मुक्त हों। दीये की एक एक किरण मनुष्यता की गूँज उत्पन्न करे।।

सुश्री इंदिरा किसलय, नागपुर

कविता - दीपावली पर दोहे – श्री मनोज शुक्ल 'मनोज'

ज्योतिपुंज दीपावली, खुशियों की सौगात।
रोशन करती जगत को, तम को देती मात।।

दीपक का संदेश यह, दिल में भरें उजास।
घोर तिमिर का नाश हो, रहे न विश्व उदास।।

रिद्धि-सिद्धी और संपदा, लक्ष्मी का वरदान ।
दीवाली में पूजते, हम सब करते ध्यान।।

सदियों से दीपक जला, फैलाया उजियार ।
अंधकार का नाश कर, मानव पर उपकार ।।

हर मुश्किल की राह में, चलता सीना तान ।
राह दिखाता है सदा,जो पथ से अनजान।।

दीवाली में दीप का, होता बड़ा महत्त्व ।
हर पूजा औ पाठ में, शामिल है यह तत्व।।

लक्ष्मी और गणेश जी, धन-बुद्धि का साथ।
दोनों के ही योग से, जग का झुकता माथ।।

राम अयोध्या आगमन, खुशियों का यह पर्व।
मुक्ति-मिली दानव-दलन, जनता को था गर्व।।

मानवता की ज्योत से, नव प्रकाश की पूर्ति।
सबके अन्तर्मन जगे, मंगल-दीपक-मूर्ति।।

मनोज कुमार शुक्ल, "मनोज" 58 आशीष दीप, उत्तर मिलोनीगंज जबलपुर (मध्य प्रदेश)- 482002

कविता – दीवाली सुश्री मीना भट्ट ‘सिद्धार्थ’

अनुपम आभा बिखराएगी,
दीप सजाकर थाली।
अंतः का तम दूर हटेगा ,
तब होगी दीवाली।।

भेदभाव,झगड़े-झंझट जब,
सारे मिट जाएँगे।
फैलेगा नूतन प्रकाश तब,
भोर नयी पाएँगे।।
जब लेंगे संकल्प नए हम,
होगी रात न काली।

अनुपम आभा बिखराएगी,
दीप सजाकर थाली।।

अमन-चैन के फूल खिलेंगे,
सतरंगी बगिया में।
सबको रोटी-कपड़े होंगे,
अपनी इस दुनिया में।।
मानवता की जोत जलेगी
आएगी खुशहाली।

अनुपम आभा बिखराएगी,
दीप सजाकर थाली।।

सच्चाई की पूजा होगी,
सत्कर्मों की माला ।
होंगे कृष्ण कर्मयोगी-से,
राधा जैसी बाला।।
रामराज्य होगा इस जग में,
बिखरेगी सुख-लाली।

अनुपम आभा बिखराएगी,
दीप सजाकर थाली।।

नेह-प्यार के संबंधों से,
महकेगा जग सारा।
सींचेगी रसधार सुधा की,
घर-घर भाईचारा।।
देख प्रफुल्लित प्रीति-वाटिका,
पुलकित होगा माली।

अनुपम आभा बिखराएगी,
दीप सजाकर थाली।।

सुश्री मीना भट्ट ‘सिद्धार्थ’, (सेवा निवृत्त जिला न्यायाधीश), 1308 कृष्णा हाइट्स, ग्वारीघाट रोड़, जबलपुर (म:प्र:) पिन – 482008 मो नं – 9424669722, वाट्सएप – 7974160268, ई मेल नं- meenabhatt18547@gmail.com, mbhatt.judge@gmail.com

कहानी - रिश्ते की तलाश – (भावानुवाद-डॉ. सुशीला दुबे) - सौ. उज्ज्वला केळकर

‘विमला, तुम्हारी बहू लाखों में एक है। लक्ष्मी-नारायण की जोडी लगती है।' इंदिरा मौसी सासू माँ से कह रही थी। दो दिन पहले मेरी शादी हुई थी और आज घर में पूजा थी।

इंदिरा मौसी और मेरी छोटी ननंद ज्योती रसोई में हाथ बटा रही थी। मेरी तारीफ सुनकर ज्योती ने नाक भौं सिकोडे थे।

ज्योती तीन भाईयों की बहन थी। सबकी लाडली थी। अपनी तारीफ सुनने की आदी थी। तेज मिजाज थी। घरके बाकी लोगोंके बारे में कहा जा सकता है, गंगा जीकी तरह निर्मल सासूमाँ। ससूरजीकी गांव में प्रतिष्ठा थी। लक्ष्मण, भरत जैसे देवर और ये मानो मंदिरमें भगवान जैसे! वे घरकी छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देते थे। खास तौर पर ननंद-भाभीमें चलनेवाली अनबन नजरअंदाज करते थे। प्रार्थना करनेपर फूलका शगून बहनको देते थे। इन सबसे मेरा छह कोनवाला घर था। मैं इस घरका सातवा कोन बनी थी। घर में और घरके लोगोंके दिल में जगह बनाने का मेरा प्रयास था। बाकी लोगोंके साथ तो मैं घुलमिल गयी थी, लेकिन ननंद के साथ ताल-मेल बैठा नहीं था।

मेरी दादी कहा करती थी, ससुराल के कुत्ते को भी सन्मान देना चाहिए। उनकी सीख याद करके मैंनें `ज्योती ननंदजी' बुलाना शुरू किया। वह नाराज हो गई `मैं क्या बडी औरत हूँ, जो तुम मुझे ननंदजी बुला रही हो?' मैं चुप रही, किन्तु मेरे दोनों देवर उसे चिढाने के लिए `ज्योती ननंदजी कहने लगे। उसने भाईयोंसे बात करना छोड दिया, लेकिन बाद में उसकी समझ में आया कि जो चीजें वह अपनी भाईयों से हक से मांगती थी, जैसे फिल्म देखने या होटल में जाने के लिए पैसे, परफ्यूम जैसी चीजे, वह बंद हो गई थी। तब उसने स्वयं उनसे समझौता कर लिया। ऐसी थी मेरी ज्योती ननंदजी ।

उस दिन इंदिरा मौसीकी बातोंकी गाडी मुझे छोडकर ज्योती की पटरी पर उतरी। `अरी ज्योतीके शादीके बारे में कुछ सोच रहे हो की नहीं? उस का कॉलेजका आखरी साल चल रहा है न?उम्र ज्यादा हो जायेगी, तो रिश्ते मिलना मुष्किल हो जायेगा।' ज्योतीने टकासा जवाब दिया, `मैं भाभी जैसी शादीके बाजारमें खडी नहीं रहूंगी।'

मैंने कौनसा मेरा बाजार बनाकर नीलामी कराई थी? साधारण लडकियों की तरह दिखाकर, चार लोगोंने चार बार देखकर मुझे पसंद किया था। हर बार ज्योती हाजीर थी। चाय नाश्ता जमकर खाती थी। तब क्या वह गाय भैंस पसंद करने आयी थी। मन तो कह रहा था टकासा जवाब दूँ, लेकिन चूप रही। सोचा, इस पटाखेके मुँह लगनेसे कोई फायदा नहीं। चलने दो उनकी बातें। ज्योतीने कहा, `मेरे जीवनसाथी की तलाश मैं खुदही करूंगी। जिसके साथ मेरे मनके तार जुडेंगे उसीके साथ मेरी शादी होगी। ये वहीं थे। इन्होंने कहा `यह तो बहुत अच्छी बात है। हमें जुते घिसने नहीं पडेंगे। हम तुम्हारी पसंद का सन्मान करेंगे।' इस पर भी ज्योतीने नाक भौं सिकोडे। अब भला, इसमें नाक भौं सिकोडनेवाली कौनसी बात थी? लेकिन आदतसे मजबूर।

ज्योती बी. कॉम. हो गई। एम. कॉम. भी कर लिया। एक चार पन्नोंवाली साप्ताहिक पत्रिका में महिलाओं के बारे में लिखे जानेवाले लेखोंकी रूपरेखा बनाने का काम करने लगी। इतने दिन में उसके मनके तार किसीसे जुडे नहीं। वैसे उसने जोडनेका प्रयास तो किया था। लेकिन दूसरी ओरसे प्रमोद, जयंत, विजय आदि युवकोंके दिलके तार नहीं झनझने। शायद ज्योतीका तेज सह नहीं पाये होंगे या उजाले की जगह आगका अनुभव हुआ होगा।

अशोक के बारेमें थोडी अलग समस्या हुई। अशोकने सोचा था, यह ज्योती उसके जीवनका अंधेरा दूर करेगी। ज्योती भी अशोकके प्यार में डूबी थी। हम लोग शादी की तैयारी के बारे में सोच रहे थे। लेकिन यह जूडे तार एक मामुली कारणसे टूट गए। अशोकका संयुक्त परिवार था। ज्योती संयुक्त परिवार में रहने के लिए राजी नहीं थी। अलग घर बसाना अशोकके बस की बात नहीं थी। ज्योती, बाकी सारी बातें तुम्हें पसंद है, तो इतनीसी बात के लिए रिश्ता हाथसे जाने ना देना।' मैंनें समझया था। `अब हम सब साथ में रहते ही है नं? कल अगर हमने अलग घर बसाने की योजना बनाई, तो तुम्हारे हाथ में चाय-नाश्ता कौन देगा?'

`आपको अलग रहनेसे किसने मना किया है? तुम लोग क्या मुझे चाय-नाश्ता देनेके लिए यहां रहते हो?

अलग घर बनाने के लिए पैसे लगेंगे। हप्ते चुकाने पडेंगे, इसलिए आप लोग यहां रहते हो। और प्रिया को संभालनेके लिए माँ है ही। 'उसने दो टूक जवाब दिया। बात कुछ हद तक सही भी थी।

`अशोक की भी यही मज़बूरी हो सकती है। अलग घर बसाने के लिए पैसे चाहिये।

`तो फिर वह पहले पैसे जमा करे, घर ले, और उस के बाद शादी करे।' ज्योतीने मुझे फटकारा, जैसे यह रिश्ता मैंने ही लाया था।

दूसरों पर रोब जमाना आसान होता है। यहां भाभी ऑफीससे थकी-हारी आने के बाद भी उसकी खिदमत में तैयार रहती है। बहां सब काम उसे करना पडेगा। मनमानी नहीं चलेगी। इसका स्वभाव तो हवासे झगडनेका है।

ज्योतीने कहा, इतना धीरज अशोक में नहीं था। आखीर उसने कही और शादी कर ली।

अब ज्योती पच्चीस पार कर चुकी थी। दोनों देवरोंकी शादी हो चुकी थी। हम अपनी गृहस्थी में व्यस्त थे। सासू माँ हमसे नाराज थी। बार बार हमें कोसती थी कि भई, तीन भाइयों में अकेली बहन है। उसके शादीकी किसीको चिंता नहीं है।' अब उन से कौन, वैâसे कहे की भई, ज्योती के लिए प्रकाश ढूंढना, हमारे बसकी बात नहीं है।

बार बार माँजी के भुनभुनाने पर इन्हों ने कहा, `भई, उस के मन के तार किसी से जुडनेके लिए हम क्या कर सकते है?'

`शादी के बाद दिलके तार जुड जाते है। अब हम लोगोंके जुडे थे ना? 'सासू माँ ने निर्णय दे दिया। ज्योती भी अब कुछ नरम पड गयी थी। उसने नकारा नहीं। उसके लिए रिश्ते ढूंढना तय हुआ। हमने वधू-वर सूचक केंद्र में उसका नाम दर्ज कराया। रिश्तेदार, मित्रोंसे कहा कि उनकी नजर में कोई अच्छा रिश्ता हो, तो

बताइएगा। चारो ओरसे जानकारी आने लगी। फिर उसकी छानबीन होने लगी। ज्यतीने रेडे, बडवे, रडवे, चिंधडे, गाढवे जैसे उपनामवाले रिश्ते खारीज किए। उनका बायो-डाटा भी देखा नहीं। `छी: मेरे नाम के आगे ऐसे उपनाम नहीं चाहिए। उसके बाद क्लर्क, टीचर जैसे लडकोंको मना किया।

एक दिन सासू माँ की सहेली उनसे मिलने आई थी। हम उन्हें पमा मौसी कहते थे। उन्होंने कहा, `अरी, तुम ज्योती के लिए रिश्ते ढूँढ रही हो ना? वह साठे का गोट्या, है ना, गोपाल री, उसकी अभी शादी नहीं हुई है।'

`हं गोट्या नामसे ही पता चलता है, गोलमटोल होगा।' ज्योतीने नाक-भौ सिकोडकर कहा। `हां, थोडा गोलगप्पू है, पर मोटा नहीं है। होनहार है। फर्स्ट क्लास करिअरवाला स्मार्ट लडका है।'

`स्मार्ट मतलब, सावला।' ननदियाकी थिअरी।

`होनहार है।'

`शादी के लिए उत्सुक सभी लडके होनहार ही होते है।' ज्योतीकी प्रतिक्रिया। आखिर अपने सहेलेकी बेटीके सामने पमा मौसीने हार मान ली। गोट्या याने गोविंद साठेके रिश्तेका विचारही नहीं किया गया।

वधु–वर सूचक केंद्र की ओर से पत्रिकाएं आने लगी। यूँ ही पन्ने पलटते पलटते ज्योती की नज़र एक पत्रिका के नीचे लिखी हुई चार-पाँच पंक्तियों पर गई थी। लिखा था लड़की दिखाने की अपेक्षा बगिचे में या होटल में मुलाकात करना पसंद किया जाएगा। ज्योतीको यह बात अच्छी लगी। इन्होेंने कहा, `ज्योती कही भी अकेली नहीं जाएगी। हम उसके आस-पास रहेंगे। तुम लोक बातें कर लो। फिर होटल में चाय पीकर घर लौटेंगे।' ऐसी तीन-चार मुलाकाते हुई। इन मुलाकातों में वे दोनोही होते, ऐसा नहीं था। लडकेके चार-पाच दोस्त, ज्योतीकी दो-तीन सहेलियाँ साथ होती। सारे होटल में जमकर नाश्ता करते। चाय-कॉफी पिते। लडका और उसके दोस्त चले जाते। होटलका बील चुकाने में इनकी जेब खाली होती। लेकिन, ये मुलाकाते कोई रिश्ता जोडने तक नहीं पहुँची। मुझे लगा, गृहलक्ष्मी की तलाश के लिए नहीं, अन्नपूर्णा की उपासना के लिए यह खेल खेला गया।

वैसे खा-पीकर कई लोग चले गए, परंतु एक मछली जाल में फंस ही गई। लडका-लडकीने एक दूसरे को पसंद किया। बाकी बाते तय करने के लिए लडके के घर गए। लड़के ने कहा, मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नज़दिकी रिश्तेदार नहीं है। इस लिए मेरी ओरसे दूसरा कोई नहीं, मैं ही बात करूंगा।' इन्हो ने कहा, `ठीक है।' लडकेने कहा, `मुझे दहेज नहीं चाहिये। सिर्फ टू बी एच के वाला फ्लॅट दिला दीजिएगा।

`क्या?' इन का अपने कानोंपर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने कहा, `मुझे रहने के लिए जगह नहीं है। दोस्त के साथ रहता हूँ'। मेरा अपना घर होता, तो लडकी देखनेका कार्यक्रम घर में ही किया होता।

अब फ्लॅट देना तो हमारे बसकी बात नहीं थी। इस लिए यह रिश्ता छोडना पडा।

उसके बाद `व्हेटो' निकालकर इन्होंनें अनौपचारिक मुलाकाते बंद कर दी। ज्योती नाराज हुई, पर सासू माँ खूश हुई। उन्हें ये अनौपचारिक मुलाकाते पसंदही नहीं थी।

वधू-वर सूचक संस्थाकी ओरसे एक रिश्तेकी जानकारी मिली।ये वहाँ पूछताछ करने गये। वहाँ उस लडके के बेटेका नामकरण समारोह चल रहा था। इन्हे लगा, `होगा शायद उसके बडे भाईके बेटेका नामकरण.' इन्होंनें अपना उद्देश बताया। तब वहाँ उपस्थित लोगों में से किसीने मज़ाक उडाते हुए कहा, `अब इस घरमें पच्चीस-छब्बीस साल तक कोई शादी लायक लडका नहीं है। आप के बहन की शादी हो गयी, और उसे लडकी हुई, तो पच्चीस-छब्बीस साल के बाद इस लडके के लिए रिश्ता लेकर आजाइएगा। ' कहनेवाले को लगा, मानो उसने कोई चुटकुला सुनाया है। उसने ताली के लिए हात बढाया और बाकी देखने-सुननेवाले ठहाका मारकर हंसने लगे।

हम एक जगह लडकी दिखाने ले गए। सब अच्छा था। लडका भी अच्छा लगा। सबको पसंद आ गया। शादी तय करनेकी बात होने लगी। लेकिन अभी समय आया नही था। भाग पर किस का बस चले? किसीने बताया, इसकी शादी हो चुकी है। लडकी देहाती है। अनपढ़ है, इसलिए इसे पसंद नहीं है। उसने उसको छोड दिया है। परमात्मा का लाख लाख शुक्र है, कि हमें समयपर पता चला। अन्यथ हम शादी कर देते और बादमें पता चलता तो?

हम एक जगह ज्योती को लेकर गए। फ्लॅट अच्छा-खासा सजाया हुआ था। लडका देखने में खूबसूरत था। अकेला था। उसने कहा, `माता-पिता, भाई-बहन गांवमें रहते है।' लडका घमंडी लगा, लेकिन बाकी तामझाममें यह बात बाकी किसीके ध्यानमें नहीं आई। सासू-माँ खूश थी कि चलो, देरसे आए, दुरूस्त आए। देरसे ही सही, पर लडकी का भाग्य चमका। उन्होंने तुरंत हां कर दी, किन्तु हमने तुरन्त हामी नहीं भरी। हम दूध के जले छाछ भी फूक फूंक कर पी रहे थे। दूसरे दिन कुछ पूछ-ताछ के लिए फिर वहां गए, तो एकदम ट्रान्सफर सीन. फ्लॅट खाली था। सोफा, टी-पॉय, कारपेट सब गायब। पूछनेपर पता चला, इतना कीमती फर्निचर खरीदने की लडके की औकात नहीं है। एक दिन के लिए सब सामान पडोस से ले आया था। यह भी मालुम हुआ, की लडका बँक में कोई ऑफिसर वगैरे नहीं है। चपरासी है। लेकिन मेरी होशियार पढ़ी-लिखी ननंद उस के चिकने चुपडे चेहरेपर इतनी मोहित हुई, की उसी से शादी करने की जिद ले बैठी। इस लडकीने दो साल पहले अध्यापक, सरकारी ऑफिसर जैसों को भी नकारा था। अब उसका कहना था कि जैसे फिल्मों में ड्रायव्हर, नौकर, बावर्ची, कूली की किस्मत खूल जाती है, वैसे हमारी भी खुलेगी। इन्हों नें व्हेटो निकाला. उसे समझाया, यह भाग्य सिर्फ फिल्म के हीरों का ही होता है। वास्तव जिंदगी में ऐसा नहीं होता। हम ये रिस्क नहीं लेंगे। फिर उसने हमसे झूठ भी कहा था। उसे समझानेके लिए हमें क्या क्या करना पडा, कहना पडा, हम ही जानते है।

इस दरमियान मेरी चचेरी बहन सुजाताका बेटा आदित्य कुछ दिन हमारे घर रहने आया था। वह आय. टी. फिल्ड में एक अच्छी-खासी कंपनी में था। हमारे शहर में उसकी ट्रान्सफर हुई थी। वे लोग नागपुर में रहते थे। दस-पंधरा दिनमें उसने फ्लॅट ले लिया। वह अपने अपने फ्लॅटमें चला गया। फिरभी हमारी यहां उसका आना-जाना होता रहा, बल्की यू कहा, तो ठीक रहेगा, की उस का आना-जाना बढ़ गया। एक दिन उसने ज्योतीके साथ विवाह करनेका प्रस्ताव मेरे सामने रखा, तो में आचरज में पड गई। मैं ने कहा, `देखो, हमारी

ज्योती अग्नीशिखा है, बादमे `जल गया ...जल गया' करके चीखोगे। उसने कहा,` वह अग्नीशिख है, तो मैं अग्नीगोल हूं? आदित्य मेरा नाम है, मतलब सूरज.'

ज्योती अब अपेक्षाओंकी एक एक सीढी उतरते हुए बहुत नीचे आ गई थी। अब वह संयुक्त परिवारमें रहने के लिए राजी थी। आदित्य स्मार्ट और होनहार युवक था। उसका सारा परिवार सभ्य और सज्जन था। मैं तो शादी के पहलेसे ही इस परिवार को जानती थी। आखीर हमारी ननंद की शादी हो गई।

मैंने मनही मन एक बातकी गांठ बांध रखी है, जब मैं अपनी बेटी के लिए, प्रिया के लिए रिश्ते ढूंढूंगी, तब मेरी पहली शर्त होगी, कि लडके की कोई कुंवारी बहन ना हो।

मूल लेखिका - सौ. उज्ज्वला केळकर, निलगिरी, सी-५ , बिल्डिंग नं २९, ०-३ सेक्टर – ५, सी. बी. डी. – नवी मुंबई , पिन – ४००६१४ महाराष्ट्र, मो. 836 925 2454, email-id – kelkar1234@gmail.com

भावानुवाद - डॉ. सुशीला दुबे - फ्लॅट नं ३०३, बिल्डिंग डी.-२ , शिवसागर को. ऑप. सोसाटी. माणीकबाग, सिंहगड रोड पुणे पिन - ४११०५१ महाराष्ट्र

कहानी - पड़ोसी – मूल लेखिका गिरिमा घारेखान – भावानुवाद श्री राजेन्द्र निगम

नया घर, नया वातावरण, कुछ डर और फिर घर में अकेले सोने का अनुभव। इन सब ने मिलकर रन्ना की नींद को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। ऊँगली पर गिनते हुए. 'ॐ नमः शिवाय' की कुछ मालाएँ जपने के बाद भी रन्ना का करवटें बदलने का सिलसिला चालू ही था। तब ही उसे लिफ्ट के दरवाजा के खुलने की आहट सुनाई दी। उसने घड़ी की ओर देखा। एक बजे थे। रात्रि की नीरव शांति में उसे लड़कियों की आवाज सुनाई दी, -'चिकनी चमेली... महुआ चढ़ा कर आई। ' रन्ना का दिमाग अब सोचने लगा। इतनी देर रात ये लड़कियाँ कहाँ से आई होंगी? एजेंट ने कहा था कि पास के फ्लेट में लड़कियाँ रहती हैं । तो ये अकेली लड़कियाँ रात के शो में सिनेमा गई होंगी या फिर ये कॉल सेंटर में काम करती होंगी ?

रन्ना की जिज्ञासा उसे बिस्तर से उठाकर डोरआई तक ले जाए, उसके पहले ही पास के फ्लेट का दरवाजा बंद हो गया। अपनी जिज्ञासा को अंदर ही दबाये, रन्ना लेटी रही ।

रन्ना का जन्म कलोल जैसे गुजरात के एक छोटे गाँव में हुआ था और फिर वहीं से वह स्नातक हुई थी। बी.ए. का परिणाम अच्छा आया था और फिर उसकी एम.बी.ए. करने की बहुत इच्छा थी, इसलिए उसके चाचा उसे उनके घर गाँधीनगर ले गए। केम्पस इंटरव्यू के दौरान मुंबई की एक कंपनी में उसका चयन हुआ। पापा की इच्छा उसे बहुत दूर भेजने की नहीं थी, लेकिन चाचा ने समझाया कि, 'इतनी ढेर तनख्वाह मिलेगी कि शादी का सब खर्च निकल जाएगा और अच्छी कमाई होगी तो लड़का भी अच्छा ही मिलेगा। ' अंत में पापा सहमत हो गए। रन्ना के कॉलेज में से अन्य दो और लड़कियों को भी मुंबई में नौकरी मिली थी। इसलिए इन तीनों लड़कियों ने एक साथ रहने का तय किया। लेकिन उन दो की नौकरी एक महीने बाद शुरू होनेवाली थी, इसलिए मुंबई में अभी किराए पर लिए गए फ्लैट में रन्ना अकेली ही रहती थी।

अगली रात भी पिछली रात जैसा ही हुआ। इस बार रन्ना तुरंत उठी और दरवाजे तक गई। उसे मालूम करना था कि वे कौन लड़कियाँ हैं जो इतनी देर रात घर आती हैं ? उसने डोरआई से देखा। तीन जवान लड़कियाँ थीं। चेहरे पर बहुत मेकअप किया हुआ था और होठों पर गहरी लिपस्टिक लगाईं हुई थी। कमर तक के लंबे बाल खुले हुए थे। कुछ चमकीले कपड़े पहने हुए थे। उनका फ्लैट रन्ना के फ्लैट से एकदम नजदीक का था। इसलिए वह उन्हें ठीक से देख सकती थी। एक लडकी पर्स में कुछ ढूँढ रही थी। दूसरी लड़की ने जोर से जम्हाई ली और बोली, 'कितनी देर

गीता ? कहाँ रख दी चाबी ? आज तो उस टेबलवाले ने सर घुमा दिया। साला, इतने गंदे-गंदे इशारे कर रहा था। कल यदि आया तो मैनेजर को बोल दूँगी। '

'मिल गई', कहते हुए गीता ने चाबी निकाली, दरवाजा खोला और खनकती आवाज में वे अंदर चली गईं।

उस रात रन्ना नहीं सो सकी। पिछली रात के उनके गीत, इस समय की उनकी वेशभूषा, उनकी बातचीत व घर आने के उनके समय से उसे बहुत कुछ अनुमान हो गया था। उसका सिर चकराने लगा - ये लड़कियाँ बार-गर्ल्स थीं ! बार में पुरुषों के समक्ष लटके- झटके कर नाचनेवाली ? हे भगवान ! मैं कहाँ फँस गई ? बार गर्ल्स के पड़ोस में रहना ! मुंबई आते समय मम्मी ने पापा को ख़ास कहा था कि, 'पड़ोस देख कर घर भाड़े पर लेना, पहला सगा तो पड़ोसी होता है। ' सबसे ऊपर की मंजिल पर घर था, इसलिए पापा को इस बात की फ़िक्र हुई थी। उन्होंने एजेंट से पूछा तो उसने कहा था, 'अंकल, फ़िक्र न करें। उस 902 में भी तीन लड़कियाँ ही रहती हैं। उन्हें भी वह घर मैंने ही दिलवाया था। ' पापा को सुकून मिला था। लेकिन ये लड़कियाँ ऐसी होंगी, वह एजेंट को मालूम नहीं होगा ? उसने इनके समक्ष धोखाधड़ी की ?

रन्ना ने निश्चय किया कि वह दूसरे ही दिन उस एजेंट को फोन करेगी, जिसने उसे घर दिलाया था और फिर जल्दी से जल्दी घर बदल लेगी। वह व उसके पापा तो मुंबई में किसी को पहचानते नहीं थे। आने के बाद तो वे तुरंत दादर स्टेशन के पास स्थित स्वामीनारायण के मंदिर के एक कमरे में रहे थे। फिर उसके बाद उसकी अधिकारी ज्योति मेडम ने एक एजेंट का नंबर दिया था, जिसने उसे यह घर दिलाया था।

दूसरे दिन सवेरे ही रन्ना ने उस एजेंट को फोन किया और सब बातें बताई। एजेंट ने पूछा, 'वे लड़कियाँ आपको परेशान करती हैं ?'

'नहीं। '

'तो फिर ?' रन्ना के पास इस 'तो फिर' का कोई जवाब नहीं था। लेकिन उसने घर बदलने की जिद चालू रखी तब एजेंट ने कह दिया, 'मेडम, आपको घर तो दूसरा मिल जाएगा, लेकिन आपने यहाँ जो छह माह का एडवांस किराया है, उसका रिफंड आपको नहीं मिलेगा। फ्लेट का मालिक वह रकम वापिस नहीं करेगा। और दूसरी बात, दूसरे घर में भी पड़ोसी कौन हैं, वह तो हम बता नहीं सकते। हम घर दिलाते हैं, परंतु किसी के काम की झंझट में नहीं पड़ते। '

छह महीने के भाड़े का नुकसान हो, उसे रन्ना बर्दाश्त करने की हालत में नहीं थी। पापा ने बहुत पसीना बहाकर प्राप्त रकम से मुंबई के इस घर की इतनी बड़ी रकम का भुगतान किया था। पापा को तो इन सब बातों के बारे में मालूम भी नहीं था। फिर एजेंट भी कह रहा था दूसरे घर में कौन

पड़ोसी है, वह उन्हें कहाँ मालूम ? कुछ भी हो, यहाँ केवल लड़कियाँ ही तो थीं! अन्य कोई डर तो नहीं था ! उसकी अन्य दो सहेलियाँ भी एक महीने में तो आ ही जाएँगी। फिर क्या फ़िक्र ? रन्ना ने तय किया कि वह इन झंझटों को कुछ और सहन कर लेगी।

उसके बाद रोज रात रन्ना की आँख एक बजे खुल जाती। वे लड़कियाँ जब मूड में होतीं तो लिफ्ट में से ही गाने गुनगुनाते हुए बाहर निकलती थीं। कभी 'छम्मा, छम्मा' तो कभी 'झंडुबाम' या 'फेविकोल' गीत सुनती हुए रन्ना सोचती रहती, 'ये सब जहाँ नाचती होंगी, वहाँ से इन सब इन गीतों को घर तक क्यों लाती हैं ? उन्हें यह सब अच्छा लगता होगा, इसीलिए न ! क्या उन्हें ऐसा विचार नहीं आता होगा कि पास में जो कोई उन्हें सुनता होगा, उस पर कैसी छाप पड़ती होगी ? पूरी तरह बेशर्म व निर्लज्ज - और क्या ?

रोज रात को अँधेरा तनाव के साथ रन्ना को घेरे रहता।

रविवार को रन्ना कुछ देर से उठी। सबसे पहले उसने घर को पूरी तरह साफ़ किया। जब मम्मी का फोन आया और उसने लंबी बात की और वीडियो चेटिंग कर घर बताया। फिर कचरे की बास्केट बाहर रखने के लिए दरवाजा खोला और उस समय गीता भी उसके घर के बाहर खड़ी थी। वह रन्ना की ओर देख कर मुस्कराई। रन्ना ने कोशिश की लेकिन उसके होंठ बिल्कुल भी लंबे न हो सके। उसने दरवाजा बंद किया व अंदर चली गई।

अंदर जा कर रन्ना नहाने के लिए बाथरूम में गई। यह क्या ? नल में पानी ही नहीं आ रहा था। घर में पानी भरने के लिए दो बाल्टियाँ थीं। उनका पानी तो उसने सफाई करने में इस्तेमाल कर लिया था। पीने का पानी भी समाप्त हो रहा था। अब ? उसने दो घंटे प्रतीक्षा की। किससे पूछें ? उसने 903 के बाहर तो सदैव ताला ही देखा था। ऐसा लगता था कि 904 में तो सिर्फ लड़के ही रहते हैं, क्योंकि जब वह ऑफिस के लिए निकलती थी, तब दो लड़के भी वहाँ से निकलते थे और लिफ्ट में उसके साथ शामिल हो जाते थे। उनसे तो पूछ नहीं सकते थे। फिर कौन रहा ?

मजबूरी में रन्ना ने पास के फ्लैट की बेल बजाई। दरवाजा खुला। रन्ना ने कुछ संकोच के साथ पूछा, 'आज पानी नहीं आ रहा है तो...'

अंदर सोफे पर बैठी हुई एक लड़की बोली, 'नीचे नोटिस नहीं पढ़ा था क्या ? आज ऊपर टंकी की सफाई हो रही है, दस बजे से पानी बंद। अब पानी शाम को आएगा। '

रन्ना सोचने लगी। अब क्या करे? नहाने का काम तो वह अब शाम को निपटाएगी लेकिन पीने के पानी के लिए क्या करे? बाहर बरसात जोरों से हो रही थी। पानी खरीदने के लिए कैसे जाए? रविवार होने के कारण यदि आज नजदीक की दुकानें बंद हो तो क्या करे ? फिर यह तो मुंबई की पागल बरसात ! उसके चेहरे पर फ़ैली अन्यमनस्कता और चिंता के अक्षांश-रेखांश देख कर उस

लड़की ने पूछा, ‘क्या हुआ ? पीने का पानी नहीं है क्या ? यहाँ से दो बोतल ले जाओ। हमने तो कल से ही भर कर रखा हुआ है।’

इतनी तकलीफ के बावजूद रन्ना ने मुँह बिचका लिया। पिछली रात का जागरण, उस एजेंट के द्वारा की गई धोखाधड़ी का दंश और उन लड़कियों के लिए मन में इकट्ठी हुई नफरत- इन सब ने उसके मन में एसिड भर दिया। ‘बार गर्ल्स के यहाँ से पानी लेने की अपेक्षा मैं प्यासी रहना अधिक पसंद करूँगी। ’ यह कहकर, उन तीनों के चेहरे देखे बगैर ही वह तुरंत अपने घर में घुस गई और दरवाजा पछाड़ कर बंद कर लिया।

दोपहर एक बजे वह कुछ देर के लिए लेटी थी और तब ही घर की बेल बजी। वह चौंकी। मेरे घर कौन आया ? डोरआई में से गीता को देखा और मन में अनेक अनैच्छिक दृश्य उसके चेहरे के सामने नाचने लगे। उसने चेहरा बिगाड़ कर दरवाजा खोला। रन्ना के स्वागत की प्रतीक्षा के बगैर ही गीता अंदर आ गई और पास रखी खटिया पर बैठ गई। रन्ना उसकी ओर देख कर दरवाजे के पास ही खड़ी रही। उसे सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे।

‘दरवाजा बंद कर और यहाँ आ कर बैठ।’ मानो आज्ञा दे रही हो, इस तरह गीता गुजराती में बोली। रन्ना को समझ नहीं आया कि उसे आश्चर्य अधिक किसका हो रहा था- वह सीधे इस तरह आ कर बैठ गई इसका या फिर वह शुद्ध गुजराती में बोलने लगी उसका ? उसके चेहरे के हावभाव देख कर गीता ने हँसते हुए गुजराती में कहा, ‘तू यहाँ आ कर यदि बैठेगी, तो मैं तुझे जादू-टोना कर बार गर्ल नहीं बना दूँगी। ’ रन्ना पलंग पर बैठ गई - गीता बैठी थी उसके दूसरे किनारे। ऐसा लगता था, मानो उसकी अक्ल अब पत्थर हो गई हो। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उसे घर से बाहर निकल जाने के लिए क्यों नहीं कह पा रही है !

‘गुजराती हो न ?’

रन्ना ने नजर घुमा ली।

‘तेरा थोबड़ा देख कर ही मालूम हो जाता है। तुम तुम्हारी मम्मी के साथ फोन पर जो बात करती हो, वह हमें सब सुनाई देता है। ’

रन्ना कुछ बोले बगैर उसकी ओर देखती रही।

‘कहाँ से आई हो ?’

‘कलोल से, लेकिन तू, तुम गुजराती !’

‘क्या ऐसा तुम मानती हो कि गुजराती लड़की बार डान्सर नहीं बनती है?’ गीता कुछ हँसी और फिर बात आगे बढ़ाई। ‘वे दनों इस समय सो गई हैं। मुझे भी सोना है। लेकिन फिर मुझे लगा कि इस सीधी-सादी लड़की को कुछ समझा कर आऊँ। देखो कोई शौक से बार डांसर तो बनता

नहीं है। प्रत्येक की कुछ कथा होती है। इस समय मैं तुम्हें अपनी व्यथा की कथा सुनाने के लिए यहाँ नहीं आई। कारण जो भी हो, लेकिन यह हकीकत है कि इन दिनों मैं अनजान पुरुषों के सामने बार में नाचती हूँ। '

रन्ना का ध्यान गीता क्या कह रही है, उस से अलग हो गया। उसे मात्र उसके हँसते हुए होंठ दिखाई दे रहे थे, जो बार में क्लब सांग्स गा रहे थे। उसे उसकी काजल लगी आँखें दिखाई दे रही थी, जो अनजान पुरुषों के सामने उसकी पलकें नचा रही थीं। उसे ऊपर-नीचे जाते हुए हाथ दिखाई दे रहे थे और वह शरीर दिखाई दे रहा था जो नाज-नखरे करते हुए बार में झूमता था।

'तुम्हें ऐसा करते हुए शर्म नहीं आती है ? उन पुरुषों की कैसी गंदी नजर होती है ?' सुन कर जिसे ठोकर लगे, वैसी आवाज में रन्ना बोली।

गीता तिरस्कार के साथ हँस दी। 'तुम यहाँ से निकल कर अपनी ऑफिस जाती हो, तब तक कितने ही पुरुष तुम्हें भी देखते होंगे। उनकी नजर कैसी होती है, तुम्हें मालूम है ? तुम नवरात्रि में नाचने के लिए जाती हो, तब आसपास खड़े पुरुषों की आँखों पर क्या पट्टियाँ बंधी होती हैं ? ये पास रहनेवाले लड़के जो तुम्हारे साथ लिफ्ट में होते हैं न ? उनकी नजर तुमने देखी है ?'

रन्ना आँखें फैला कर सुनती रही। इसे तो सब मालूम था ! वह मानो उसके मन के भावों को पढ़ती हो, इस प्रकार बोली, 'ध्यान तो रखना पड़ता है न ? क्या नाम है तुम्हारा ?

'रन्ना। '

'रन्ना, नजर तो सब ओर रखना पड़ती है । लाचारी व मजबूरी हो तो पैसों के लिए नाचना पड़ता है, लेकिन चारों ओर देखते भी रहना पड़ता है। लोगों का हमारे प्रति पूर्वाग्रह हो गया है। अन्यथा बड़ी हिरोईन पैसों के लिए पार्टियों में नाचने जाती हैं न ? उन्हें तो कोई खराब नहीं कहता है। होटलों में गानेवाले गायकों की सब तारीफ़ करते हैं। उन्हें गाना आता है, तो वे गाते हैं। हमें नाचना आता है, अतः हम नाचते हैं ! और हाँ, यह सब कह कर मैं तुझे कोई सफाई देने के लिए नहीं आई। मैं तो तुझे यह कहने के लिए आई हूँ कि आज सुबह का तुम्हारा व्यवहार बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। प्रियंका व डेजी तुम पर बहुत गुस्सा थीं। बमुश्किल उन्हें मैंने शांत किया। आगे से अब ऐसा मत करना। पास में रहते हैं, अतः जरूरत तो पड़ेगी ही। '

गीता खड़ी हुई और बाहर निकलने ही वाली थी कि रन्ना से बोलने में आ गया, 'दूसरी बार का मौका अब नहीं आएगा, मैं जितना जल्दी हो सके, घर खाली करनेवाली हूँ। अतः मुझे अब तुम्हारी क्या जरूरत पड़नेवाली ?'

उसने इस समय भी दरवाजे को पछाड़ते हुए बंद किया।

उसके बाद आए शनिवार की रात रन्ना की नींद उड़ गई। कोई उसके दरवाजे पर जोरों से लात मार रहा था। उसने घड़ी की ओर देखा। दो बज रहे थे। कौन होगा ? किसे बुलाऊँ ? रन्ना घबरा गई। उसके पास सिक्योरिटी का नंबर नहीं था। वह डरती-डरती आवाज किए बगैर दरवाजे तक गई और डोरआई से बाहर देखा। रोज सुबह उसके साथ लिफ्ट में जो 904 नंबर फ्लैट में रहनेवाला लड़का जाता था, वह दिखाई दिया। रन्ना काँपने लगी। अब क्या करे ? वह यदि दरवाजा तोड़कर अंदर आ जाए तो ! पासवाली लड़कियाँ तो थककर सो गई होंगी। और यदि जग भी रही होंगी, तो वे क्यों उसकी मदद करने के लिए आएँगी ? सब कहते हैं कि मुंबई में कोई किसी अन्य के मामले में बीच में नहीं पड़ता। और फिर उसने तो उनके साथ बहुत खराब व्यवहार किया था ! पुलिस को यदि बुलाए और मामला यदि लंबा खिंच जाए तो इस अनजान नगर में पुलिस स्टेशन के चक्कर कैसे लगाती रहूंगी ? फिर तो पापा नौकरी छुड़वाकर वापिस ही ले जाएँगे।

रन्ना को लग रहा था, मानो पूरा आकाश उसके सिर पर गिर रहा हो और पैरों के नीचे से जमीन खिसकती जा रही हो। हाथ-पैर पसीने-पसीने हो गए थे। आँखों के आगे अँधेरा छा गया था। उसे लगा कि वह बगैर हवा के अन्तरिक्ष में फिंक रही है। तब ही पास के फ्लैट के दरवाजे के खुलने की आवाज आई। पतझड़ के पत्ते की तरह काँपती रन्ना कुछ स्थिर हुई और उसने डोरआई में से देखा कि गीता ने उस बंदे को गर्दन से पकड़कर पीछे खींचा और फिर जोर से तमाचा जड़ दिया। रन्ना की सांस में सांस आई। उसने उसका दरवाजा खोल दिया। तब तक तो प्रियंका व डेजी भी उस लड़के पर टूट पड़ी। 'साले, हजम नहीं होता है तो पीता क्यों है?' प्रियंका बोलती जा रही थी और उस लड़के पर लात जमाती जा रही थी। लड़के में प्रतिकार करने की शक्ति ही नहीं थी। उसे अधमुआ कर डेजी ने रन्ना से कहा, 'तुम पहले जा कर दरवाजा अंदर से बंद करो। फिर अब हम इसके साथ वह करते हैं कि यह अब कभी दुबारा ऐसी हिम्मत नहीं करेगा। '

रविवार सुबह दस बजे रन्ना ने पास के घर का दरवाजा खटखटाया। प्रियंका बाहर आई और रन्ना को देखकर सामने खड़ी रही।

'मैंने अप सबके लिए गर्मागर्म नाश्ता बनाया है। आइए न ! अब साथ में ही रहना है, तो फिर दोस्ती तो करना पड़ेगी न !'

अंदर बैठी गीता यह सुनकर मुस्करा रही थी.

मूल गुजराती कहानीकार – गिरिमा घारेखान, *10, ईशान बंगलोज, सुरधारा- सताधार मार्ग, थलतेज, अहमदाबाद-380054 मो. 8980205909.*

हिंदी भावानुवाद – श्री राजेन्द्र निगम, *10-11 श्री नारायण पैलेस, शेल पेट्रोल पंप के पास, झायडस हास्पिटल रोड, थलतेज, अहमदाबाद -380059 मो. 9374978556*

कविता - चराग़ रखा है साथ जलाते रहना – श्री हेमंत तारे

राहों की तीरगी को मिटाते रहना
चराग़ रखा है साथ जलाते रहना
कोई रूठे अपना तो ग़ज़ब क्या है
उसे मनाना, मनाना, मनाते रहना

फ़िर बरपा है कहर तपिश का यारों
तुम परिंदों को पानी पिलाते रहना

तनकीद के पहले गिरेबां में झांक लेना
आसां नही इतना सही राह बताते रहना

अपनी दौलत, शोहरत पे गुरूर न करना
रब से डरना, फकीरों को खिलाते रहना

मिल जाए गर कोई नाख़ुश, नाउम्मीद तुम्हें
हमदर्द हो जाना और हौंसला दिलाते रहना
सीखने को बहुत कुछ है 'हेमंत' जमाने में
बदकिस्मत हैं वो जो सीखे हैं रुलाते रहना

(तीरगी = अंधकार, तनकीद = उपदेश देना)

श्री हेमंत तारे, मो. 8989792935

कविता - जब जलाया दीप मैंने – श्री अरुण कुमार दुबे

जब जलाया दीप मैंने आँधियों के गांव में
तेज हलचल हो गई है बिजलियों के गाँव में

मूर्खता है या दिलेरी आप ही ये तय करें
घर बनाया मूषकों ने बिल्लियों के गाँव में

गर कोई आँखों को भाने लग गया तो पेशतर
दोस्त रहना सीख ले रुसवाइयों के गाँव में

सामने तारीफ़ करता पीठ पीछे गालियाँ
आदमी क्या रह रहा सरगोशियों के गांव में

बोलने की थी मनाही हुक्म था सरकार का
है अजूबा शोरगुल खामोशियों के गाँव में

टूटता उसका बदी से जा रहा है वास्ता
आना जाना हो रहा क्या नेकियों के गाँव में

ज़हन में हैवानियत जिसके है तारी हो रही
भेज दो बसने उसे तुम तितलियों के गाँव में

पेट खुद अपना नहीं भर पा रहा है आजकल
कौन भूके आ गए हैं रोटियों के गाँव में

चाह है निर्वाण की तो राह पकड़ो बुद्ध की
भूलकर मत पैर रखना ढोंगियों के गाँव में

आ गया कोई शिकारी जाल रख बन रहनुमा
छटपटाहट है अरुण जो पंक्षियों के गाँव में

श्री अरुण कुमार दुबे, 5, सिविल लाइन्स सागर मध्य प्रदेश मोबाइल : 9425172009 Email : arunkdubeynidhi@gmail.com

लेख - बेलपत्र का महत्व और पूजा विधि - ज्योतिषाचार्य पं अनिल कुमार पाण्डेय

बेलपत्र का महत्व और बेलपत्र को भगवान शिव या शिवलिंग पर चढ़ाने की उचित विधि

बेलपत्र का उल्लेख कई पुराणों में मिलता है, विशेष रूप से लिंग पुराण, स्कंद पुराण, पद्म पुराण और शिव पुराण में। जैसे कि शिव महापुराण की रुद्र संहिता के अध्याय में रोगों से मुक्ति के लिए कमल पुष्प या बेलपत्र अर्पण करने के लिए कहा गया है। इसके अलावा शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए भी भगवान शिव के अभिषेक के दौरान भी बेलपत्र चढ़ाने का बड़ा महत्व है। उपरोक्त ग्रन्थों में बेलपत्र के बारे में जो बताया गया है उसमें से कुछ प्रमुख बातें हम आपको बता रहे हैं।

लिंग पुराण:

1. **भगवान शिव को प्रिय:** लिंग पुराण में कहा गया है कि बेलपत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है और इसे चढ़ाने से भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

2. **तीन पत्तियों का महत्व:** बेलपत्र की तीन पत्तियों को भगवान शिव के त्रिनेत्र (तीन नेत्र) और त्रिशूल (त्रिशूल) का प्रतीक माना गया है।

3. **पापों का नाश:** लिंग पुराण में बताया गया है कि जो व्यक्ति श्रद्धा और भक्ति से बेलपत्र भगवान शिव को अर्पित करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

स्कंद पुराण:

1. **पूजा में आवश्यक:** स्कंद पुराण में बेलपत्र को भगवान शिव की पूजा में आवश्यक बताया गया है। इसे शिवलिंग पर चढ़ाने से पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

2. **शांति और समृद्धि:** बेलपत्र चढ़ाने से व्यक्ति के जीवन में शांति और समृद्धि का वास होता है।

3. **धार्मिक पुण्य:** स्कंद पुराण में बताया गया है कि जो व्यक्ति नियमित रूप से बेलपत्र भगवान शिव को चढ़ाता है, उसे धार्मिक पुण्य की प्राप्ति होती है और उसका जीवन सफल होता है।

पद्म पुराण:

1. **अक्षय पुण्य:** पद्म पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति बेलपत्र चढ़ाता है, उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और उसके जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

2. **स्वास्थ्य लाभ:** पद्म पुराण में बेलपत्र के औषधीय गुणों का भी वर्णन किया गया है। इसे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माना गया है।

शिव पुराण:

1. **शुद्धता और पवित्रता:** शिव पुराण में बेलपत्र को पवित्रता और शुद्धता का प्रतीक माना गया है। इसे चढ़ाने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

2. **धन और समृद्धि:** शिव पुराण में बताया गया है कि बेलपत्र चढ़ाने से धन और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

इन पुराणों में वर्णित बातें बताती हैं कि बेलपत्र न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसके औषधीय गुण भी बहुत अधिक हैं। भगवान शिव की पूजा में बेलपत्र का उपयोग करने से मानसिक, शारीरिक और आर्थिक सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।

भगवान शिव पर बेल पत्र चढ़ाने का सही तरीका इस प्रकार है:

1. **स्वच्छता:** सबसे पहले, स्वच्छता का ध्यान रखें। स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनें।

2. **बेल पत्र की तैयारी:** बेल पत्री को साफ पानी से धो लें। बेल पत्र का पत्ता साबुत और त्रिदलीय (तीन पत्तियों वाला) होना चाहिए।

3. **पूजा स्थान की तैयारी:** पूजा स्थल को साफ करें और भगवान शिव की मूर्ति या शिवलिंग को गंगाजल से स्नान कराएं।

4. **बेल पत्र चढ़ाना:** बेल पत्र को त्रिशूल या ॐ की आकृति की ओर रखें। पत्तियों का मुख ऊपर की ओर होना चाहिए और नीचे की डंडी भगवान शिव की ओर होनी चाहिए।

5. **मंत्र का उच्चारण:** बेल पत्र चढ़ाते समय "ॐ नमः शिवाय" या "ॐ नमो भगवते रुद्राय" मंत्र का उच्चारण करें।

6. **नियमितता:** नियमित रूप से भगवान शिव पर बेल पत्र चढ़ाएं, विशेषकर सोमवार को और श्रावण मास में।

यह विधि भगवान शिव को प्रसन्न करने और उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए मानी जाती है।

बेलपत्र को भगवान शिव पर चढ़ाने से कई आध्यात्मिक और मानसिक लाभ प्राप्त होते हैं। यहां कुछ प्रमुख लाभ हैं:

1. **भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है:** बेलपत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। इसे चढ़ाने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

2. **पापों का नाश:** धार्मिक मान्यता के अनुसार, बेलपत्र चढ़ाने से मनुष्य के पापों का नाश होता है और वह पवित्र होता है।

3. **धन और सुख-समृद्धि:** बेलपत्र चढ़ाने से धन, सुख, और समृद्धि प्राप्त होती है। आर्थिक समस्याओं से मुक्ति मिलती है।

4. **मानसिक शांति:** भगवान शिव की पूजा और बेलपत्र चढ़ाने से मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। तनाव और चिंता से मुक्ति मिलती है।

5. **स्वास्थ्य लाभ:** धार्मिक दृष्टि से, बेलपत्र चढ़ाने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

6. **कष्टों का निवारण:** भगवान शिव की कृपा से जीवन में आने वाले कष्ट और समस्याएं कम होती हैं।

7. **पारिवारिक सुख:** परिवार में सुख-शांति और आपसी प्रेम बढ़ता है।

ध्यान रखें कि भगवान शिव की पूजा सच्चे मन और श्रद्धा से करनी चाहिए, तभी इन लाभों का पूर्ण अनुभव होता है।

बेल पत्र (बिल्वपत्र) का धार्मिक और औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। यहां बेल पत्र के कुछ प्रमुख लाभ दिए गए हैं:

धार्मिक लाभ:

1. **भगवान शिव की कृपा:** बेल पत्र भगवान शिव को अति प्रिय है। पूजा में बेल पत्र अर्पित करने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

2. **पापों का नाश:** धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, बेल पत्र चढ़ाने से पापों का नाश होता है और व्यक्ति पवित्र हो जाता है।

3. **धन और समृद्धि:** बेल पत्र चढ़ाने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता है और समृद्धि प्राप्त होती है।

4. **कष्टों का निवारण:** बेल पत्र भगवान शिव पर चढ़ाने से जीवन के कष्ट और समस्याएं कम होती हैं।

5. **मानसिक शांति:** भगवान शिव की पूजा में बेल पत्र का उपयोग करने से मानसिक शांति और स्थिरता मिलती है।

औषधीय लाभ:

1. **पाचन तंत्र:** बेल पत्र का सेवन पाचन तंत्र को मजबूत करता है और गैस, कब्ज आदि समस्याओं में राहत देता है।

2. **मधुमेह:** बेल पत्र का रस मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

3. **सर्दी-जुकाम:** बेल पत्र का काढ़ा सर्दी-जुकाम में राहत देता है।

4. **रक्तचाप:** बेल पत्र का नियमित सेवन रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करता है।

5. **त्वचा संबंधी समस्याएं:** बेल पत्र का पेस्ट त्वचा पर लगाने से त्वचा संबंधी समस्याओं में राहत मिलती है।

6. **डायरिया और पेचिश:** बेल पत्र का उपयोग डायरिया और पेचिश जैसी समस्याओं के उपचार में किया जाता है।

पर्यावरणीय लाभ:

1. **प्रदूषण कम करना:** बेल का पेड़ पर्यावरण को शुद्ध करता है और प्रदूषण कम करने में मदद करता है।

2. **जैव विविधता:** बेल का पेड़ जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करता है, क्योंकि यह कई जीव-जंतुओं और पक्षियों के लिए आवास प्रदान करता है।

बेल पत्र के धार्मिक और औषधीय लाभ इसे एक महत्वपूर्ण पौधा बनाते हैं। इन लाभों का पूर्ण अनुभव करने के लिए इसे सही तरीके से और नियमित रूप से उपयोग करना चाहिए।

शिव पुराण में बेल पत्री (बिल्व पत्र) का उल्लेख बहुत महत्वपूर्ण और पवित्र माना गया है। यहां कुछ प्रमुख बातें दी गई हैं जो शिव पुराण में बेल पत्री के बारे में कही गई हैं:

1. भगवान शिव को प्रिय: शिव पुराण में बताया गया है कि बेल पत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। इसे अर्पित करने से भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

2. तीन पत्तियों का महत्व: बेल पत्र की तीन पत्तियां भगवान शिव के त्रिनेत्र (तीन नेत्र) का प्रतीक हैं। इन्हें त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का प्रतीक भी माना जाता है।

3. पवित्रता का प्रतीक: बेल पत्र को पवित्रता और शुद्धता का प्रतीक माना गया है। इसे शिवलिंग पर चढ़ाने से पूजा का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

4. पापों का नाश: शिव पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से भगवान शिव पर बेल पत्र अर्पित करता है, उसके समस्त पापों का नाश हो जाता है।

5. धन और समृद्धि: बेल पत्र चढ़ाने से व्यक्ति के जीवन में धन, सुख, और समृद्धि का आगमन होता है।

6. शिवरात्रि का महत्व: शिवरात्रि के अवसर पर बेल पत्र चढ़ाने का विशेष महत्व है। इस दिन बेल पत्र चढ़ाने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

7. शांति और स्थिरता: भगवान शिव की पूजा में बेल पत्र का उपयोग करने से मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। इससे व्यक्ति के जीवन में शांति और संतुलन बना रहता है।

8. औषधीय गुण: शिव पुराण में बेल पत्र के औषधीय गुणों का भी उल्लेख किया गया है। इसे स्वास्थ्यवर्धक माना गया है और कई रोगों के उपचार में उपयोग किया जाता है।

इन बातों से स्पष्ट होता है कि शिव पुराण में बेल पत्र का धार्मिक, आध्यात्मिक और औषधीय महत्व बहुत अधिक है। भगवान शिव की पूजा में बेल पत्र का उपयोग करना अत्यंत शुभ और लाभकारी माना गया है।

सामान्य विधि:

1. स्नान और शुद्धता: पूजा से पहले स्नान करें और शुद्ध वस्त्र पहनें।

2. शिवलिंग का अभिषेक: शिवलिंग को गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान कराएं।

3. बेलपत्र अर्पण: त्रिदलीय बेलपत्र को त्रिशूल के आकार में शिवलिंग पर रखें। प्रत्येक पत्ती को चढ़ाते समय "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जाप करें।

4. पूजा सामग्री: धूप, दीप, नैवेद्य, फूल, फल और अन्य पूजन सामग्री अर्पित करें।

5. मंत्र जाप और ध्यान: पूजा के अंत में भगवान शिव की आरती करें और उनका ध्यान करें।

इन विधियों से भगवान शिव की पूजा करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है और जीवन में सुख-शांति, समृद्धि और पवित्रता का वास होता है।

ज्योतिषाचार्य पं अनिल कुमार पाण्डेय

सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता, मध्यप्रदेश विद्युत् मंडल, ***(प्रश्न कुंडली विशेषज्ञ और वास्तु शास्त्री),***

संपर्क – साकेत धाम कॉलोनी, मकरोनिया, सागर- 470004 मध्यप्रदेश , **मो** – 8959594400 **ईमेल** – aasra.jyotish@gmail.com **यूट्यूब चैनल** >> **आसरा ज्योतिष**

कहानी – लघुकथा - दिया बाती और तेल - श्री हेमन्त बावनकर

पुन्य सलिला नदी के तट, जिन्हें आज कल रिवर-फ्रंट कहते हैं, देखते ही बनते हैं. नदी के तट अब पहले जैसे प्राकृतिक नहीं रह गए. सुन्दर हरे भरे तटों का स्थान अब सपाट पार्क / मैदान और कंक्रीट की चौड़ी सडकों ने ले लिया है. पुण्य सलिला नदी के तट के प्राचीन मंदिर से मुख्य सड़क तक तीर्थ यात्रियों/पर्यटकों के लिए वाणिज्यिक कॉरिडोर बन गया था. मंदिर के सामने नदी के तट की सीढ़ियों पर अब संध्या की विशाल आरती होने लगी थी.

प्रतिदिन प्रातः और संध्या वेला में दिया बाती लगभग सभी घरों में एक अध्यात्मिक एवं सकारात्मक उर्जा प्रदान करता है. नदी के दोनों ओर बसे घर-मंदिरों के दीपक और विद्युत् प्रकाश से जगमगाने लगते हैं. नदी के तट पर बैठ कर नदी की लहरों पर इस झिलमिलाते हुए प्रकाश को देखने का अपना ही आनंद है.

सोशल मीडिया और स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला कि इस बार रिवर-फ्रंट पर लाखों की संख्या में दीप जलाकर विश्व रिकॉर्ड बनाने की तैयारियां चल रही है. हरिलाल भाई काफी जिद कर रहे थे कि हमें इस वेला का साक्षी बनने का अवसर हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए. रात्रि दस से ग्यारह बजे के मध्य इस कार्यक्रम को संपन्न होना था और तब तक लोग घर की पूजा भी संपन्न कर ही लेते हैं.

तय समय पर हरिलाल भाई और सेवकराम जी नदी तट पर पहुँच गये. सुरक्षा व्यवस्था काफी चाक-चौबंद थी. काफी भीड़ थी. कई लोग स्वेच्छा से अपनी सेवायें दे रहे थे. छोटे छोटे समूह में आयोजकों ने दीपकों को सजाकर रखा था. तय समय पर दीप प्रज्वलित किये गए. साथ ही आकाश में ड्रोन कैमरे प्रकट हो गए. उन्होंने उन लाखों दीपकों के विभिन्न कोणों से विडियो और चित्र लिए और थोड़ी ही देर में विश्व रिकॉर्ड बनने की घोषणा की गई. इसी के साथ ही जयघोष प्रारंभ हो गया और कार्यक्रम के संपन्न होने की घोषणा भी हो गई.

हरिलाल भाई और सेवकराम जी ने भी आपस में एक दूसरे को इस क्षण के साक्षी होने के लिए बधाई दी. वे वापिस जाने के लिए दीपकों के समूह के बीच से जाने को तत्पर हुए तो वहां का दृश्य देख कर सन्न रह गए. समय के साथ ही दीपक बुझने लग गए थे और तट की सुरक्षा व्यवस्था के हटते ही कुछ नर नारियों और बच्चो का हुजूम दीपकों पर टूट पड़ा. वे अपने साथ लाए गए पोलिथीन की थैलियों में दीयों का तेल उड़ेल रहे थे.

सेवकराम जी और हरिलाल भाई एक दूसरे को हतप्रभ देखने लगे.

विश्व रिकॉर्ड बन चुका था. पॉलिथीन की थैलियों में दीयों का तेल भरने वाले नर नारियों बच्चों को विश्व रिकॉर्ड से कोई लेना देना नहीं था. शायद इस तेल से उनके घरों में कुछ दिनों का खाना बन जायेगा. आसपास का उमंग भरा वातावरण शोरगुल में खो चुका था और ड्रोन विडियो और चित्र लेकर अपने कैमरामेन की ओर वापिस जा रहे थे.

हेमन्त बावनकर, पुणे, महाराष्ट्र

लेख - कौन सी दीपावली ? - श्री राकेश कुमार

बचपन में कक्षा पांच से आरंभ हुए थे, दीपावली पर निबंध लिखने का क्रम, अनवरत चलता रहा। उस समय निबंध में जो लिखते थे, वो ही घर और आस पास दिखता था।

घर की सफाई, गाय के गोबर से मां का आंगन लिपना फिर घर की दीवारों पर चित्रकारी का किया जाना, हम तो उस समय एक छोटे सहायक का ही कार्य कर पाते थे।

पिताजी घर में लगे हुए बिजली के लट्टू (बल्ब) को उतार कर कपड़े से साफ कर उसे फिर लगा देते थे। दीपावली के लिए रोशनी की मात्रा बढ़ जाती थी। बिजली के बिल को दहाई अंक से नीचे रखने के कारण अधिकतर बल्ब पच्चीस वाट के ही थे।

मिठाई के नाम पर चावल की लाई, पतासे आदि मुख्य होते थे। फल में इकलौता केला ही मिलता था।

कॉलेज में शहर आ जाने पर दीपावली का रूप भी बदल गया था। बड़े घरों पर रंग रोगन के पश्चात बिजली के सैकड़ों बल्ब की झालर देख कर मन में प्रश्न उठता था, ये लोग बिजली का खर्च कैसे वहन करते होंगे?

बाद में पता चला ये तो किसी बड़े राजनीतिज्ञ का घर है, जहां बिजली चोरी साधारण सी बात होती हैं। कुछ व्यापारी भी ऐसा करते थे, उनका बिजली का बिल व्यापार खर्च में दर्ज होता था। त्यौहार के नाम पर जुआ और शराब का व्यसन भी बढ़ते बढ़ते, नित का नियम होकर बहुत सारे परिवारों तक को लील जाता हैं।

आजकल तो ऑनलाइन जुआ खेलने की सुविधा सहज में उपलब्ध हैं। मिठाइयां दैनिक भोजन का हिस्सा बन चुकी हैं। नए कपड़े खरीदने के लिए दीपावली का इंतजार नहीं करना पड़ता हैं। अमेजन जैसे ऑनलाइन मंच "मेगा सेल" लगाकर आज के बड़े ठगों के सरदार बन चुके हैं। दीपावली अब अमीरों की हो चुकी हैं। हमारी बचपन वाली दीपावली तो कब की मर चुकी हैं।

श्री राकेश कुमार, B 508, शिवज्ञान एनक्लेव, निर्माण नगर AB ब्लॉक, जयपुर-302 019 (राजस्थान)

कहानी - हौसला – सुश्री उमा मिश्रा 'प्रीति'

अरे! बहू यह क्या आज त्यौहार है दीपावली का और तुम त्यौहार में भी ऑफिस जा रही हो?

क्या करूँ? हम प्राइवेट वालों को त्यौहार या छुट्टी के दिन भी अपने टारगेट को पूरा करना पड़ता है, कुछ जरूरी काम है, दिवाली की तैयारी के लिए घर सजाना है ठीक है। मैं सजावट का सारा सामान भेज कर एक आदमी को भेज दूंगी, वह सजा देगा पूरा घर और पंडित जी को भी बुला दूंगी, वह अच्छे से दिवाली की पूजा कर देंगे आप किसी बात की चिंता मत करो। बस आप पूरा काम देख लेना, आपके अनुसार हुआ क्या नहीं। आपके बेटे अमित भी तो बेंगलुरु से आज आ जाएंगे।

यह कहते हुए बहू बड़ी तेजी से अपनी कार को स्टार्ट करके ऑफिस के लिए चली गई।

बेचारे बहू बेटी को अपने लिए भी फुर्सत नहीं है क्या कहूँ?

चलो! अपनी बिटिया गौरी को ही फोन करके बुला लेती हूँ।

गौरी ने फोन उठाया और कहा क्या बात है "मां? अपने बहू बेटों से आज तुम्हें फुर्सत मिल गई मुझे फोन करने की।" "देख हो सके तो आज शाम रात का खाना तुम लोग हमारे साथ ही खाना अपने घर में दिवाली की पूजा करके बच्चों को लेकर आ जाना तुम्हारा भाई रवि भी आ रहा है।"

"अरे मां तुम बहुत सुंदर-सुंदर दिवाली की सजावट का समान बनाती हो। बहुत सुंदर ढंग से घर सजाती हो कुछ सामान मेरे घर भी भेज दो?"

"आज क्यों ना हम दिया और सजावट का सामान आसपास अपने फ्रेंड लोगों को दें और सब का वीडियो मैंने पहले से ऑनलाइन डाल दिया है माँ।"

"माँ मैं भी खाली घर में रहती हूँ और तुम भी। हम लोग बिजनेस शुरू करते हैं आज दिवाली से अच्छा कोई दिन नहीं होगा।"

"ठीक है बेटा आओ आज मुझे एक नई राह मिल गई। आज तुमने मुझे हौसला दिया। अच्छा है बेटा तुम भी अपने भाभी की तरह बिजनेस करो। भगवान ने तुम्हें बहुत अच्छी बुद्धि दी है। मैं अपने सारे गुण मैं सिखाउंगी और तुम बिजनेस में आगे बढ़ो। सिर्फ पैसे कमाना ही नहीं तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए कुछ काम करना बहुत जरूरी है। आओ खुशी-खुशी हम सब मिलकर दिवाली मनाते हैं।

सुश्री उमा मिश्रा प्रीति जबलपुर मध्य प्रदेश मो +91 70000 72079

कहानी – चार लघुकथाएँ – प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

☆ बंटवारा ☆

पति के निधन के बाद मेहनत-मजदूरी करके उस औरत ने अपने दोनों बेटों को पाल-पोसकर, पढा-लिखाकर इस क़ाबिल बनाया था,कि वे दोनों सरकारी नौकरी में और एक अच्छी पत्नी को पा सकें। पर शादी के बाद दोनों भाइयों में नहीं बनी तो उन्होंने घर-मकान का बंटवारा कर लिया, पर माँ की जिम्मेदारी लेने कोई भी तैयार नहीं था।

अंत में लाचार होकर दोनों भाइयों ने पंद्रह-पंद्रह दिन के लिए मां को खाना खिलाने की जिम्मेदारी ले ली। पर विडंबना कि जब महीना इकत्तीस दिन का होता था तो माँ को एक दिन भूखा रहना पड़ता था।

☆ जंग और सिंदूर की कीमत ☆

रीना की कल ही शादी हुई,पति से साथ एक ही रात गुज़री कि सैनिक पति राकेश को आर्मी हेड क्वार्टर से छुट्टियां रद्द होने और ड्युटी जोइन करने का बुलावा आ गया।

इस पर राकेश उदास हो गया,पर नवविवाहिता रीना ने उसका हौसला बढ़ाते हुए उसे उसका फ़र्ज़ याद कराया,और अपने सिंदूर की ताक़त का अहसास कराते हुए निडर होकर लड़ने की बात कही।

इस पर राकेश को जोश आया और वह पूरी हिम्मत के साथ बार्डर पर चला गया,जहाँ वह मौत की परवाह न करते हुए दुश्मन से भिड़ गया,और अंत में बुरी तरह से घायल होकर दुश्मन द्वारा कैद कर लिया गया।यहां उसके गाँव में उसके शहीद हो जाने की ख़बर आ गई।पर रीना को अपने सिंदूर की ताक़त का अहसास था।वह जानती थी कि उसका पति इस तरह से उसे छोड़कर नहीं जा सकता, इसलिए उसने न अपनी चूड़ियां तोड़ीं,न मंगलसूत्र उतारा और न ही माँग का सिंदूर पौंछा।सब उसे बावला कह रहे थे,पर वह टस से मस नहीं हुई।

उधर लड़ाई बंद हो गई और एक दिन चतुराई से राकेश दुश्मन की कैद से निकल भागा,और सीधे अपने गाँव आ पहुंचा।सारे गाँव वाले उसे ज़िन्दा देखकर भौंचक्के रह गए,पर रीना को कोई आश्चर्य नहीं हुआ,क्योंकि वह अपने सिंदूर की क़ीमत और जंग दोनों की क़ीमत अच्छी तरह से जानती थी।

☆ बंटवारा ☆

पति के निधन के बाद मेहनत-मजदूरी करके उस औरत ने अपने दोनों बेटों को पाल-पोसकर, पढा-लिखाकर इस क़ाबिल बनाया था,कि वे दोनों सरकारी नौकरी में और एक अच्छी पत्नी को पा सकें ।पर शादी के बाद दोनों भाइयों में नहीं बनी तो उन्होंने घर-मकान का बंटवारा कर लिया, पर माँ की जिम्मेदारी लेने कोई भी तैयार नहीं था।

अंत में लाचार होकर दोनों भाइयों ने पंद्रह-पंद्रह दिन के लिए मां को खाना खिलाने की जिम्मेदारी ले ली। पर विडंबना कि जब महीना इकत्तीस दिन का होता था तो माँ को एक दिन भूखा रहना पड़ता था।

☆ कन्या पूजन ☆

"डाक्टर साब! क्या पाँच तारीख के पहले आपरेशन नहीं हो सकता?"

"नहीं माताजी नहीं! उसके पहले की मेरी सारी डेट्स बुक हैं। पर आपको पाँच तारीख के बाद क्या प्रॉब्लम है?"

"दरअसल डाक्टर साब!पाँच तारीख से नवरात्रि शुरु हो रही है, और मेरे घर में बहुत श्रद्धा से नवरात्रि मनाई जाती है,ऐसे में अपनी बहू के गर्भ में पल रहे कन्या शिशु को आपरेशन द्वारा खत्म करा देना क्या महापाप नहीं माना जाएगा?"

डाक्टर माताजी का ढोंग देखकर हतप्रभ था।

प्रो.(डॉ.)शरद नारायण खरे, प्राचार्य, शासकीय महिला स्नातक महाविद्यालय, मंडला, मप्र -481661,
मो.9425484382 ईमेल – khare.sharadnarayan@gmail.com

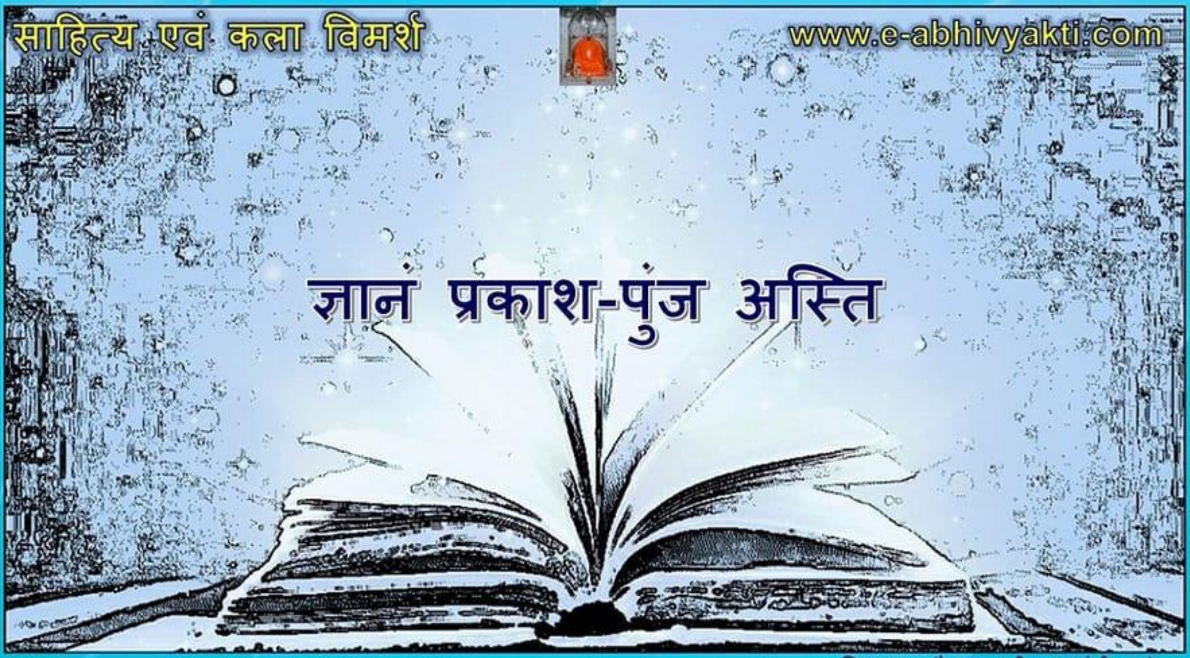

चित्रकार - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, पुणे

सम्पादक मण्डल

हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव
अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे
मराठी - सौ. उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ. मंजुषा मुळे, सौ. गौरी गाडेकर
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)

सम्पादक
श्री हेमन्त बावनकर, पुणे

'फ्लिपबुक' प्रारूप में भारत का पहला और एकमात्र दिवाली विशेषांक

e-abhivyakti

नि:शुल्क

www.e-abhivyakti.com